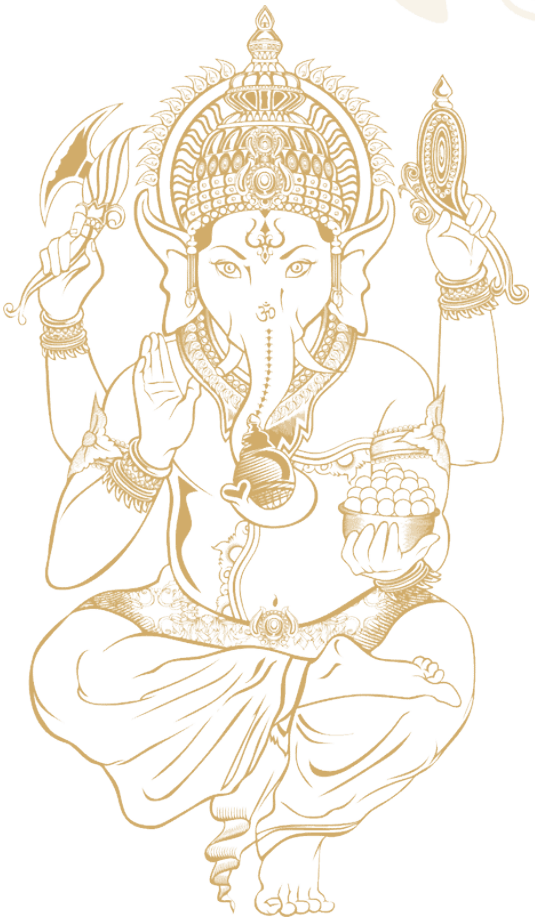

Mr.PUSHPA KAMAL BAJAJ

30 Apr 1963

07:15 PM

Mancheral

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120544401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**30/04/1963**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**19:15:00 घंटे**
इष्ट	33:42:36 घटी
स्थान	**Mancheral**
राज्य	Andhra Pradesh
देश	India

अक्षांश	18:52:00 उत्तर
रेखांश	79:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:12:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:02:44 घंटे
वेलान्तर	00:02:42 घंटे
साम्पातिक काल	09:33:53 घंटे
सूर्योदय	05:45:57 घंटे
सूर्यास्त	18:33:35 घंटे
दिनमान	12:47:38 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	16:09:40 मेष
लग्न के अंश	26:19:49 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**पुष्य - 4**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	गण्ड
करण	विष्टि
गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डा-डालचंद
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1885	वैशाख	10
पंजाबी	संवत : 2020	वैशाख	18
बंगाली	सन् : 1370	वैशाख	16
तमिल	संवत : 2020	चिथिराई	17
केरल	कोल्लम : 1138	मेदम	17
नेपाली	संवत : 2020	वैशाख	17
चैत्रादि	संवत : 2020	वैशाख	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2020	वैशाख	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 08:33:31
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:28:07 घंटे
जन्म योग _____: पुष्य
सूर्योदय कालीन योग ____: शूल
योग समाप्ति काल _____: 16:23:51 घंटे
जन्म योग _____: गण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 08:33:31 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 56:01:03
भभोग _____: 61:33:50
भोग्य दशा काल _____: शनि 1 वर्ष 8 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

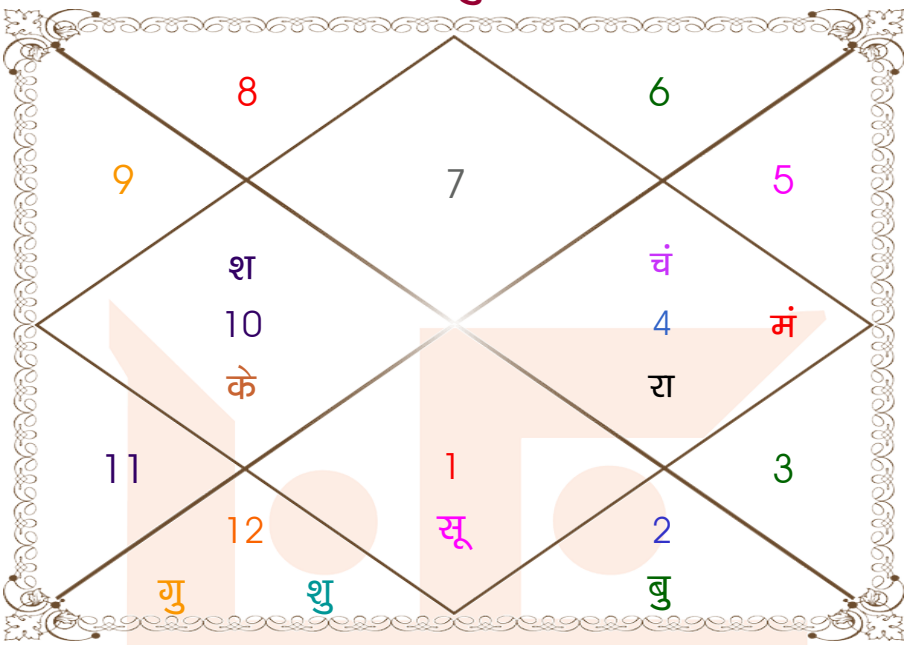

चन्द्र कुंडली

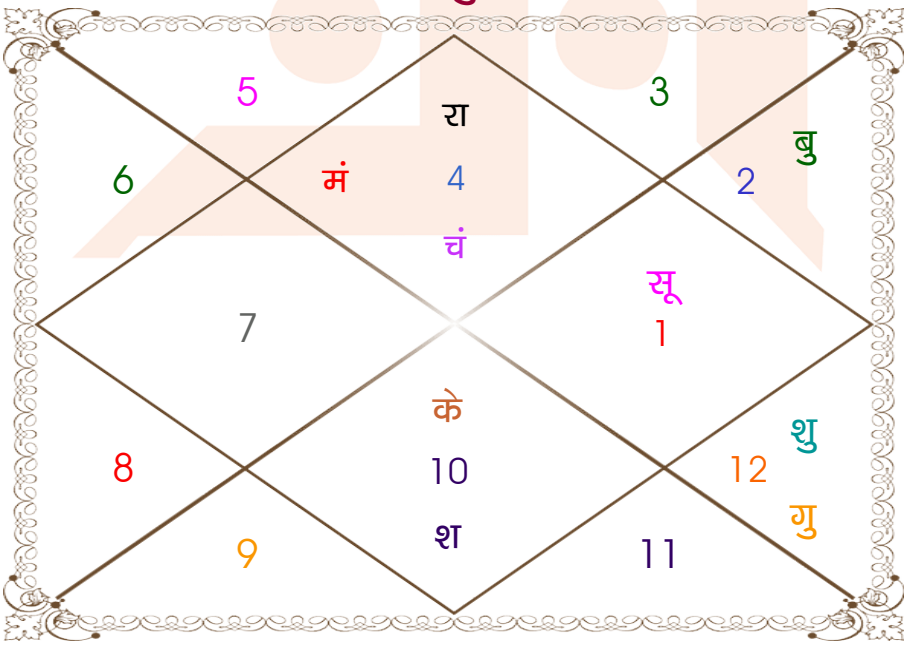

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

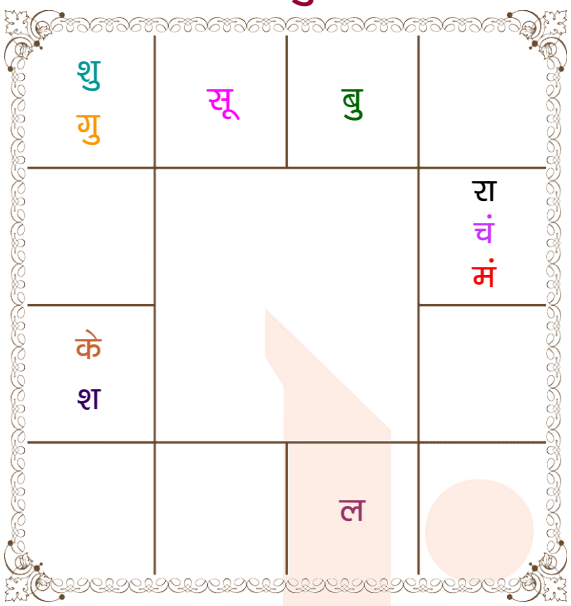

लग्न कुंडली

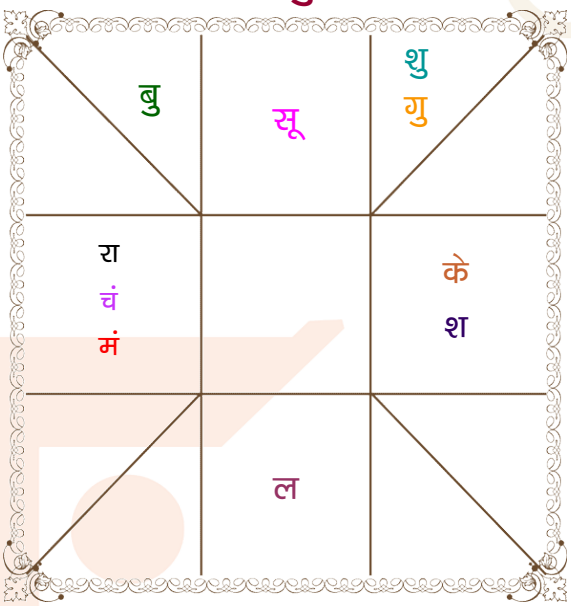

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 8मा 7दि

शनि

30/04/1963

06/01/2066

शनि	06/01/1965
बुध	06/01/1982
केतु	06/01/1989
शुक्र	06/01/2009
सूर्य	06/01/2015
चन्द्र	06/01/2025
मंगल	07/01/2032
राहु	06/01/2050
गुरु	06/01/2066

योगिनी
धान्या 0वर्ष 3मा 6दि

संकटा

05/08/2021

05/08/2029

संकटा	16/05/2023
मंगला	06/08/2023
पिंगला	15/01/2024
धान्या	14/09/2024
भ्रामरी	05/08/2025
भद्रिका	15/09/2026
उल्का	15/01/2028
सिद्धा	05/08/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	26:19:49	324:21:36	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
सूर्य			मेष	16:09:40	00:58:16	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	उच्च राशि
चंद्र			कर्क	15:28:55	12:49:55	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	स्वराशि
मंगल			कर्क	21:41:09	00:22:34	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	सूर्य	नीच राशि
बुध			वृष	05:28:52	00:34:15	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
गुरु			मीन	12:46:19	00:13:17	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	स्वराशि
शुक्र			मीन	14:22:39	01:12:10	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	उच्च राशि
शनि			मक	28:50:55	00:03:12	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	स्वराशि
राहु			कर्क	00:16:12	00:00:05	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
केतु			मक	00:16:12	00:00:05	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		सिंह	07:50:33	00:00:28	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	---
नेप	व		तुला	21:05:36	00:01:38	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	---
प्लूटो	व		सिंह	16:18:31	00:00:37	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			कर्क	27:44:11	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:20:25

लग्न-चलित

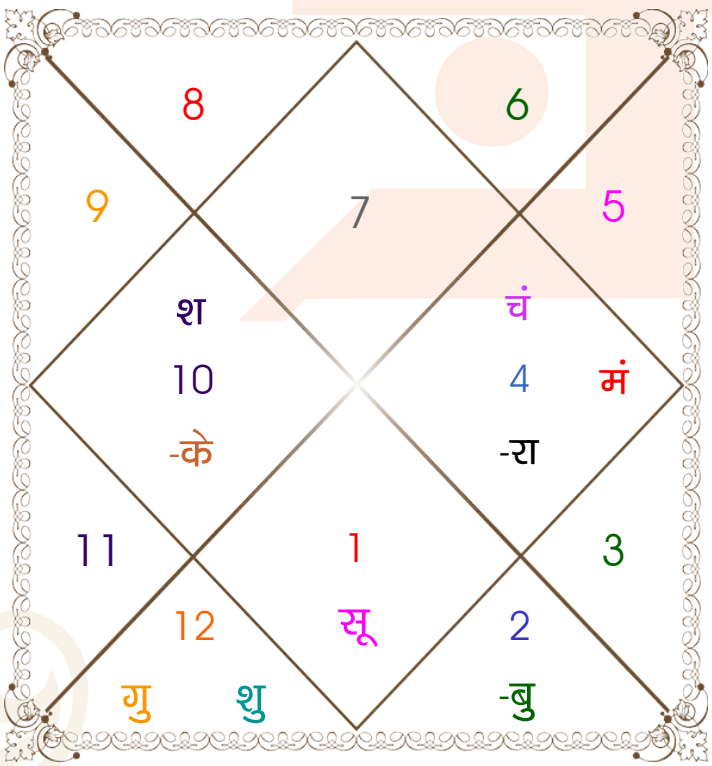

चन्द्र कुंडली

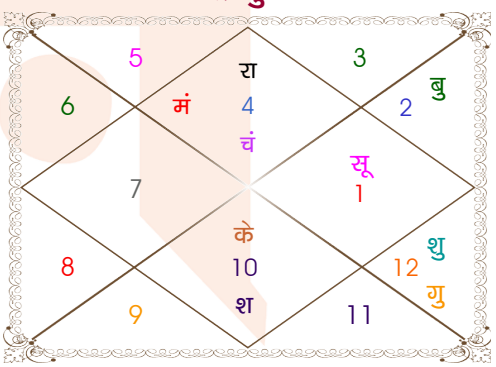

नवमांश कुंडली

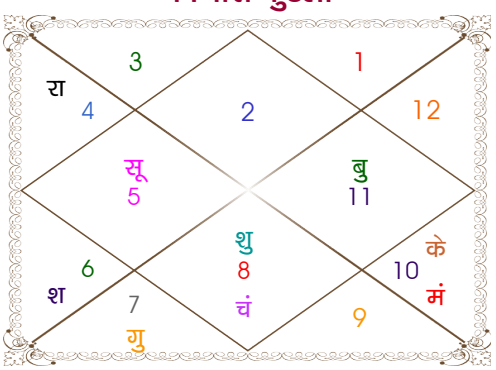

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	11:33:53	तुला	26:19:49
2	वृश्चिक	11:33:53	वृश्चिक	26:47:57
3	धनु	12:02:00	धनु	27:16:04
4	मकर	12:30:07	मकर	27:44:11
5	कुम्भ	12:30:07	कुम्भ	27:16:04
6	मीन	12:02:00	मीन	26:47:57
7	मेष	11:33:53	मेष	26:19:49
8	वृष	11:33:53	वृष	26:47:57
9	मिथुन	12:02:00	मिथुन	27:16:04
10	कर्क	12:30:07	कर्क	27:44:11
11	सिंह	12:30:07	सिंह	27:16:04
12	कन्या	12:02:00	कन्या	26:47:57

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	26:19:49
2	वृश्चिक	25:32:33
3	धनु	25:53:01
4	मकर	27:44:11
5	कुम्भ	29:52:36
6	मीन	29:47:21
7	मेष	26:19:49
8	वृष	25:32:33
9	मिथुन	25:53:01
10	कर्क	27:44:11
11	सिंह	29:52:36
12	कन्या	29:47:21

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

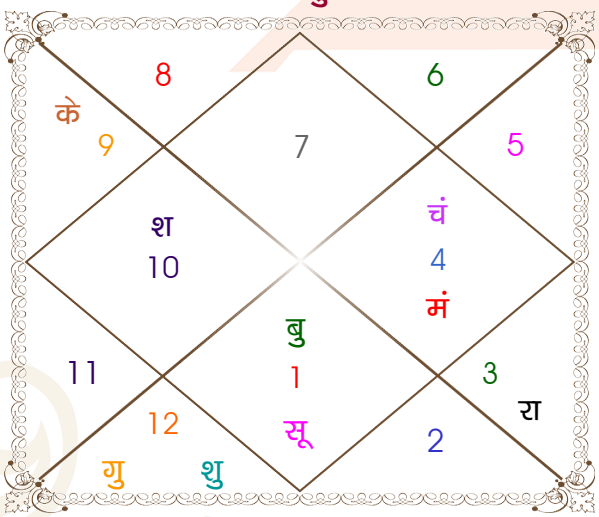

भाव कुंडली

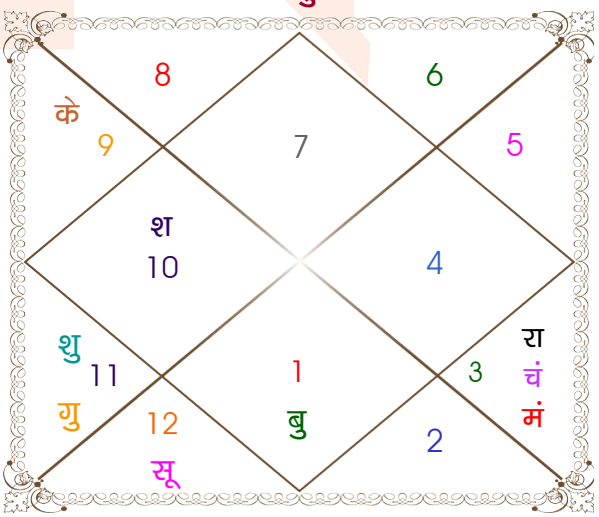

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	दीप्त	नृत्यलिप्सा	28.97	72 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	आगम	8.06	67 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	कुमार	भीत	भोजन	0.18	46 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	मुदित	निद्रा	1.87	38 %
गुरु	ज्ञाति	धन	युवा	स्वस्थ	प्रकाश	3.95	69 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	दीप्त	निद्रा	22.32	53 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	स्वस्थ	भोजन	3.38	59 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	खल	आगम	0.00	80 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	भोजन	0.00	80 %
कुल						68.73	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली

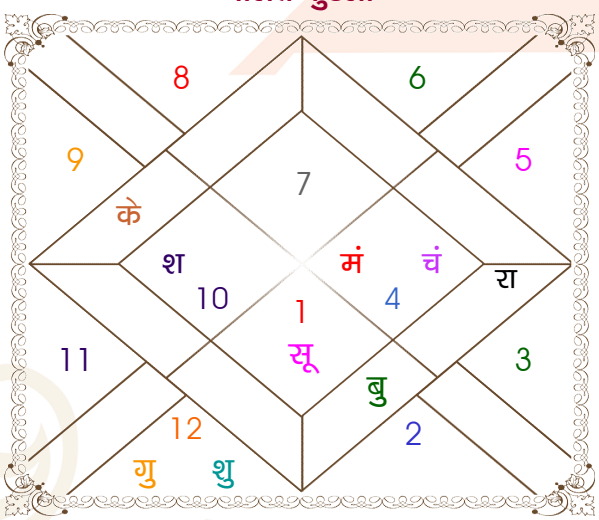

लग्न-चलित

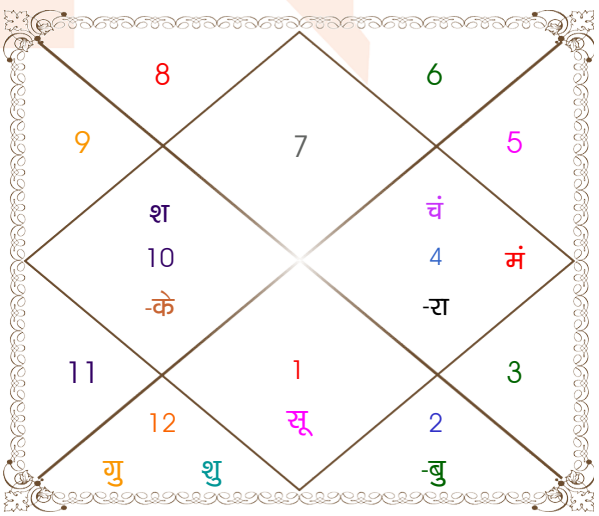

सुदर्शन चक्र

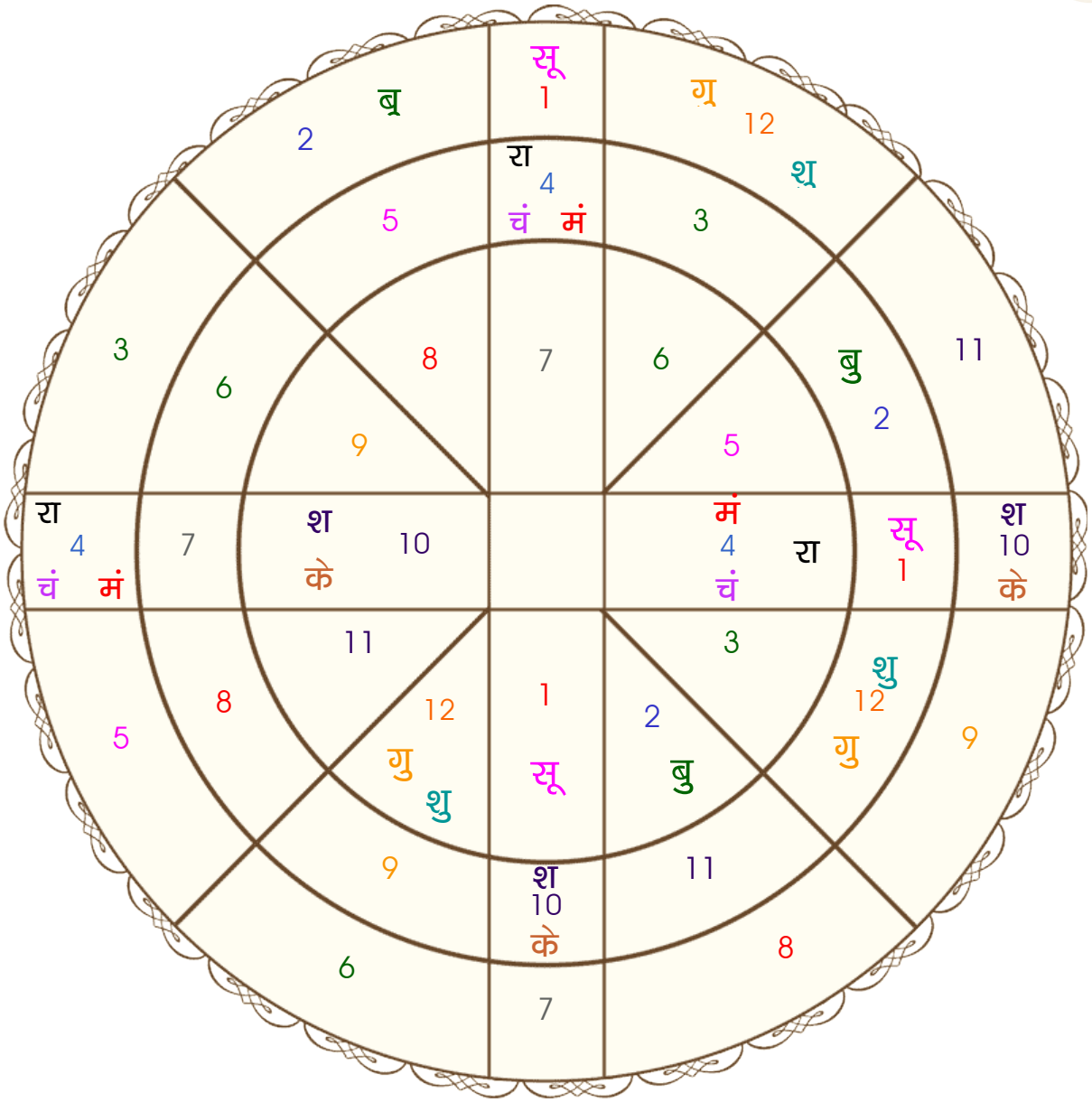

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 6 मास 18 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	16:15:28	मंगल	शुक्र	चंद्र	चंद्र
चंद्र		कर्क	15:34:43	चंद्र	शनि	गुरु	बुध
मंगल		कर्क	21:46:57	चंद्र	बुध	सूर्य	राहु
बुध		वृष	05:34:40	शुक्र	सूर्य	बुध	शुक्र
गुरु		मीन	12:52:08	गुरु	शनि	मंगल	चंद्र
शुक्र		मीन	14:28:27	गुरु	शनि	राहु	शुक्र
शनि		मक	28:56:43	शनि	मंगल	शनि	शुक्र
राहु		कर्क	00:22:00	चंद्र	गुरु	चंद्र	शुक्र
केतु		मक	00:22:00	शनि	सूर्य	राहु	बुध
हर्ष	व	सिंह	07:56:21	सूर्य	केतु	गुरु	शनि
नेप	व	तुला	21:11:24	शुक्र	गुरु	गुरु	सूर्य
प्लूटो	व	सिंह	16:24:19	सूर्य	शुक्र	चंद्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	26:25:38	शुक्र	गुरु	केतु	शनि
2	वृश्चि	25:38:21	मंगल	बुध	राहु	शुक्र
3	धनु	25:58:49	गुरु	शुक्र	केतु	शुक्र
4	मक	27:49:59	शनि	मंगल	गुरु	राहु
5	कुंभ	29:58:24	शनि	गुरु	चंद्र	शनि
6	मीन	29:53:09	गुरु	बुध	शनि	गुरु
7	मेष	26:25:38	मंगल	शुक्र	केतु	गुरु
8	वृष	25:38:21	शुक्र	मंगल	राहु	शुक्र
9	मिथु	25:58:49	बुध	गुरु	केतु	सूर्य
10	कर्क	27:49:59	चंद्र	बुध	गुरु	राहु
11	सिंह	29:58:24	सूर्य	सूर्य	राहु	शनि
12	कन्या	29:53:09	बुध	मंगल	शनि	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:14:37

फॉरच्युना : मकर 25:44:53

लग्न कुंडली

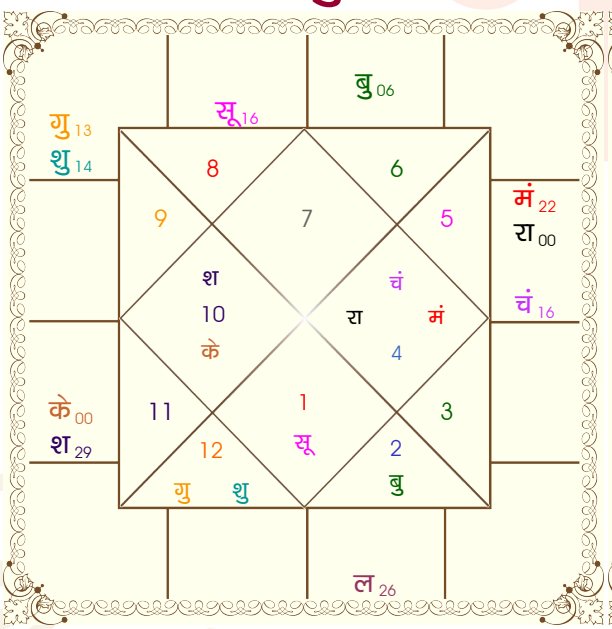

भाव कुंडली

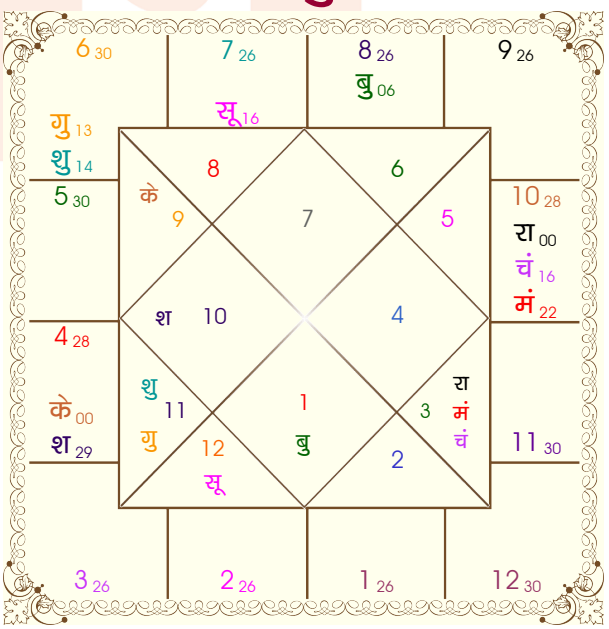

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शुक्र-
2	मंगल- शनि-
3	गुरु- राहु- केतु,
4	चंद्र+ गुरु+ शुक्र+ शनि,
5	सूर्य, चंद्र- गुरु+ शुक्र+ शनि- राहु,
6	सूर्य, बुध, गुरु- राहु- केतु,
7	मंगल+ बुध, शनि-
8	सूर्य- शुक्र-
9	चंद्र, मंगल+ बुध- शनि, राहु,
10	चंद्र-
11	सूर्य- बुध- केतु-
12	मंगल- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 5, 6, 8- 11-
चंद्र	4+ 5- 9, 10-
मंगल	2- 7+ 9+ 12-
बुध	6, 7, 9- 11- 12-
गुरु	3- 4+ 5+ 6-
शुक्र	1- 4+ 5+ 8-
शनि	2- 4, 5- 7- 9,
राहु	3- 5, 6- 9,
केतु	3, 6, 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	सू	शु
2	--	--	श	मं
3	--	के	रा	गु
4	चं गु शु	श	चं गु शु	श
5	सू रा	गु शु	चं गु शु	श
6	बु के	सू	रा	गु
7	मं	बु	श	मं
8	--	--	सू	शु
9	श	चं मं रा	मं	बु
10	--	--	--	चं
11	--	--	बु के	सू
12	--	--	मं	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	11	मेष	6
चंद्र	10	---	कर्क	9
मंगल	2,7	4,8,12	कर्क	9
बुध	9,12	2,6,10	वृष	7
गुरु	3,6	1,5,9	मीन	5
शुक्र	1,8	3,7	मीन	5
शनि	4,5	---	मकर	4
राहु	---	---	कर्क	9
केतु	---	---	मकर	3

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,8	3,7	5	10	---	9
चंद्र	4,5	---	4	3,6	1,5,9	5
मंगल	9,12	2,6,10	7	11	11	6
बुध	11	11	6	9,12	2,6,10	7
गुरु	4,5	---	4	2,7	4,8,12	9
शुक्र	4,5	---	4	---	---	9
शनि	2,7	4,8,12	9	4,5	---	4
राहु	3,6	1,5,9	5	10	---	9
केतु	11	11	6	---	---	9

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	16.16	105.48	111.69	35.48	342.77	344.38	298.85	90.27	270.27	127.84	201.09	136.31
सूर्य	--	चतु	चतु	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	पंच
16.16	0.00	2.95	0.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.70	3.00
चंद्र	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--	चतु	--
105.48	0.00	0.00	7.96	0.00	0.00	0.00	1.70	0.00	0.00	0.00	0.30	0.00
मंगल	--	युति	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	4था	--
111.69	0.00	7.96	0.00	0.00	0.00	0.00	7.32	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	तृती	--	चतु	सप्त	--
35.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.62	0.00	2.44	0.64	0.00
गुरु	--	5वां	5वां	--	--	युति	--	5वां	--	--	--	--
342.77	0.00	9.60	5.95	0.00	0.00	9.86	0.00	2.59	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	पंच	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
344.38	0.00	2.88	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	सप्त	--	--	3रा	--	--	--	सप्त	10वा	--
298.85	0.00	1.70	7.32	0.00	0.00	0.55	0.00	0.00	0.00	5.88	6.88	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
90.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	--	पंच	पंचा	--	--	सप्त	--	--	--	--
270.27	0.00	0.00	0.00	0.62	0.70	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति
127.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.88	0.00	0.00	0.00	0.00	6.32
नेप	सप्त	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
201.09	8.70	0.00	0.00	0.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	तृती	--
136.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.32	0.94	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	206.33	236.80	267.27	297.74	327.27	356.80	26.33	56.80	87.27	117.74	147.27	176.80
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	नवां	पंचा	--	--	--
16.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.85	0.54	0.17	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा
105.48	0.00	0.00	0.00	2.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.84	0.00	0.48
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
111.69	8.84	0.69	0.00	8.06	8.34	0.00	0.00	0.00	0.00	8.06	0.00	0.69
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
35.48	5.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां	--	सप्त
342.77	0.00	1.02	0.00	0.00	0.00	1.02	0.00	0.00	0.00	0.04	0.00	1.02
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	पंचा	--	--	--	सप्त
344.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.79	0.00	0.00	0.00	2.67
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--
298.85	9.65	0.00	0.00	9.93	0.00	9.77	0.00	2.58	0.00	9.93	0.00	0.00
राहु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
90.27	1.54	0.00	9.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	2.12	1.84
केतु	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--	--	--
270.27	0.00	0.00	9.51	0.00	2.12	1.84	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
127.84	0.00	0.00	0.00	4.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
201.09	8.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
136.31	0.00	0.00	0.00	0.00	4.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.11	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	206.33	235.54	265.88	297.74	329.88	359.79	26.33	55.54	85.88	117.74	149.88	179.79
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--
16.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.85	0.56	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	--
105.48	0.00	0.00	0.00	2.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.84	0.58	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	--
111.69	8.84	1.60	0.00	8.06	6.54	0.00	0.00	0.00	0.00	8.06	0.00	0.00
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--
35.48	5.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.75	0.00	0.00	0.00	0.31	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	--	--	पंचा	--	5वां	सप्त	--
342.77	0.00	2.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.35	0.00	0.04	2.19	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	पंचा	--	--	सप्त	--
344.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.52	0.00	0.00	0.26	0.00	0.00	0.52	0.00
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--
298.85	9.65	0.00	0.00	9.93	0.00	9.95	0.00	1.94	0.00	9.93	0.00	0.00
राहु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
90.27	1.54	0.00	8.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.96	0.00	2.98	2.98
केतु	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--	--	--
270.27	0.00	0.00	8.96	0.00	2.98	2.98	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
127.84	0.00	0.00	0.00	4.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
201.09	8.53	0.00	0.93	0.00	0.00	0.00	8.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
136.31	0.00	0.00	0.00	0.00	1.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.49	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

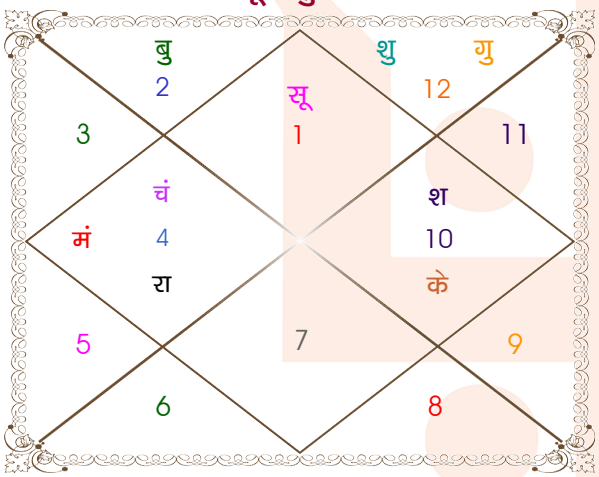

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

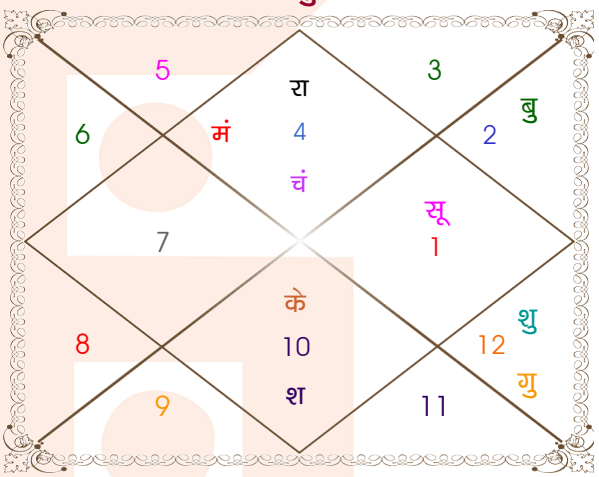

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

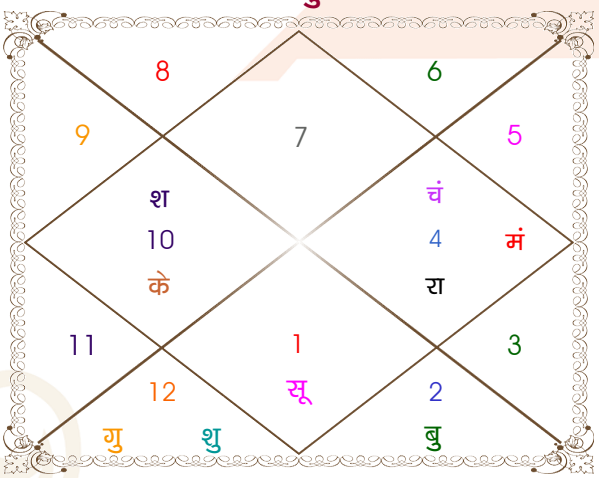

देह विचारः

होरा कुंडली

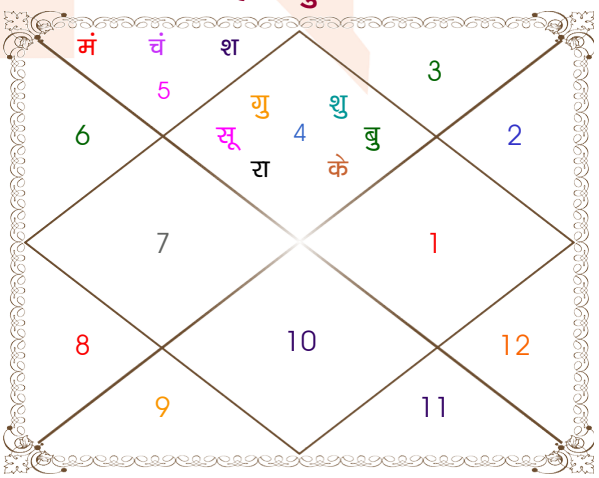

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

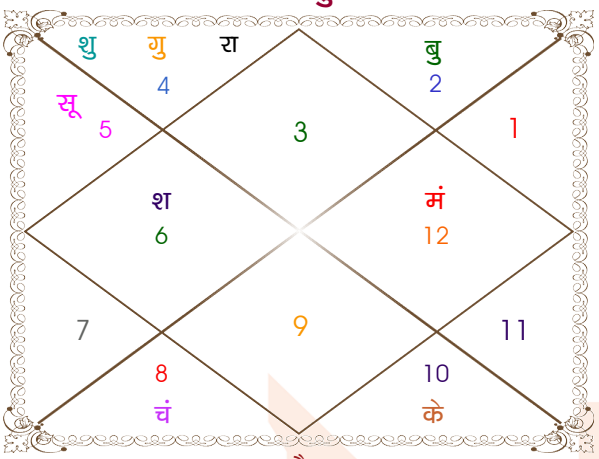

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

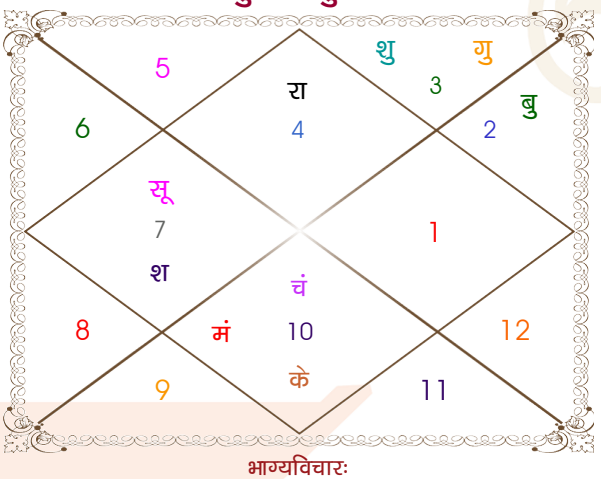

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

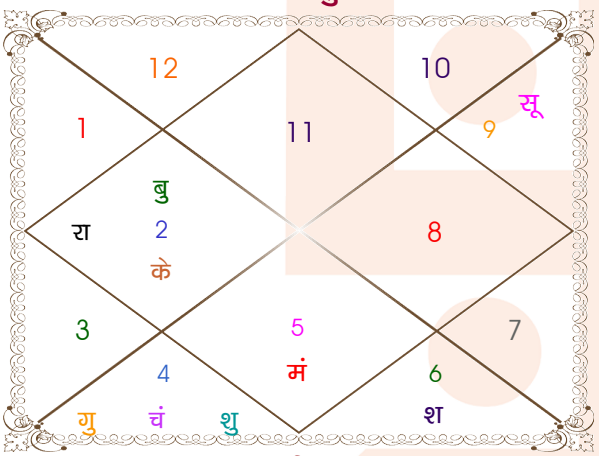

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

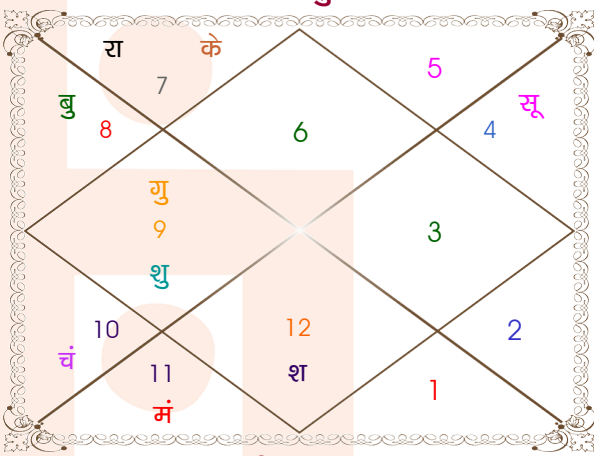

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

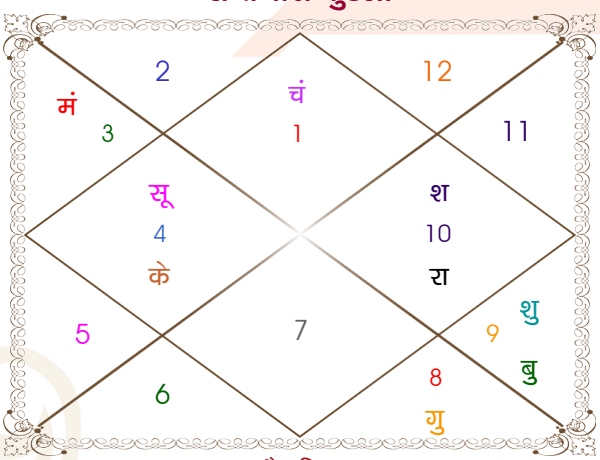

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

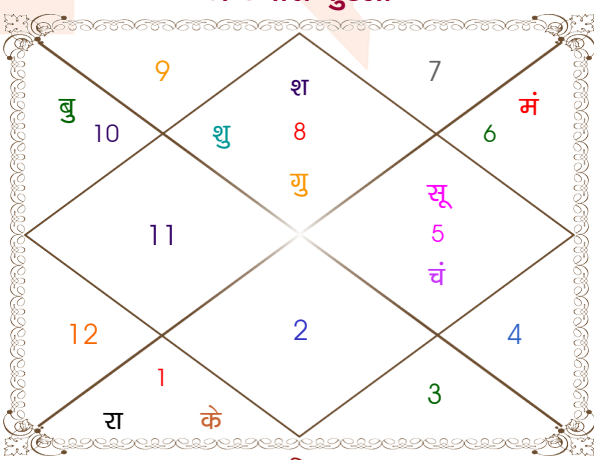

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

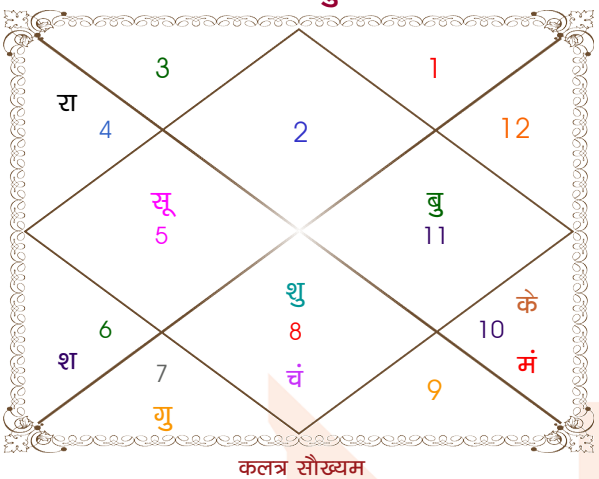

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

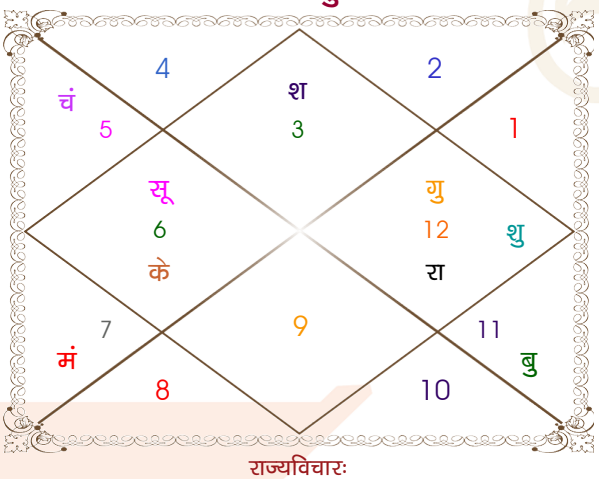

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

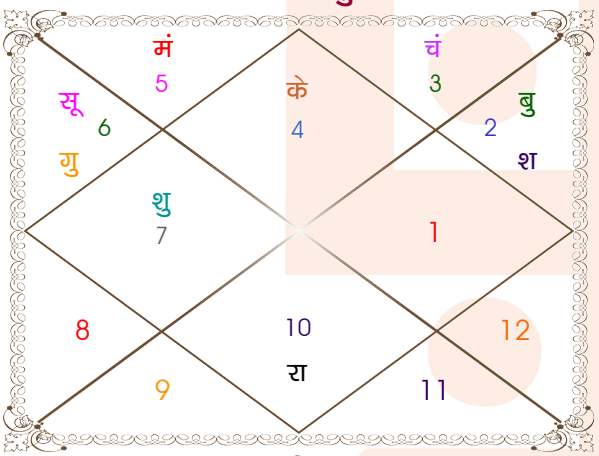

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

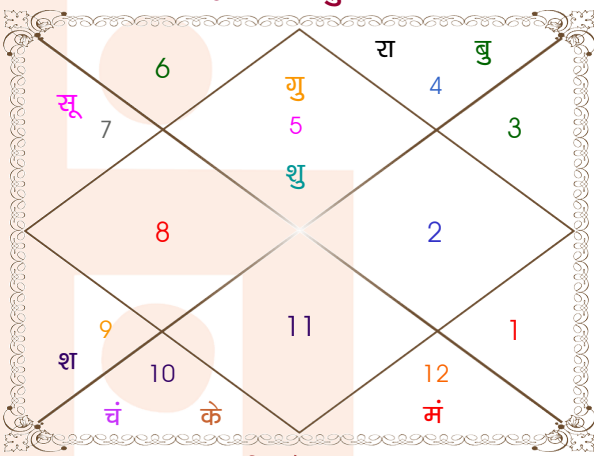

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

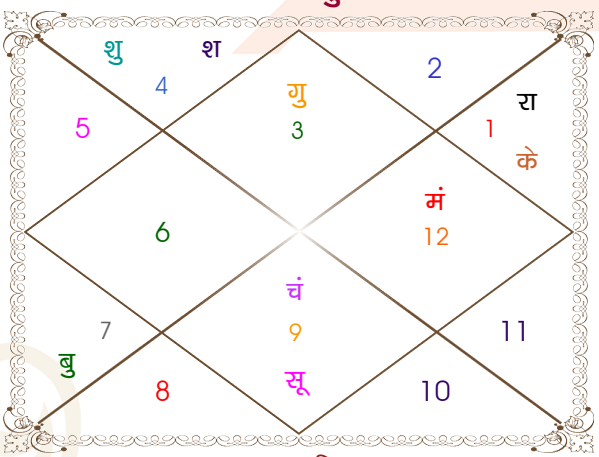

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

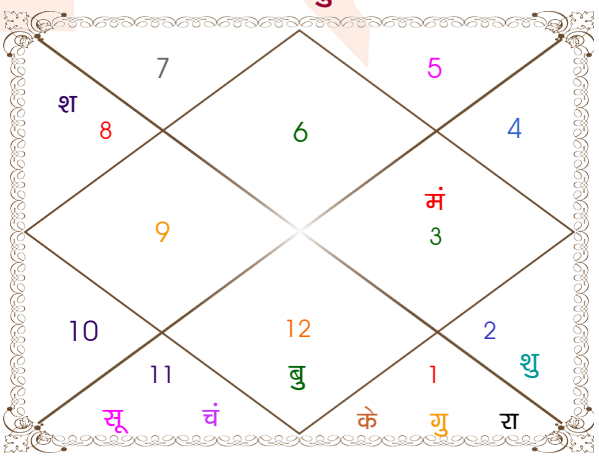

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

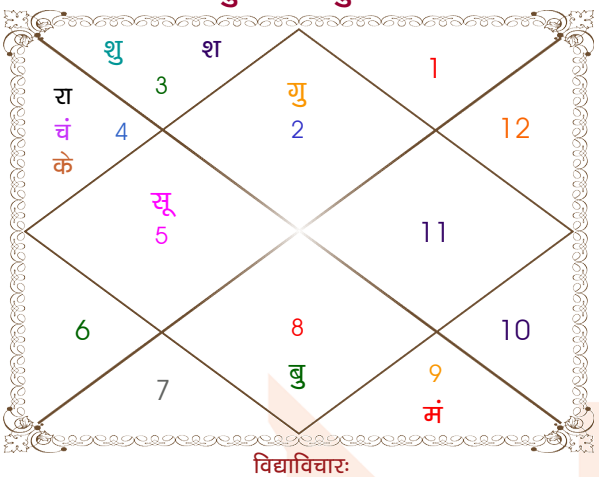

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

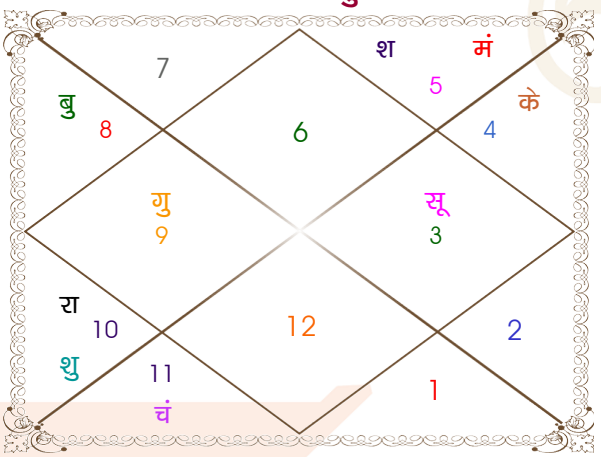

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

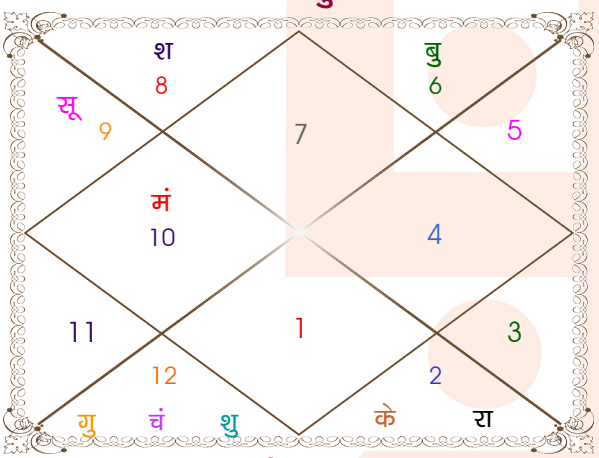

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

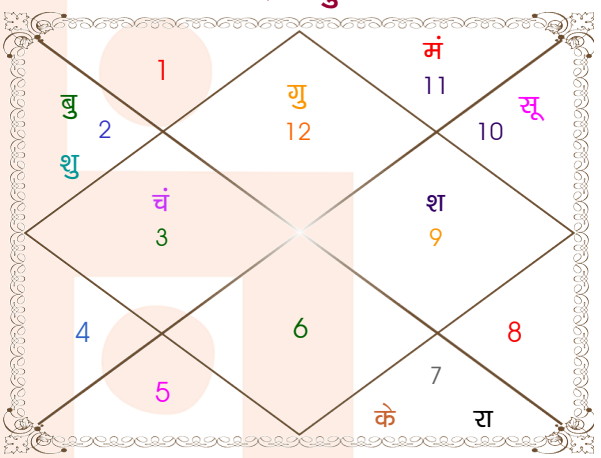

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

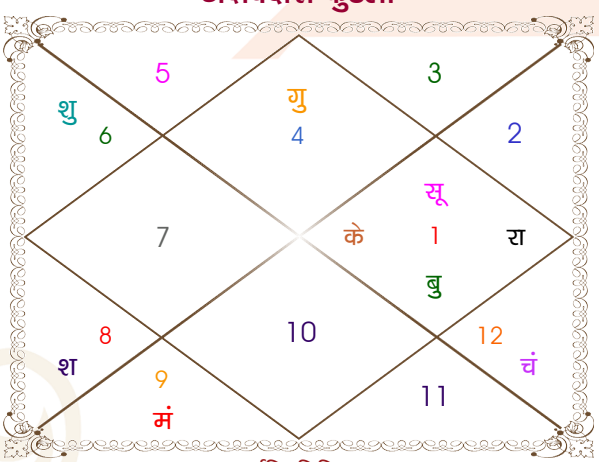

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

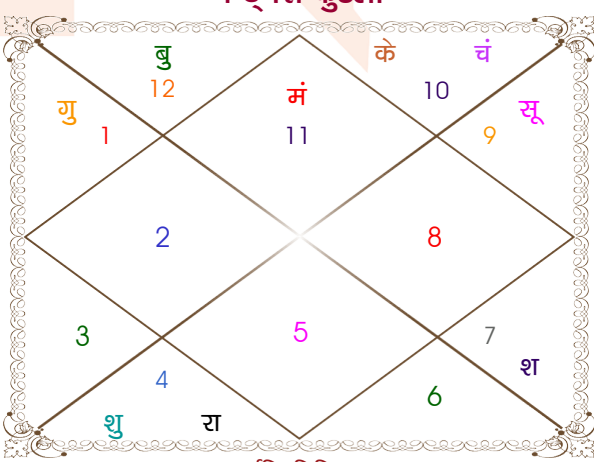

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	मेष	कर्क	कर्क	वृष	मीन	मीन	मक	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मिथु	सिंह	वृश्चि	मीन	वृष	कर्क	कर्क	कन्या	कर्क	मक
चतुर्थांश	कर्क	तुला	मक	मक	वृष	मिथु	मिथु	तुला	कर्क	मक
सप्तमांश	मेष	कर्क	मेष	मिथु	धनु	वृश्चि	धनु	मक	मक	कर्क
नवमांश	वृष	सिंह	वृश्चि	मक	कुंभ	तुला	वृश्चि	कन्या	कर्क	मक
दशमांश	मिथु	कन्या	सिंह	तुला	कुंभ	मीन	मीन	मिथु	मीन	कन्या
द्वादशांश	सिंह	तुला	मक	मीन	कर्क	सिंह	सिंह	धनु	कर्क	मक
षोडशांश	मिथु	धनु	धनु	मीन	तुला	मिथु	कर्क	कर्क	मेष	मेष
विंशांश	कन्या	कुंभ	कुंभ	मिथु	मीन	मेष	वृष	वृश्चि	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	वृष	सिंह	कर्क	धनु	वृश्चि	वृष	मिथु	मिथु	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	कन्या	मिथु	कुंभ	सिंह	वृश्चि	धनु	मक	सिंह	मक	कर्क
त्रिंशांश	तुला	धनु	मीन	मक	कन्या	मीन	मीन	वृश्चि	वृष	वृष
खवेदांश	मीन	मक	मिथु	कुंभ	वृष	मीन	वृष	धनु	तुला	तुला
अक्षवेदांश	कर्क	मेष	मीन	धनु	मेष	कर्क	कन्या	वृश्चि	मेष	मेष
षष्ट्यंश	कुंभ	धनु	मक	कुंभ	मीन	मेष	कर्क	तुला	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
गुरु	4 चामर	4 चामर	5 सिंहान	8 चन्दनवन
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	18.10	12.00	9.90	13.75	13.05	6.70	13.25	5.25	5.65
सप्तवर्ग	17.95	11.35	9.98	13.65	12.68	6.80	14.00	5.88	5.65
दशवर्ग	17.48	10.60	9.18	14.33	13.23	6.28	13.88	5.90	6.50
षोडशवर्ग	17.50	10.70	9.18	14.60	12.33	8.03	13.05	5.68	6.78

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	58	36	2	17	23	56	27
सप्तवर्गज बल	158	71	60	109	107	26	99
ओजयुग्मक बल	30	30	0	15	15	30	0
केन्द्र बल	60	60	60	30	15	15	60
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	305	197	122	171	159	127	186
कुल दिग्बल	26	4	58	3	15	44	31
नतोन्नत बल	25	35	35	60	25	25	35
पक्ष बल	30	60	30	30	30	30	30
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	98	7	51	56	33	34	48
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	153	178	192	145	208	88	114
कुल चेष्टाबल	0	0	39	40	11	40	26
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-27	8	4	-8	-22	-22	-25
कुल षट्बल	518	439	432	377	405	321	341
रूप षट्बल	8.6	7.3	7.2	6.3	6.8	5.4	5.7
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.7	1.2	1.4	0.9	1.0	1.0	1.1
संबंधित पद	1	3	2	7	5	6	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.01	32.67	9.04	26.10	16.00	47.41	26.45
कष्ट फल	5.88	27.02	35.03	29.03	42.67	9.11	33.54

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	321	432	405	341	341	405	432	321	377	439	518	377
भावदिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	48	76	29	-11	-20	-16	-19	27	51	62	51	50
कुल भाव बल	429	518	444	390	341	429	443	388	448	501	619	477
रूप भाव बल	7.1	8.6	7.4	6.5	5.7	7.1	7.4	6.5	7.5	8.3	10.3	8.0
संबंधित पद	8	2	6	10	12	9	7	11	5	3	1	4

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

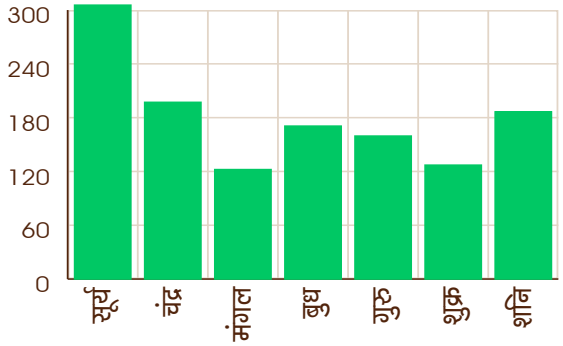

दिग्बल

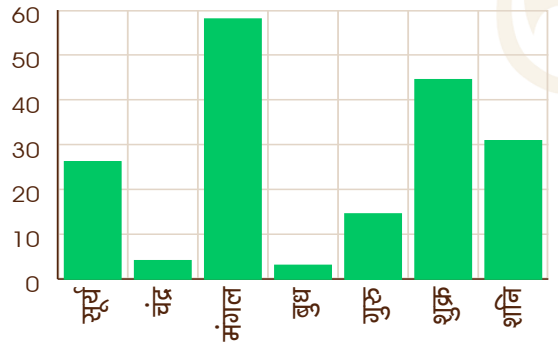

कालबल

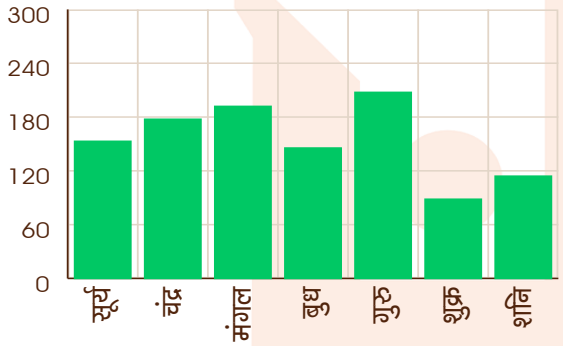

चेष्टाबल

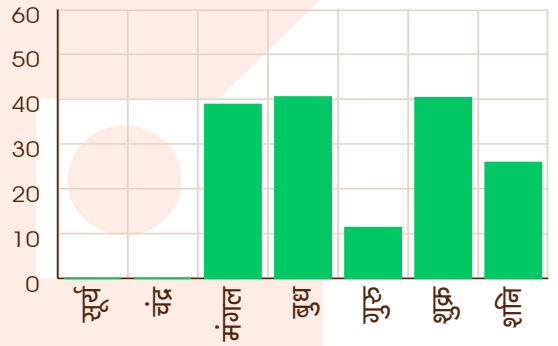

नैसर्गिक बल

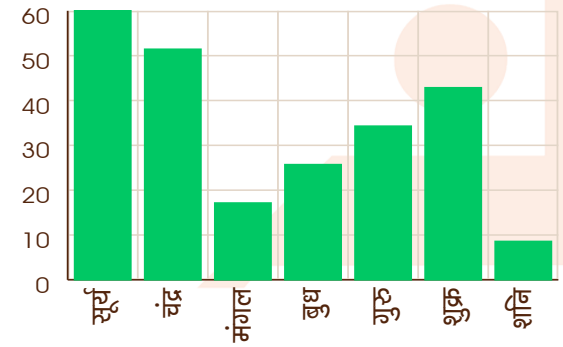

दृग्बल

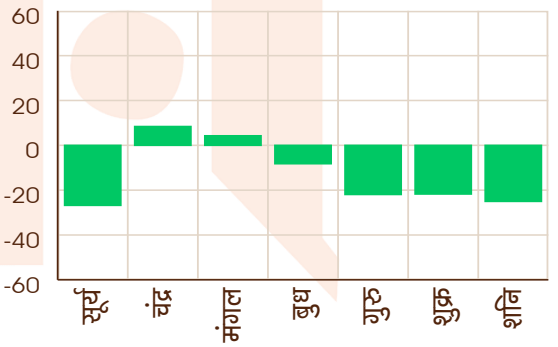

रूप षट्बल

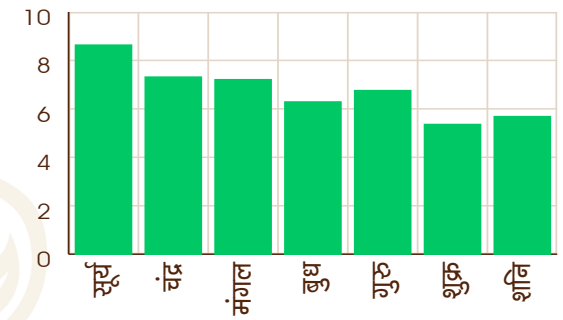

न्यूनतम षट्बल

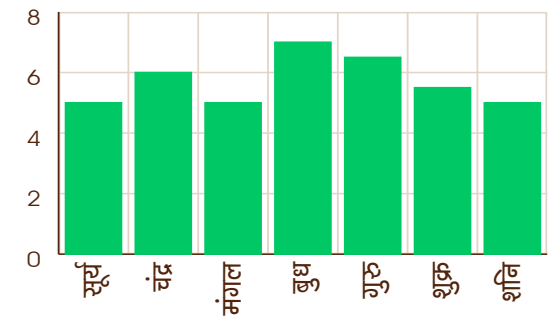

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

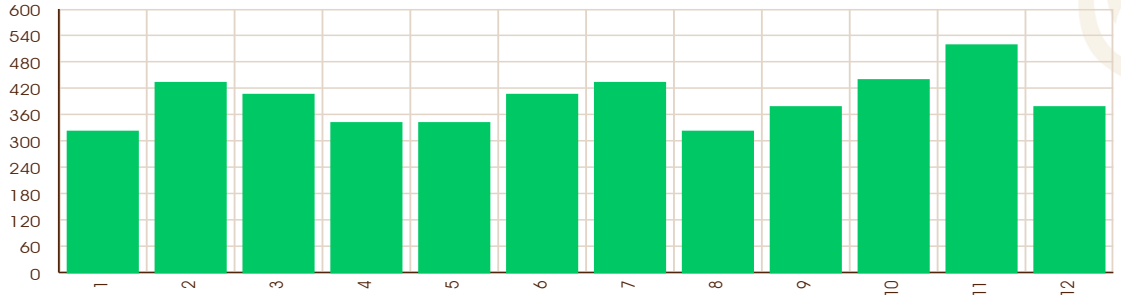

भावदिग्बल

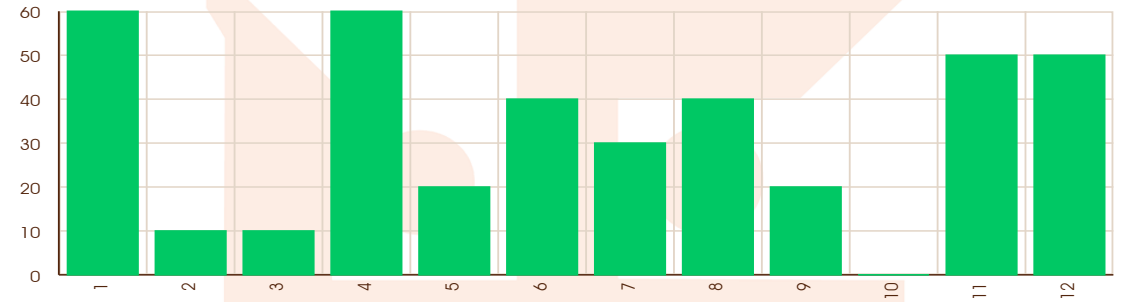

भावदृष्टि बल

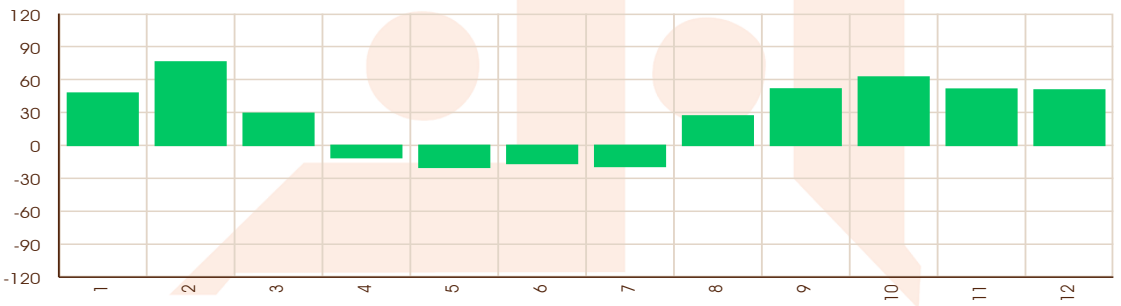

भाव बल

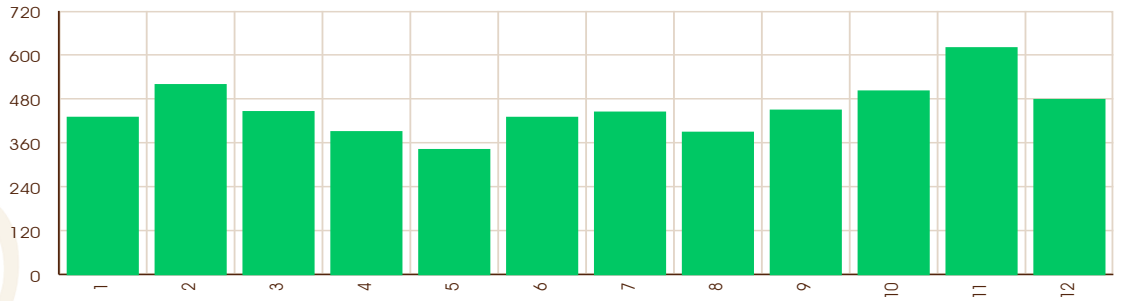

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

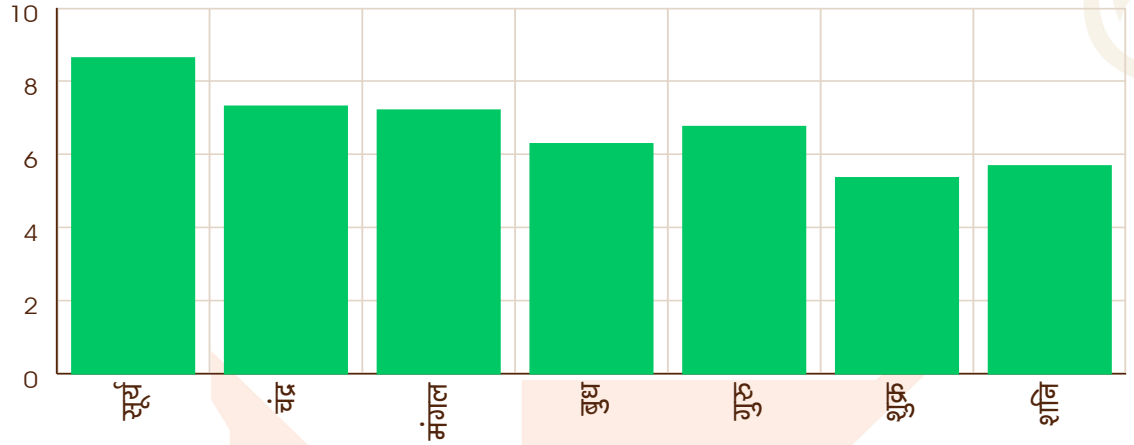

इष्ट - कष्ट फल

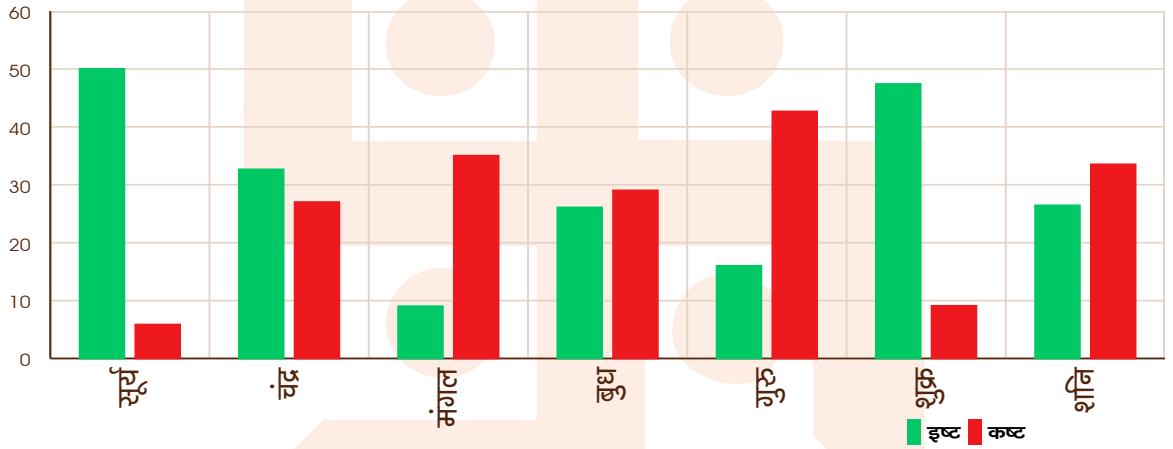

रूप भाव बल

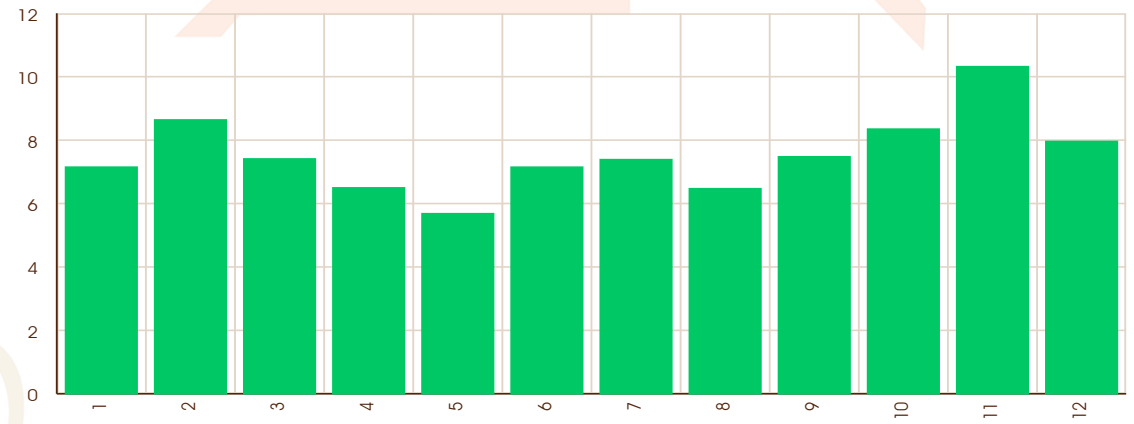

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	26:19:49	--	--	विशाखा	2	16
गुलिक	गु	वृश्चि	06:06:17	--	--	अनुराधा	1	17
काल	का	वृश्चि	24:51:02	--	--	ज्येष्ठा	3	18
मृत्यु	मृ	मक	04:48:49	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
यमघंटक	यम	कुंभ	23:35:24	--	--	पू०भाद्रपद	2	25
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	27:54:53	--	--	धनिष्ठा	2	23
धूम	धू	सिंह	29:29:40	उच्च	--	उ०फाल्गुनी	1	12
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	00:30:20	उच्च	--	विशाखा	4	16
परिवेश	परि	वृष	00:30:20	--	--	कृतिका	2	3
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	29:29:40	--	--	पू०भाद्रपद	3	25
उपकेतु	उप	मीन	16:09:40	--	--	उ०भाद्रपद	4	26

प्राणपद	:	कर्क	11:21:47	कारकाँश लग्न	:	कन्या	19:38:15
भाव लग्न	:	वृश्चि	08:25:16	होरा लग्न	:	मिथु	00:40:53
घटी लग्न	:	कुंभ	07:27:42	वर्णद लग्न	:	धनु	27:00:42

उपग्रह कुंडली

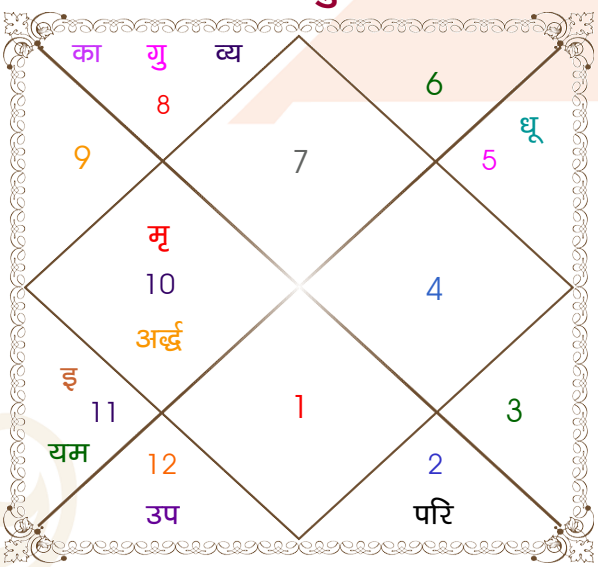

आरूढ़ कुंडली

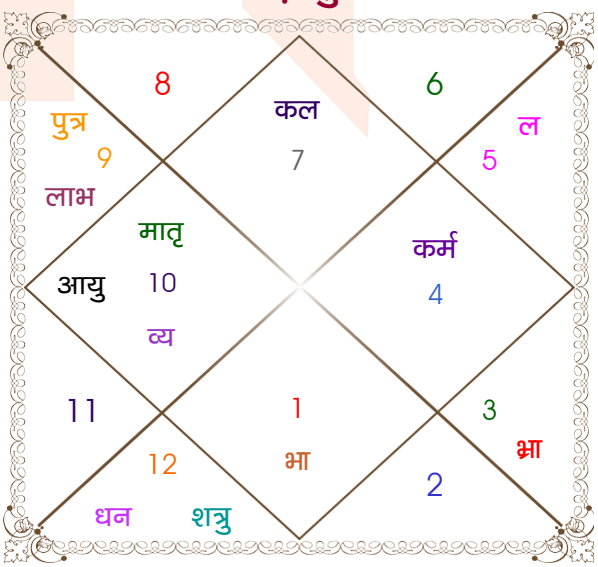

षन्नाडी चक्र

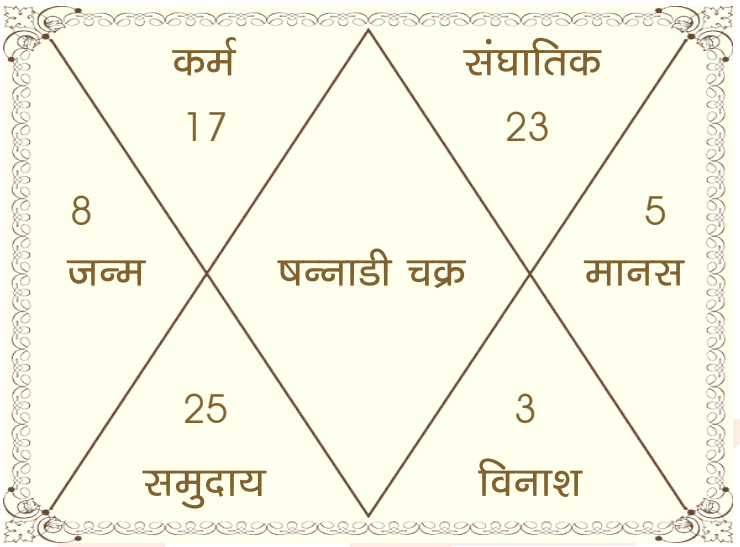

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
कुल	5	3	0	6	5	5	4	3	3	6	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	4	3	6	2	5	6	4	2	5	3	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	4	6	4	5	1	3	5	4	2	2	2	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
कुल	5	1	5	6	3	7	3	2	6	6	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	5	5	6	5	4	5	2	5	4	4	7	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	6	2	5	4	4	3	4	7	6	4	4	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	5	4	3	3	4	2	3	3	2	3	3	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	7
बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	3	5	3	2	6	5	4	6	5	3	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	4	2	3	3	2	3	3	4	5	4	3	39
गुरु	5	6	5	4	5	2	5	4	4	7	4	5	56
मंगल	2	2	1	4	6	4	5	1	3	5	4	2	39
सूर्य	5	3	0	6	5	5	4	3	3	6	5	3	48
शुक्र	2	5	4	4	3	4	7	6	4	4	3	6	52
बुध	5	5	1	5	6	3	7	3	2	6	6	5	54
चंद्र	3	5	4	4	3	6	2	5	6	4	2	5	49
बिन्दु	25	30	17	30	31	26	33	25	26	37	28	29	337
रेखा	31	26	39	26	25	30	23	31	30	19	28	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	0	0	0	1	0	1	3	2	0	9
गुरु	1	4	1	0	1	0	1	0	0	5	0	1	14
मंगल	0	0	0	3	4	2	4	0	1	3	3	1	21
सूर्य	2	0	0	3	2	2	4	0	0	3	5	0	21
शुक्र	0	1	1	0	1	0	4	2	2	0	0	2	13
बुध	3	2	0	2	4	0	6	0	0	3	5	2	27
चंद्र	0	1	2	0	0	2	0	1	3	0	0	1	10
रेखा	6	10	4	8	12	6	20	3	7	17	15	7	115

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	0	0	0	0	0	1	3	0	0	6
गुरु	1	4	1	0	1	0	0	0	0	5	0	1	13
मंगल	0	0	0	3	4	2	4	0	0	3	0	1	17
सूर्य	2	0	0	3	2	2	4	0	0	3	2	0	18
शुक्र	0	1	1	0	1	0	3	2	0	0	0	2	10
बुध	3	2	0	2	4	0	4	0	0	3	2	2	22
चंद्र	0	1	0	0	0	0	0	1	2	0	0	1	5
रेखा	6	10	2	8	12	4	15	3	3	17	4	7	91

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	121	48	117	178	102	89	44
ग्रह पिंड	64	22	71	100	67	39	25
शोध्य पिंड	185	70	188	278	169	128	69

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

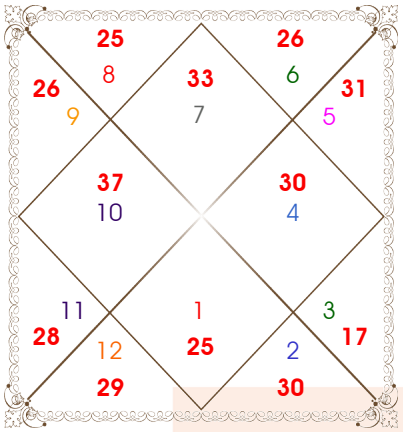

सूर्य का अष्टकवर्ग

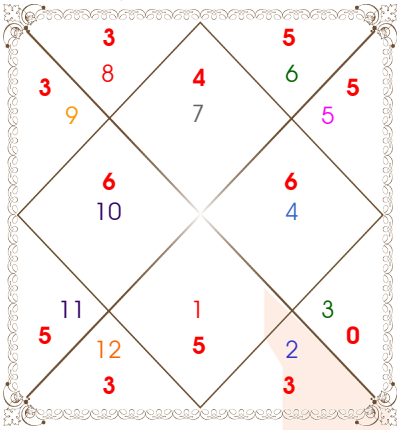

चंद्र का अष्टकवर्ग

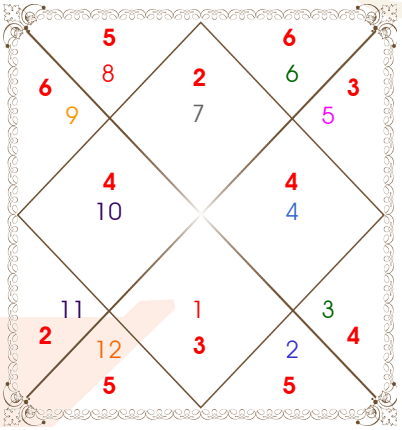

मंगल का अष्टकवर्ग

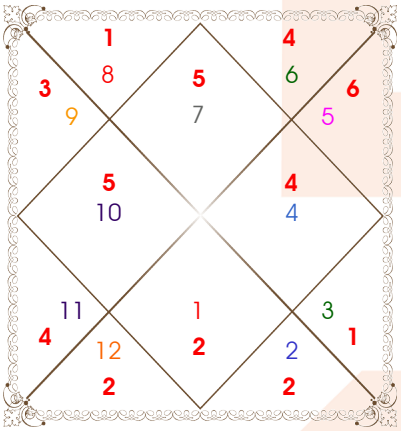

बुध का अष्टकवर्ग

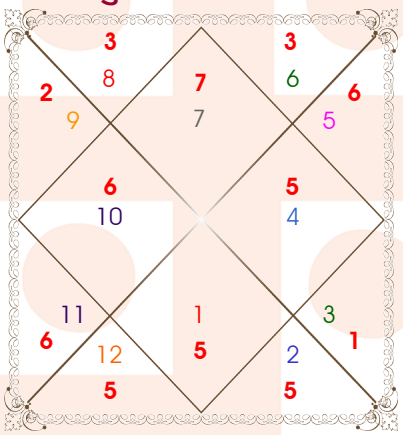

गुरु का अष्टकवर्ग

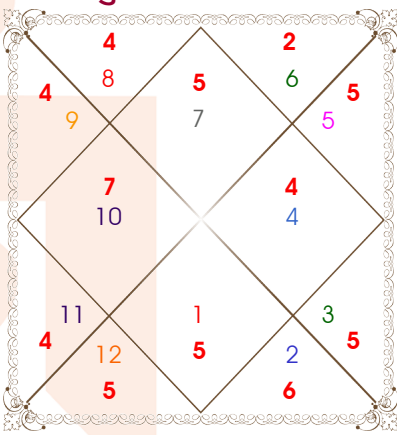

शुक्र का अष्टकवर्ग

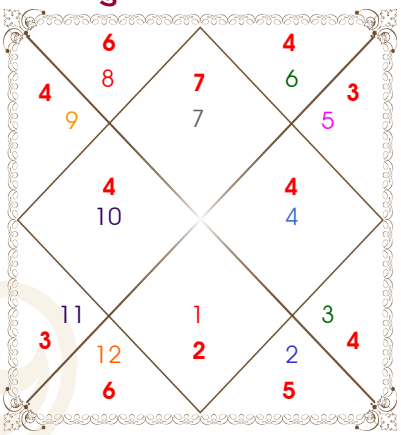

शनि का अष्टकवर्ग

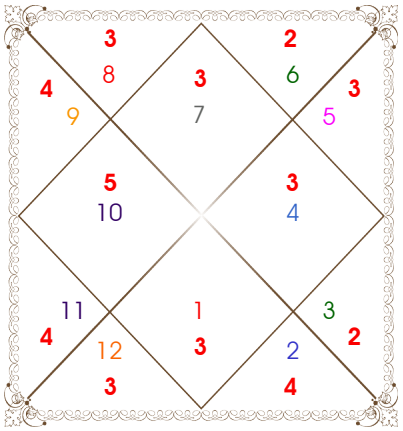

लग्न का अष्टकवर्ग

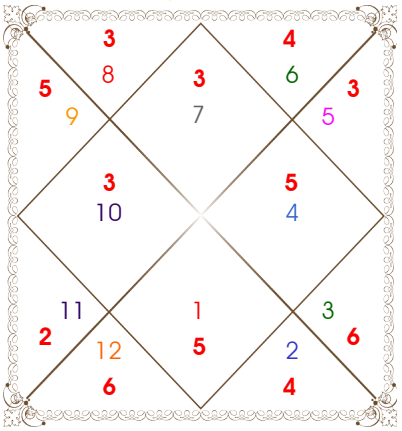

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

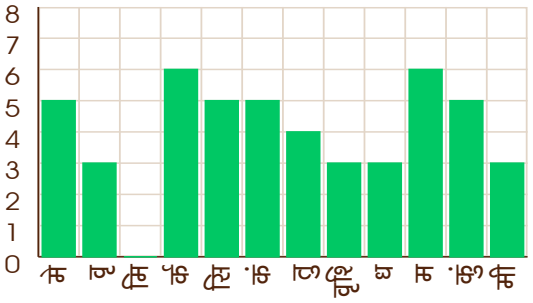

चन्द्र

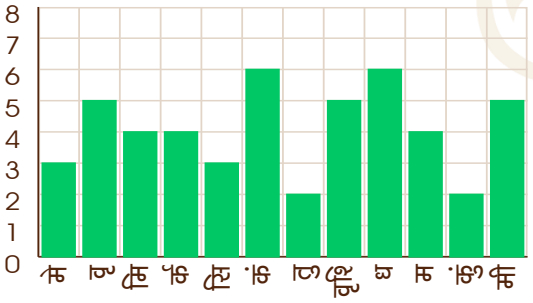

मंगल

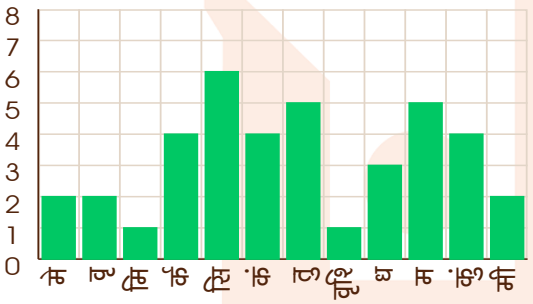

बुध

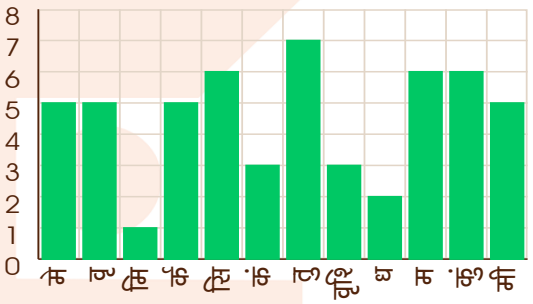

गुरु

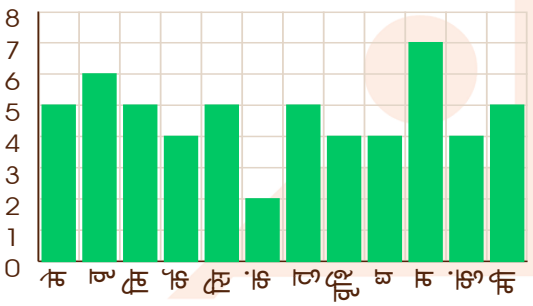

शुक्र

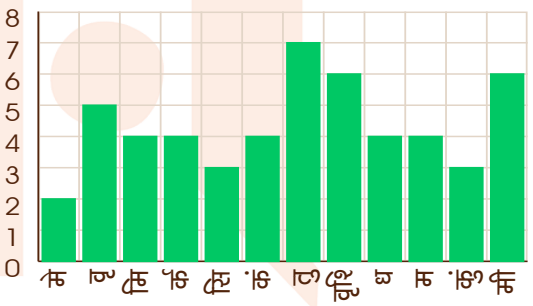

शनि

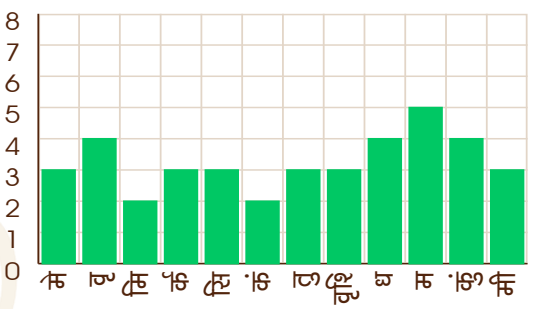

लग्न

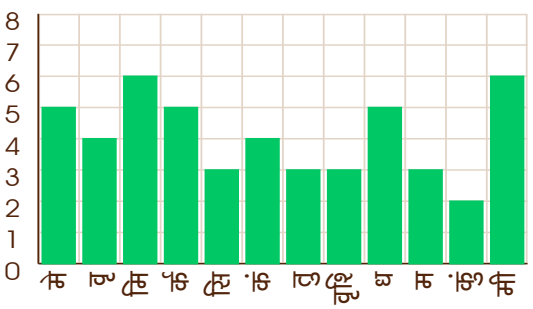

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

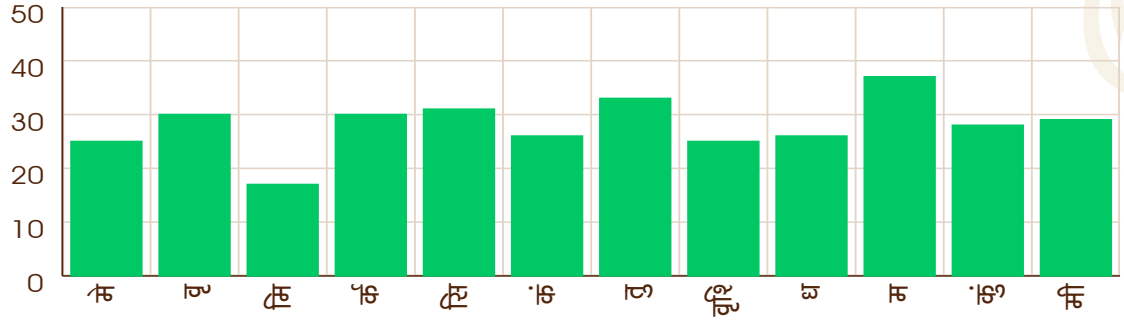

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

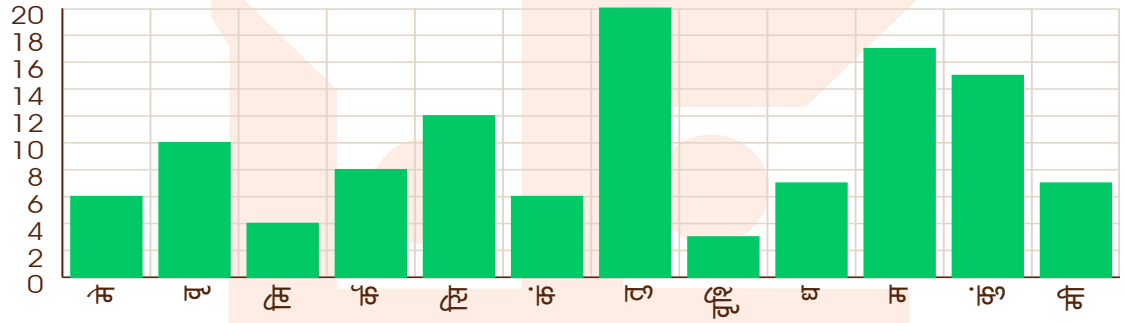

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

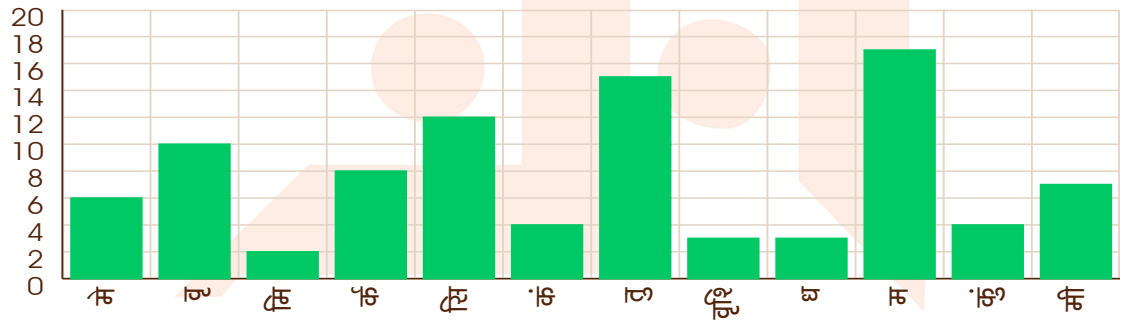

शोध्य पिंड

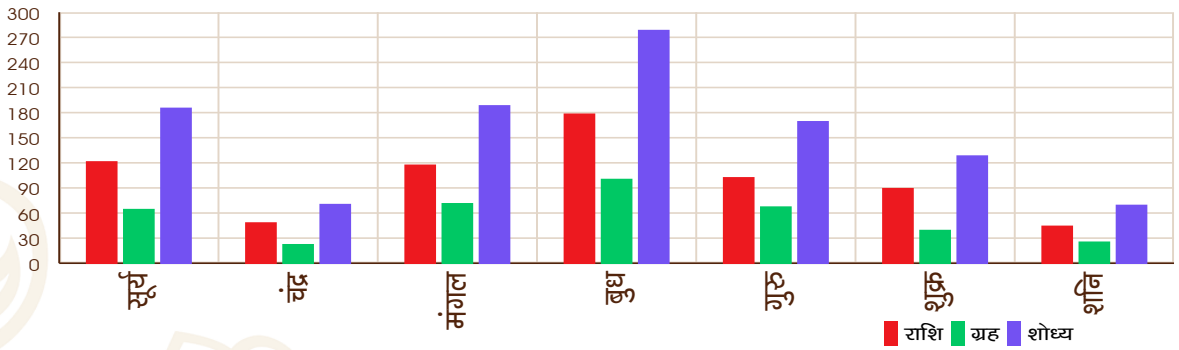

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 8 मास 7 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
30/04/1963		06/01/1965		06/01/1982		06/01/1989		06/01/2009	
06/01/1965		06/01/1982		06/01/1989		06/01/2009		06/01/2015	
	00/00/0000	बुध	05/06/1967	केतु	04/06/1982	शुक्र	07/05/1992	सूर्य	25/04/2009
	00/00/0000	केतु	01/06/1968	शुक्र	04/08/1983	सूर्य	08/05/1993	चंद्र	25/10/2009
	00/00/0000	शुक्र	02/04/1971	सूर्य	10/12/1983	चंद्र	06/01/1995	मंगल	02/03/2010
	00/00/0000	सूर्य	06/02/1972	चंद्र	10/07/1984	मंगल	08/03/1996	राहु	25/01/2011
	00/00/0000	चंद्र	08/07/1973	मंगल	06/12/1984	राहु	08/03/1999	गुरु	13/11/2011
	00/00/0000	मंगल	05/07/1974	राहु	25/12/1985	गुरु	06/11/2001	शनि	25/10/2012
	00/00/0000	राहु	21/01/1977	गुरु	01/12/1986	शनि	06/01/2005	बुध	31/08/2013
	30/04/1963	गुरु	29/04/1979	शनि	10/01/1988	बुध	07/11/2007	केतु	06/01/2014
गुरु	06/01/1965	शनि	06/01/1982	बुध	06/01/1989	केतु	06/01/2009	शुक्र	06/01/2015

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
06/01/2015		06/01/2025		07/01/2032		06/01/2050		06/01/2066	
06/01/2025		07/01/2032		06/01/2050		06/01/2066		30/04/2083	
चंद्र	07/11/2015	मंगल	04/06/2025	राहु	19/09/2034	गुरु	24/02/2052	शनि	09/01/2069
मंगल	07/06/2016	राहु	23/06/2026	गुरु	11/02/2037	शनि	07/09/2054	बुध	19/09/2071
राहु	07/12/2017	गुरु	29/05/2027	शनि	19/12/2039	बुध	13/12/2056	केतु	28/10/2072
गुरु	08/04/2019	शनि	07/07/2028	बुध	08/07/2042	केतु	18/11/2057	शुक्र	29/12/2075
शनि	06/11/2020	बुध	04/07/2029	केतु	26/07/2043	शुक्र	19/07/2060	सूर्य	10/12/2076
बुध	07/04/2022	केतु	01/12/2029	शुक्र	26/07/2046	सूर्य	08/05/2061	चंद्र	11/07/2078
केतु	07/11/2022	शुक्र	31/01/2031	सूर्य	20/06/2047	चंद्र	07/09/2062	मंगल	20/08/2079
शुक्र	07/07/2024	सूर्य	08/06/2031	चंद्र	19/12/2048	मंगल	14/08/2063	राहु	26/06/2082
सूर्य	06/01/2025	चंद्र	07/01/2032	मंगल	06/01/2050	राहु	06/01/2066	गुरु	30/04/2083

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 8 मा 16 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
30/04/1963		06/01/1965		05/06/1967		01/06/1968		02/04/1971	
06/01/1965		05/06/1967		01/06/1968		02/04/1971		06/02/1972	
	00/00/0000	बुध	11/05/1965	केतु	26/06/1967	शुक्र	20/11/1968	सूर्य	17/04/1971
	30/04/1963	केतु	01/07/1965	शुक्र	25/08/1967	सूर्य	11/01/1969	चंद्र	13/05/1971
बुध	01/08/1963	शुक्र	24/11/1965	सूर्य	12/09/1967	चंद्र	07/04/1969	मंगल	31/05/1971
केतु	24/09/1963	सूर्य	07/01/1966	चंद्र	12/10/1967	मंगल	07/06/1969	राहु	17/07/1971
शुक्र	25/02/1964	चंद्र	22/03/1966	मंगल	02/11/1967	राहु	09/11/1969	गुरु	27/08/1971
सूर्य	11/04/1964	मंगल	12/05/1966	राहु	27/12/1967	गुरु	27/03/1970	शनि	15/10/1971
चंद्र	27/06/1964	राहु	21/09/1966	गुरु	13/02/1968	शनि	07/09/1970	बुध	28/11/1971
मंगल	20/08/1964	गुरु	16/01/1967	शनि	10/04/1968	बुध	31/01/1971	केतु	16/12/1971
राहु	06/01/1965	शनि	05/06/1967	बुध	01/06/1968	केतु	02/04/1971	शुक्र	06/02/1972

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
06/02/1972		08/07/1973		05/07/1974		21/01/1977		29/04/1979	
08/07/1973		05/07/1974		21/01/1977		29/04/1979		06/01/1982	
चंद्र	20/03/1972	मंगल	29/07/1973	राहु	21/11/1974	गुरु	12/05/1977	शनि	02/10/1979
मंगल	19/04/1972	राहु	21/09/1973	गुरु	26/03/1975	शनि	20/09/1977	बुध	18/02/1980
राहु	06/07/1972	गुरु	08/11/1973	शनि	20/08/1975	बुध	15/01/1978	केतु	15/04/1980
गुरु	13/09/1972	शनि	05/01/1974	बुध	30/12/1975	केतु	04/03/1978	शुक्र	26/09/1980
शनि	04/12/1972	बुध	25/02/1974	केतु	22/02/1976	शुक्र	20/07/1978	सूर्य	14/11/1980
बुध	15/02/1973	केतु	18/03/1974	शुक्र	27/07/1976	सूर्य	31/08/1978	चंद्र	04/02/1981
केतु	17/03/1973	शुक्र	17/05/1974	सूर्य	11/09/1976	चंद्र	08/11/1978	मंगल	03/04/1981
शुक्र	12/06/1973	सूर्य	05/06/1974	चंद्र	28/11/1976	मंगल	26/12/1978	राहु	28/08/1981
सूर्य	08/07/1973	चंद्र	05/07/1974	मंगल	21/01/1977	राहु	29/04/1979	गुरु	06/01/1982

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
06/01/1982		04/06/1982		04/08/1983		10/12/1983		10/07/1984	
04/06/1982		04/08/1983		10/12/1983		10/07/1984		06/12/1984	
केतु	15/01/1982	शुक्र	14/08/1982	सूर्य	11/08/1983	चंद्र	28/12/1983	मंगल	19/07/1984
शुक्र	09/02/1982	सूर्य	05/09/1982	चंद्र	21/08/1983	मंगल	09/01/1984	राहु	10/08/1984
सूर्य	16/02/1982	चंद्र	10/10/1982	मंगल	29/08/1983	राहु	10/02/1984	गुरु	30/08/1984
चंद्र	01/03/1982	मंगल	04/11/1982	राहु	17/09/1983	गुरु	10/03/1984	शनि	23/09/1984
मंगल	09/03/1982	राहु	07/01/1983	गुरु	04/10/1983	शनि	13/04/1984	बुध	14/10/1984
राहु	01/04/1982	गुरु	05/03/1983	शनि	24/10/1983	बुध	13/05/1984	केतु	23/10/1984
गुरु	21/04/1982	शनि	11/05/1983	बुध	11/11/1983	केतु	25/05/1984	शुक्र	17/11/1984
शनि	14/05/1982	बुध	11/07/1983	केतु	19/11/1983	शुक्र	30/06/1984	सूर्य	24/11/1984
बुध	04/06/1982	केतु	04/08/1983	शुक्र	10/12/1983	सूर्य	10/07/1984	चंद्र	06/12/1984

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
06/12/1984		25/12/1985		01/12/1986		10/01/1988		06/01/1989	
25/12/1985		01/12/1986		10/01/1988		06/01/1989		07/05/1992	
राहु	02/02/1985	गुरु	08/02/1986	शनि	03/02/1987	बुध	01/03/1988	शुक्र	28/07/1989
गुरु	25/03/1985	शनि	03/04/1986	बुध	01/04/1987	केतु	22/03/1988	सूर्य	27/09/1989
शनि	25/05/1985	बुध	22/05/1986	केतु	25/04/1987	शुक्र	22/05/1988	चंद्र	06/01/1990
बुध	18/07/1985	केतु	11/06/1986	शुक्र	01/07/1987	सूर्य	09/06/1988	मंगल	18/03/1990
केतु	10/08/1985	शुक्र	06/08/1986	सूर्य	22/07/1987	चंद्र	09/07/1988	राहु	17/09/1990
शुक्र	12/10/1985	सूर्य	23/08/1986	चंद्र	24/08/1987	मंगल	30/07/1988	गुरु	26/02/1991
सूर्य	01/11/1985	चंद्र	21/09/1986	मंगल	17/09/1987	राहु	22/09/1988	शनि	07/09/1991
चंद्र	03/12/1985	मंगल	11/10/1986	राहु	17/11/1987	गुरु	10/11/1988	बुध	26/02/1992
मंगल	25/12/1985	राहु	01/12/1986	गुरु	10/01/1988	शनि	06/01/1989	केतु	07/05/1992

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
07/05/1992		08/05/1993		06/01/1995		08/03/1996		08/03/1999	
08/05/1993		06/01/1995		08/03/1996		08/03/1999		06/11/2001	
सूर्य	26/05/1992	चंद्र	27/06/1993	मंगल	31/01/1995	राहु	19/08/1996	गुरु	16/07/1999
चंद्र	25/06/1992	मंगल	02/08/1993	राहु	05/04/1995	गुरु	12/01/1997	शनि	17/12/1999
मंगल	16/07/1992	राहु	01/11/1993	गुरु	01/06/1995	शनि	04/07/1997	बुध	03/05/2000
राहु	09/09/1992	गुरु	21/01/1994	शनि	07/08/1995	बुध	07/12/1997	केतु	29/06/2000
गुरु	28/10/1992	शनि	28/04/1994	बुध	07/10/1995	केतु	09/02/1998	शुक्र	08/12/2000
शनि	25/12/1992	बुध	23/07/1994	केतु	01/11/1995	शुक्र	10/08/1998	सूर्य	26/01/2001
बुध	14/02/1993	केतु	28/08/1994	शुक्र	11/01/1996	सूर्य	04/10/1998	चंद्र	17/04/2001
केतु	08/03/1993	शुक्र	07/12/1994	सूर्य	01/02/1996	चंद्र	03/01/1999	मंगल	13/06/2001
शुक्र	08/05/1993	सूर्य	06/01/1995	चंद्र	08/03/1996	मंगल	08/03/1999	राहु	06/11/2001

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
06/11/2001		06/01/2005		07/11/2007		06/01/2009		25/04/2009	
06/01/2005		07/11/2007		06/01/2009		25/04/2009		25/10/2009	
शनि	08/05/2002	बुध	02/06/2005	केतु	02/12/2007	सूर्य	11/01/2009	चंद्र	11/05/2009
बुध	19/10/2002	केतु	01/08/2005	शुक्र	11/02/2008	चंद्र	21/01/2009	मंगल	21/05/2009
केतु	26/12/2002	शुक्र	20/01/2006	सूर्य	03/03/2008	मंगल	27/01/2009	राहु	18/06/2009
शुक्र	07/07/2003	सूर्य	13/03/2006	चंद्र	07/04/2008	राहु	12/02/2009	गुरु	12/07/2009
सूर्य	02/09/2003	चंद्र	07/06/2006	मंगल	02/05/2008	गुरु	27/02/2009	शनि	10/08/2009
चंद्र	08/12/2003	मंगल	07/08/2006	राहु	05/07/2008	शनि	16/03/2009	बुध	05/09/2009
मंगल	13/02/2004	राहु	09/01/2007	गुरु	31/08/2008	बुध	01/04/2009	केतु	16/09/2009
राहु	05/08/2004	गुरु	27/05/2007	शनि	07/11/2008	केतु	07/04/2009	शुक्र	16/10/2009
गुरु	06/01/2005	शनि	07/11/2007	बुध	06/01/2009	शुक्र	25/04/2009	सूर्य	25/10/2009

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
25/10/2009		02/03/2010		25/01/2011		13/11/2011		25/10/2012	
02/03/2010		25/01/2011		13/11/2011		25/10/2012		31/08/2013	
मंगल	02/11/2009	राहु	20/04/2010	गुरु	05/03/2011	शनि	07/01/2012	बुध	08/12/2012
राहु	21/11/2009	गुरु	03/06/2010	शनि	20/04/2011	बुध	25/02/2012	केतु	26/12/2012
गुरु	08/12/2009	शनि	25/07/2010	बुध	31/05/2011	केतु	16/03/2012	शुक्र	16/02/2013
शनि	28/12/2009	बुध	10/09/2010	केतु	17/06/2011	शुक्र	13/05/2012	सूर्य	03/03/2013
बुध	15/01/2010	केतु	29/09/2010	शुक्र	05/08/2011	सूर्य	30/05/2012	चंद्र	29/03/2013
केतु	23/01/2010	शुक्र	23/11/2010	सूर्य	20/08/2011	चंद्र	28/06/2012	मंगल	16/04/2013
शुक्र	13/02/2010	सूर्य	09/12/2010	चंद्र	13/09/2011	मंगल	19/07/2012	राहु	02/06/2013
सूर्य	19/02/2010	चंद्र	05/01/2011	मंगल	30/09/2011	राहु	09/09/2012	गुरु	13/07/2013
चंद्र	02/03/2010	मंगल	25/01/2011	राहु	13/11/2011	गुरु	25/10/2012	शनि	31/08/2013

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
31/08/2013		06/01/2014		06/01/2015		07/11/2015		07/06/2016	
06/01/2014		06/01/2015		07/11/2015		07/06/2016		07/12/2017	
केतु	08/09/2013	शुक्र	08/03/2014	चंद्र	01/02/2015	मंगल	19/11/2015	राहु	28/08/2016
शुक्र	29/09/2013	सूर्य	26/03/2014	मंगल	19/02/2015	राहु	21/12/2015	गुरु	09/11/2016
सूर्य	05/10/2013	चंद्र	26/04/2014	राहु	05/04/2015	गुरु	19/01/2016	शनि	04/02/2017
चंद्र	16/10/2013	मंगल	17/05/2014	गुरु	16/05/2015	शनि	21/02/2016	बुध	22/04/2017
मंगल	24/10/2013	राहु	11/07/2014	शनि	03/07/2015	बुध	22/03/2016	केतु	24/05/2017
राहु	12/11/2013	गुरु	29/08/2014	बुध	15/08/2015	केतु	04/04/2016	शुक्र	24/08/2017
गुरु	29/11/2013	शनि	25/10/2014	केतु	02/09/2015	शुक्र	09/05/2016	सूर्य	20/09/2017
शनि	19/12/2013	बुध	16/12/2014	शुक्र	23/10/2015	सूर्य	20/05/2016	चंद्र	05/11/2017
बुध	06/01/2014	केतु	06/01/2015	सूर्य	07/11/2015	चंद्र	07/06/2016	मंगल	07/12/2017

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
07/12/2017		08/04/2019		06/11/2020		07/04/2022		07/11/2022	
08/04/2019		06/11/2020		07/04/2022		07/11/2022		07/07/2024	
गुरु	10/02/2018	शनि	08/07/2019	बुध	18/01/2021	केतु	20/04/2022	शुक्र	16/02/2023
शनि	28/04/2018	बुध	28/09/2019	केतु	18/02/2021	शुक्र	25/05/2022	सूर्य	18/03/2023
बुध	06/07/2018	केतु	01/11/2019	शुक्र	15/05/2021	सूर्य	05/06/2022	चंद्र	08/05/2023
केतु	03/08/2018	शुक्र	05/02/2020	सूर्य	10/06/2021	चंद्र	23/06/2022	मंगल	13/06/2023
शुक्र	23/10/2018	सूर्य	05/03/2020	चंद्र	23/07/2021	मंगल	05/07/2022	राहु	12/09/2023
सूर्य	17/11/2018	चंद्र	22/04/2020	मंगल	22/08/2021	राहु	06/08/2022	गुरु	02/12/2023
चंद्र	27/12/2018	मंगल	26/05/2020	राहु	08/11/2021	गुरु	04/09/2022	शनि	08/03/2024
मंगल	25/01/2019	राहु	21/08/2020	गुरु	16/01/2022	शनि	07/10/2022	बुध	02/06/2024
राहु	08/04/2019	गुरु	06/11/2020	शनि	07/04/2022	बुध	07/11/2022	केतु	07/07/2024

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
07/07/2024		06/01/2025		04/06/2025		23/06/2026		29/05/2027	
06/01/2025		04/06/2025		23/06/2026		29/05/2027		07/07/2028	
सूर्य	16/07/2024	मंगल	15/01/2025	राहु	01/08/2025	गुरु	07/08/2026	शनि	02/08/2027
चंद्र	01/08/2024	राहु	06/02/2025	गुरु	21/09/2025	शनि	30/09/2026	बुध	28/09/2027
मंगल	11/08/2024	गुरु	26/02/2025	शनि	20/11/2025	बुध	17/11/2026	केतु	22/10/2027
राहु	08/09/2024	शनि	21/03/2025	बुध	14/01/2026	केतु	07/12/2026	शुक्र	28/12/2027
गुरु	02/10/2024	बुध	12/04/2025	केतु	05/02/2026	शुक्र	02/02/2027	सूर्य	17/01/2028
शनि	31/10/2024	केतु	20/04/2025	शुक्र	10/04/2026	सूर्य	19/02/2027	चंद्र	20/02/2028
बुध	26/11/2024	शुक्र	15/05/2025	सूर्य	29/04/2026	चंद्र	19/03/2027	मंगल	15/03/2028
केतु	06/12/2024	सूर्य	23/05/2025	चंद्र	31/05/2026	मंगल	08/04/2027	राहु	14/05/2028
शुक्र	06/01/2025	चंद्र	04/06/2025	मंगल	23/06/2026	राहु	29/05/2027	गुरु	07/07/2028

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
07/07/2028		04/07/2029		01/12/2029		31/01/2031		08/06/2031	
04/07/2029		01/12/2029		31/01/2031		08/06/2031		07/01/2032	
बुध	28/08/2028	केतु	13/07/2029	शुक्र	10/02/2030	सूर्य	06/02/2031	चंद्र	25/06/2031
केतु	18/09/2028	शुक्र	07/08/2029	सूर्य	03/03/2030	चंद्र	17/02/2031	मंगल	08/07/2031
शुक्र	17/11/2028	सूर्य	15/08/2029	चंद्र	07/04/2030	मंगल	24/02/2031	राहु	09/08/2031
सूर्य	05/12/2028	चंद्र	27/08/2029	मंगल	02/05/2030	राहु	15/03/2031	गुरु	06/09/2031
चंद्र	04/01/2029	मंगल	05/09/2029	राहु	05/07/2030	गुरु	01/04/2031	शनि	10/10/2031
मंगल	26/01/2029	राहु	27/09/2029	गुरु	31/08/2030	शनि	22/04/2031	बुध	09/11/2031
राहु	21/03/2029	गुरु	17/10/2029	शनि	07/11/2030	बुध	10/05/2031	केतु	21/11/2031
गुरु	08/05/2029	शनि	10/11/2029	बुध	06/01/2031	केतु	17/05/2031	शुक्र	27/12/2031
शनि	04/07/2029	बुध	01/12/2029	केतु	31/01/2031	शुक्र	08/06/2031	सूर्य	07/01/2032

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
07/01/2032		19/09/2034		11/02/2037		19/12/2039		08/07/2042	
19/09/2034		11/02/2037		19/12/2039		08/07/2042		26/07/2043	
राहु	03/06/2032	गुरु	14/01/2035	शनि	26/07/2037	बुध	29/04/2040	केतु	30/07/2042
गुरु	12/10/2032	शनि	02/06/2035	बुध	21/12/2037	केतु	23/06/2040	शुक्र	02/10/2042
शनि	17/03/2033	बुध	04/10/2035	केतु	19/02/2038	शुक्र	25/11/2040	सूर्य	21/10/2042
बुध	04/08/2033	केतु	24/11/2035	शुक्र	12/08/2038	सूर्य	10/01/2041	चंद्र	22/11/2042
केतु	30/09/2033	शुक्र	18/04/2036	सूर्य	03/10/2038	चंद्र	29/03/2041	मंगल	15/12/2042
शुक्र	14/03/2034	सूर्य	01/06/2036	चंद्र	29/12/2038	मंगल	22/05/2041	राहु	10/02/2043
सूर्य	02/05/2034	चंद्र	13/08/2036	मंगल	27/02/2039	राहु	09/10/2041	गुरु	02/04/2043
चंद्र	23/07/2034	मंगल	03/10/2036	राहु	03/08/2039	गुरु	10/02/2042	शनि	02/06/2043
मंगल	19/09/2034	राहु	11/02/2037	गुरु	19/12/2039	शनि	08/07/2042	बुध	26/07/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
26/07/2043		26/07/2046		20/06/2047		19/12/2048		06/01/2050	
26/07/2046		20/06/2047		19/12/2048		06/01/2050		24/02/2052	
शुक्र	25/01/2044	सूर्य	11/08/2046	चंद्र	04/08/2047	मंगल	10/01/2049	गुरु	20/04/2050
सूर्य	20/03/2044	चंद्र	08/09/2046	मंगल	05/09/2047	राहु	09/03/2049	शनि	21/08/2050
चंद्र	19/06/2044	मंगल	27/09/2046	राहु	27/11/2047	गुरु	29/04/2049	बुध	10/12/2050
मंगल	22/08/2044	राहु	15/11/2046	गुरु	08/02/2048	शनि	28/06/2049	केतु	24/01/2051
राहु	02/02/2045	गुरु	29/12/2046	शनि	04/05/2048	बुध	22/08/2049	शुक्र	03/06/2051
गुरु	28/06/2045	शनि	19/02/2047	बुध	21/07/2048	केतु	13/09/2049	सूर्य	12/07/2051
शनि	19/12/2045	बुध	07/04/2047	केतु	22/08/2048	शुक्र	16/11/2049	चंद्र	15/09/2051
बुध	23/05/2046	केतु	26/04/2047	शुक्र	21/11/2048	सूर्य	05/12/2049	मंगल	30/10/2051
केतु	26/07/2046	शुक्र	20/06/2047	सूर्य	19/12/2048	चंद्र	06/01/2050	राहु	24/02/2052

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
24/02/2052		07/09/2054		13/12/2056		18/11/2057		19/07/2060	
07/09/2054		13/12/2056		18/11/2057		19/07/2060		08/05/2061	
शनि	20/07/2052	बुध	02/01/2055	केतु	01/01/2057	शुक्र	30/04/2058	सूर्य	03/08/2060
बुध	28/11/2052	केतु	19/02/2055	शुक्र	27/02/2057	सूर्य	17/06/2058	चंद्र	27/08/2060
केतु	21/01/2053	शुक्र	07/07/2055	सूर्य	16/03/2057	चंद्र	07/09/2058	मंगल	13/09/2060
शुक्र	24/06/2053	सूर्य	18/08/2055	चंद्र	14/04/2057	मंगल	02/11/2058	राहु	27/10/2060
सूर्य	09/08/2053	चंद्र	26/10/2055	मंगल	04/05/2057	राहु	29/03/2059	गुरु	05/12/2060
चंद्र	26/10/2053	मंगल	13/12/2055	राहु	24/06/2057	गुरु	05/08/2059	शनि	21/01/2061
मंगल	18/12/2053	राहु	15/04/2056	गुरु	08/08/2057	शनि	07/01/2060	बुध	03/03/2061
राहु	06/05/2054	गुरु	03/08/2056	शनि	01/10/2057	बुध	24/05/2060	केतु	20/03/2061
गुरु	07/09/2054	शनि	13/12/2056	बुध	18/11/2057	केतु	19/07/2060	शुक्र	08/05/2061

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
08/05/2061		07/09/2062		14/08/2063		06/01/2066		09/01/2069	
07/09/2062		14/08/2063		06/01/2066		09/01/2069		19/09/2071	
चंद्र	17/06/2061	मंगल	27/09/2062	राहु	23/12/2063	शनि	29/06/2066	बुध	28/05/2069
मंगल	16/07/2061	राहु	17/11/2062	गुरु	18/04/2064	बुध	02/12/2066	केतु	25/07/2069
राहु	27/09/2061	गुरु	01/01/2063	शनि	04/09/2064	केतु	04/02/2067	शुक्र	04/01/2070
गुरु	01/12/2061	शनि	24/02/2063	बुध	06/01/2065	शुक्र	06/08/2067	सूर्य	23/02/2070
शनि	16/02/2062	बुध	13/04/2063	केतु	26/02/2065	सूर्य	30/09/2067	चंद्र	16/05/2070
बुध	26/04/2062	केतु	03/05/2063	शुक्र	22/07/2065	चंद्र	31/12/2067	मंगल	12/07/2070
केतु	24/05/2062	शुक्र	29/06/2063	सूर्य	04/09/2065	मंगल	04/03/2068	राहु	06/12/2070
शुक्र	13/08/2062	सूर्य	16/07/2063	चंद्र	16/11/2065	राहु	15/08/2068	गुरु	16/04/2071
सूर्य	07/09/2062	चंद्र	14/08/2063	मंगल	06/01/2066	गुरु	09/01/2069	शनि	19/09/2071

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - बुध		मंगल - राहु - केतु		मंगल - राहु - शुक्र		मंगल - राहु - सूर्य	
20/11/2025 22:26		14/01/2026 06:23		05/02/2026 15:18		10/04/2026 13:21	
14/01/2026 06:23		05/02/2026 15:18		10/04/2026 13:21		29/04/2026 17:34	
बुध	28/11/2025 15:10	केतु	15/01/2026 13:42	शुक्र	16/02/2026 06:59	सूर्य	11/04/2026 12:22
केतु	01/12/2025 19:14	शुक्र	19/01/2026 07:11	सूर्य	19/02/2026 11:41	चंद्र	13/04/2026 02:43
शुक्र	10/12/2025 20:33	सूर्य	20/01/2026 10:02	चंद्र	24/02/2026 19:31	मंगल	14/04/2026 05:34
सूर्य	13/12/2025 13:45	चंद्र	22/01/2026 06:47	मंगल	28/02/2026 13:00	राहु	17/04/2026 02:35
चंद्र	18/12/2025 02:25	मंगल	23/01/2026 14:06	राहु	10/03/2026 03:07	गुरु	19/04/2026 15:57
मंगल	21/12/2025 06:29	राहु	26/01/2026 22:38	गुरु	18/03/2026 15:39	शनि	22/04/2026 16:49
राहु	29/12/2025 10:04	गुरु	29/01/2026 22:14	शनि	28/03/2026 18:32	बुध	25/04/2026 10:01
गुरु	05/01/2026 15:56	शनि	02/02/2026 11:14	बुध	06/04/2026 19:52	केतु	26/04/2026 12:52
शनि	14/01/2026 06:23	बुध	05/02/2026 15:18	केतु	10/04/2026 13:21	शुक्र	29/04/2026 17:34

मंगल - राहु - चंद्र		मंगल - राहु - मंगल		मंगल - गुरु - गुरु		मंगल - गुरु - शनि	
29/04/2026 17:34		31/05/2026 16:35		23/06/2026 01:31		07/08/2026 12:23	
31/05/2026 16:35		23/06/2026 01:31		07/08/2026 12:23		30/09/2026 11:49	
चंद्र	02/05/2026 09:29	मंगल	01/06/2026 23:55	गुरु	29/06/2026 02:58	शनि	16/08/2026 01:30
मंगल	04/05/2026 06:14	राहु	05/06/2026 08:27	शनि	06/07/2026 07:41	बुध	23/08/2026 17:01
राहु	09/05/2026 01:17	गुरु	08/06/2026 08:02	बुध	12/07/2026 18:13	केतु	26/08/2026 20:35
गुरु	13/05/2026 07:33	शनि	11/06/2026 21:03	केतु	15/07/2026 09:51	शुक्र	04/09/2026 20:29
शनि	18/05/2026 09:00	बुध	15/06/2026 01:07	शुक्र	22/07/2026 23:40	सूर्य	07/09/2026 13:15
बुध	22/05/2026 21:40	केतु	16/06/2026 08:26	सूर्य	25/07/2026 06:13	चंद्र	12/09/2026 01:12
केतु	24/05/2026 18:24	शुक्र	20/06/2026 01:55	चंद्र	29/07/2026 01:07	मंगल	15/09/2026 04:46
शुक्र	30/05/2026 02:14	सूर्य	21/06/2026 04:46	मंगल	31/07/2026 16:45	राहु	23/09/2026 07:05
सूर्य	31/05/2026 16:35	चंद्र	23/06/2026 01:31	राहु	07/08/2026 12:23	गुरु	30/09/2026 11:49

मंगल - गुरु - बुध		मंगल - गुरु - केतु		मंगल - गुरु - शुक्र		मंगल - गुरु - सूर्य	
30/09/2026 11:49		17/11/2026 18:52		07/12/2026 16:08		02/02/2027 11:44	
17/11/2026 18:52		07/12/2026 16:08		02/02/2027 11:44		19/02/2027 12:49	
बुध	07/10/2026 08:01	केतु	18/11/2026 22:43	शुक्र	17/12/2026 03:24	सूर्य	03/02/2027 08:11
केतु	10/10/2026 03:37	शुक्र	22/11/2026 06:15	सूर्य	19/12/2026 23:35	चंद्र	04/02/2027 18:16
शुक्र	18/10/2026 04:48	सूर्य	23/11/2026 06:07	चंद्र	24/12/2026 17:13	मंगल	05/02/2027 18:08
सूर्य	20/10/2026 14:45	चंद्र	24/11/2026 21:53	मंगल	28/12/2026 00:45	राहु	08/02/2027 07:30
चंद्र	24/10/2026 15:20	मंगल	26/11/2026 01:44	राहु	05/01/2027 13:18	गुरु	10/02/2027 14:03
मंगल	27/10/2026 10:57	राहु	29/11/2026 01:19	गुरु	13/01/2027 03:06	शनि	13/02/2027 06:49
राहु	03/11/2026 16:49	गुरु	01/12/2026 16:57	शनि	22/01/2027 03:01	बुध	15/02/2027 16:46
गुरु	10/11/2026 03:21	शनि	04/12/2026 20:31	बुध	30/01/2027 04:11	केतु	16/02/2027 16:38
शनि	17/11/2026 18:52	बुध	07/12/2026 16:08	केतु	02/02/2027 11:44	शुक्र	19/02/2027 12:49

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - गुरु - चंद्र	
19/02/2027 12:49	
19/03/2027 22:37	
चंद्र	21/02/2027 21:38
मंगल	23/02/2027 13:24
राहु	27/02/2027 19:40
गुरु	03/03/2027 14:34
शनि	08/03/2027 02:32
बुध	12/03/2027 03:07
केतु	13/03/2027 18:53
शुक्र	18/03/2027 12:31
सूर्य	19/03/2027 22:37

मंगल - गुरु - मंगल	
19/03/2027 22:37	
08/04/2027 19:52	
मंगल	21/03/2027 02:27
राहु	24/03/2027 02:02
गुरु	26/03/2027 17:40
शनि	29/03/2027 21:14
बुध	01/04/2027 16:51
केतु	02/04/2027 20:41
शुक्र	06/04/2027 04:14
सूर्य	07/04/2027 04:06
चंद्र	08/04/2027 19:52

मंगल - गुरु - राहु	
08/04/2027 19:52	
29/05/2027 23:07	
राहु	16/04/2027 11:57
गुरु	23/04/2027 07:35
शनि	01/05/2027 09:54
बुध	08/05/2027 15:46
केतु	11/05/2027 15:21
शुक्र	20/05/2027 03:53
सूर्य	22/05/2027 17:15
चंद्र	26/05/2027 23:31
मंगल	29/05/2027 23:07

मंगल - शनि - शनि	
29/05/2027 23:07	
02/08/2027 01:25	
शनि	09/06/2027 02:40
बुध	18/06/2027 04:36
केतु	21/06/2027 22:20
शुक्र	02/07/2027 14:43
सूर्य	05/07/2027 19:38
चंद्र	11/07/2027 03:50
मंगल	14/07/2027 21:34
राहु	24/07/2027 12:19
गुरु	02/08/2027 01:25

मंगल - शनि - बुध	
02/08/2027 01:25	
28/09/2027 09:48	
बुध	10/08/2027 04:24
केतु	13/08/2027 12:42
शुक्र	23/08/2027 02:06
सूर्य	25/08/2027 22:55
चंद्र	30/08/2027 17:37
मंगल	03/09/2027 01:54
राहु	11/09/2027 16:22
गुरु	19/09/2027 07:53
शनि	28/09/2027 09:48

मंगल - शनि - केतु	
28/09/2027 09:48	
22/10/2027 00:33	
केतु	29/09/2027 18:52
शुक्र	03/10/2027 17:19
सूर्य	04/10/2027 21:40
चंद्र	06/10/2027 20:53
मंगल	08/10/2027 05:57
राहु	11/10/2027 18:58
गुरु	14/10/2027 22:32
शनि	18/10/2027 16:16
बुध	22/10/2027 00:33

मंगल - शनि - शुक्र	
22/10/2027 00:33	
28/12/2027 11:49	
शुक्र	02/11/2027 06:26
सूर्य	05/11/2027 15:24
चंद्र	11/11/2027 06:20
मंगल	15/11/2027 04:47
राहु	25/11/2027 07:41
गुरु	04/12/2027 07:35
शनि	14/12/2027 23:58
बुध	24/12/2027 13:22
केतु	28/12/2027 11:49

मंगल - शनि - सूर्य	
28/12/2027 11:49	
17/01/2028 17:36	
सूर्य	29/12/2027 12:07
चंद्र	31/12/2027 04:36
मंगल	01/01/2028 08:56
राहु	04/01/2028 09:48
गुरु	07/01/2028 02:34
शनि	10/01/2028 07:29
बुध	13/01/2028 04:18
केतु	14/01/2028 08:39
शुक्र	17/01/2028 17:36

मंगल - शनि - चंद्र	
17/01/2028 17:36	
20/02/2028 11:15	
चंद्र	20/01/2028 13:05
मंगल	22/01/2028 12:18
राहु	27/01/2028 13:45
गुरु	01/02/2028 01:42
शनि	06/02/2028 09:54
बुध	11/02/2028 04:36
केतु	13/02/2028 03:49
शुक्र	18/02/2028 18:46
सूर्य	20/02/2028 11:15

मंगल - शनि - मंगल	
20/02/2028 11:15	
15/03/2028 01:59	
मंगल	21/02/2028 20:18
राहु	25/02/2028 09:19
गुरु	28/02/2028 12:53
शनि	03/03/2028 06:37
बुध	06/03/2028 14:54
केतु	07/03/2028 23:58
शुक्र	11/03/2028 22:26
सूर्य	13/03/2028 02:46
चंद्र	15/03/2028 01:59

मंगल - शनि - राहु	
15/03/2028 01:59	
14/05/2028 19:20	
राहु	24/03/2028 04:36
गुरु	01/04/2028 06:54
शनि	10/04/2028 21:39
बुध	19/04/2028 12:07
केतु	23/04/2028 01:07
शुक्र	03/05/2028 04:01
सूर्य	06/05/2028 04:53
चंद्र	11/05/2028 06:20
मंगल	14/05/2028 19:20

मंगल - शनि - गुरु	
14/05/2028 19:20	
07/07/2028 18:46	
गुरु	22/05/2028 00:04
शनि	30/05/2028 13:10
बुध	07/06/2028 04:41
केतु	10/06/2028 08:15
शुक्र	19/06/2028 08:09
सूर्य	22/06/2028 00:56
चंद्र	26/06/2028 12:53
मंगल	29/06/2028 16:27
राहु	07/07/2028 18:46

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - बुध - बुध		मंगल - बुध - केतु		मंगल - बुध - शुक्र		मंगल - बुध - सूर्य	
07/07/2028 18:46		28/08/2028 02:16		18/09/2028 05:21		17/11/2028 14:10	
28/08/2028 02:16		18/09/2028 05:21		17/11/2028 14:10		05/12/2028 16:49	
बुध	15/07/2028 01:13	केतु	29/08/2028 07:50	शुक्र	28/09/2028 06:49	सूर्य	18/11/2028 11:54
केतु	18/07/2028 01:04	शुक्र	01/09/2028 20:21	सूर्य	01/10/2028 07:16	चंद्र	20/11/2028 00:08
शुक्र	26/07/2028 14:19	सूर्य	02/09/2028 21:43	चंद्र	06/10/2028 08:00	मंगल	21/11/2028 01:29
सूर्य	29/07/2028 03:53	चंद्र	04/09/2028 15:58	मंगल	09/10/2028 20:31	राहु	23/11/2028 18:41
चंद्र	02/08/2028 10:31	मंगल	05/09/2028 21:33	राहु	18/10/2028 21:50	गुरु	26/11/2028 04:38
मंगल	05/08/2028 10:21	राहु	09/09/2028 01:37	गुरु	26/10/2028 23:01	शनि	29/11/2028 01:27
राहु	13/08/2028 03:04	गुरु	11/09/2028 21:13	शनि	05/11/2028 12:25	बुध	01/12/2028 15:02
गुरु	19/08/2028 23:16	शनि	15/09/2028 05:31	बुध	14/11/2028 01:40	केतु	02/12/2028 16:23
शनि	28/08/2028 02:16	बुध	18/09/2028 05:21	केतु	17/11/2028 14:10	शुक्र	05/12/2028 16:49

मंगल - बुध - चंद्र		मंगल - बुध - मंगल		मंगल - बुध - राहु		मंगल - बुध - गुरु	
05/12/2028 16:49		04/01/2029 21:14		26/01/2029 00:19		21/03/2029 08:16	
04/01/2029 21:14		26/01/2029 00:19		21/03/2029 08:16		08/05/2029 15:19	
चंद्र	08/12/2028 05:11	मंगल	06/01/2029 02:49	राहु	03/02/2029 03:55	गुरु	27/03/2029 18:48
मंगल	09/12/2028 23:27	राहु	09/01/2029 06:53	गुरु	10/02/2029 09:46	शनि	04/04/2029 10:19
राहु	14/12/2028 12:06	गुरु	12/01/2029 02:29	शनि	19/02/2029 00:14	बुध	11/04/2029 06:31
गुरु	18/12/2028 12:42	शनि	15/01/2029 10:47	बुध	26/02/2029 16:57	केतु	14/04/2029 02:08
शनि	23/12/2028 07:24	बुध	18/01/2029 10:37	केतु	01/03/2029 21:01	शुक्र	22/04/2029 03:19
बुध	27/12/2028 14:01	केतु	19/01/2029 16:12	शुक्र	10/03/2029 22:21	सूर्य	24/04/2029 13:16
केतु	29/12/2028 08:17	शुक्र	23/01/2029 04:43	सूर्य	13/03/2029 15:32	चंद्र	28/04/2029 13:51
शुक्र	03/01/2029 09:01	सूर्य	24/01/2029 06:04	चंद्र	18/03/2029 04:12	मंगल	01/05/2029 09:28
सूर्य	04/01/2029 21:14	चंद्र	26/01/2029 00:19	मंगल	21/03/2029 08:16	राहु	08/05/2029 15:19

मंगल - बुध - शनि		मंगल - केतु - केतु		मंगल - केतु - शुक्र		मंगल - केतु - सूर्य	
08/05/2029 15:19		04/07/2029 23:43		13/07/2029 16:31		07/08/2029 13:05	
04/07/2029 23:43		13/07/2029 16:31		07/08/2029 13:05		15/08/2029 00:03	
शनि	17/05/2029 17:15	केतु	05/07/2029 11:53	शुक्र	17/07/2029 19:56	सूर्य	07/08/2029 22:02
बुध	25/05/2029 20:14	शुक्र	06/07/2029 22:41	सूर्य	19/07/2029 01:46	चंद्र	08/08/2029 12:57
केतु	29/05/2029 04:32	सूर्य	07/07/2029 09:08	चंद्र	21/07/2029 03:29	मंगल	08/08/2029 23:23
शुक्र	07/06/2029 17:56	चंद्र	08/07/2029 02:32	मंगल	22/07/2029 14:17	राहु	10/08/2029 02:14
सूर्य	10/06/2029 14:45	मंगल	08/07/2029 14:43	राहु	26/07/2029 07:46	गुरु	11/08/2029 02:06
चंद्र	15/06/2029 09:27	राहु	09/07/2029 22:02	गुरु	29/07/2029 15:19	शनि	12/08/2029 06:26
मंगल	18/06/2029 17:44	गुरु	11/07/2029 01:52	शनि	02/08/2029 13:46	बुध	13/08/2029 07:47
राहु	27/06/2029 08:11	शनि	12/07/2029 10:56	बुध	06/08/2029 02:17	केतु	13/08/2029 18:14
गुरु	04/07/2029 23:43	बुध	13/07/2029 16:31	केतु	07/08/2029 13:05	शुक्र	15/08/2029 00:03

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - चंद्र	
15/08/2029 00:03	
27/08/2029 10:21	
चंद्र	16/08/2029 00:55
मंगल	16/08/2029 18:19
राहु	18/08/2029 15:03
गुरु	20/08/2029 06:50
शनि	22/08/2029 06:04
बुध	24/08/2029 00:19
केतु	24/08/2029 17:43
शुक्र	26/08/2029 19:26
सूर्य	27/08/2029 10:21

मंगल - केतु - मंगल	
27/08/2029 10:21	
05/09/2029 03:09	
मंगल	27/08/2029 22:32
राहु	29/08/2029 05:51
गुरु	30/08/2029 09:41
शनि	31/08/2029 18:45
बुध	02/09/2029 00:20
केतु	02/09/2029 12:30
शुक्र	03/09/2029 23:18
सूर्य	04/09/2029 09:45
चंद्र	05/09/2029 03:09

मंगल - केतु - राहु	
05/09/2029 03:09	
27/09/2029 12:04	
राहु	08/09/2029 11:41
गुरु	11/09/2029 11:16
शनि	15/09/2029 00:17
बुध	18/09/2029 04:21
केतु	19/09/2029 11:40
शुक्र	23/09/2029 05:09
सूर्य	24/09/2029 08:00
चंद्र	26/09/2029 04:45
मंगल	27/09/2029 12:04

मंगल - केतु - गुरु	
27/09/2029 12:04	
17/10/2029 09:19	
गुरु	30/09/2029 03:42
शनि	03/10/2029 07:16
बुध	06/10/2029 02:53
केतु	07/10/2029 06:43
शुक्र	10/10/2029 14:16
सूर्य	11/10/2029 14:07
चंद्र	13/10/2029 05:54
मंगल	14/10/2029 09:44
राहु	17/10/2029 09:19

मंगल - केतु - शनि	
17/10/2029 09:19	
10/11/2029 00:04	
शनि	21/10/2029 03:04
बुध	24/10/2029 11:21
केतु	25/10/2029 20:24
शुक्र	29/10/2029 18:52
सूर्य	30/10/2029 23:12
चंद्र	01/11/2029 22:26
मंगल	03/11/2029 07:30
राहु	06/11/2029 20:30
गुरु	10/11/2029 00:04

मंगल - केतु - बुध	
10/11/2029 00:04	
01/12/2029 03:10	
बुध	12/11/2029 23:54
केतु	14/11/2029 05:29
शुक्र	17/11/2029 18:00
सूर्य	18/11/2029 19:21
चंद्र	20/11/2029 13:37
मंगल	21/11/2029 19:12
राहु	24/11/2029 23:15
गुरु	27/11/2029 18:52
शनि	01/12/2029 03:10

मंगल - शुक्र - शुक्र	
01/12/2029 03:10	
10/02/2030 03:40	
शुक्र	12/12/2029 23:15
सूर्य	16/12/2029 12:28
चंद्र	22/12/2029 10:31
मंगल	26/12/2029 13:56
राहु	06/01/2030 05:37
गुरु	15/01/2030 16:53
शनि	26/01/2030 22:46
बुध	06/02/2030 00:14
केतु	10/02/2030 03:40

मंगल - शुक्र - सूर्य	
10/02/2030 03:40	
03/03/2030 11:01	
सूर्य	11/02/2030 05:14
चंद्र	12/02/2030 23:50
मंगल	14/02/2030 05:40
राहु	17/02/2030 10:22
गुरु	20/02/2030 06:33
शनि	23/02/2030 15:31
बुध	26/02/2030 15:57
केतु	27/02/2030 21:47
शुक्र	03/03/2030 11:01

मंगल - शुक्र - चंद्र	
03/03/2030 11:01	
07/04/2030 23:16	
चंद्र	06/03/2030 10:02
मंगल	08/03/2030 11:45
राहु	13/03/2030 19:35
गुरु	18/03/2030 13:13
शनि	24/03/2030 04:09
बुध	29/03/2030 04:53
केतु	31/03/2030 06:36
शुक्र	06/04/2030 04:39
सूर्य	07/04/2030 23:16

मंगल - शुक्र - मंगल	
07/04/2030 23:16	
02/05/2030 19:50	
मंगल	09/04/2030 10:04
राहु	13/04/2030 03:33
गुरु	16/04/2030 11:05
शनि	20/04/2030 09:33
बुध	23/04/2030 22:04
केतु	25/04/2030 08:52
शुक्र	29/04/2030 12:17
सूर्य	30/04/2030 18:07
चंद्र	02/05/2030 19:50

मंगल - शुक्र - राहु	
02/05/2030 19:50	
05/07/2030 17:53	
राहु	12/05/2030 09:56
गुरु	20/05/2030 22:29
शनि	31/05/2030 01:22
बुध	09/06/2030 02:42
केतु	12/06/2030 20:11
शुक्र	23/06/2030 11:51
सूर्य	26/06/2030 16:34
चंद्र	02/07/2030 00:24
मंगल	05/07/2030 17:53

मंगल - शुक्र - गुरु	
05/07/2030 17:53	
31/08/2030 13:29	
गुरु	13/07/2030 07:42
शनि	22/07/2030 07:36
बुध	30/07/2030 08:47
केतु	02/08/2030 16:19
शुक्र	12/08/2030 03:35
सूर्य	14/08/2030 23:46
चंद्र	19/08/2030 17:24
मंगल	23/08/2030 00:57
राहु	31/08/2030 13:29

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - बुध - चंद्र	
13/12/2025 13:45	
18/12/2025 02:25	
चंद्र	13/12/2025 22:48
मंगल	14/12/2025 05:09
राहु	14/12/2025 21:27
गुरु	15/12/2025 11:56
शनि	16/12/2025 05:08
बुध	16/12/2025 20:32
केतु	17/12/2025 02:52
शुक्र	17/12/2025 20:59
सूर्य	18/12/2025 02:25

मंगल - राहु - बुध - मंगल	
18/12/2025 02:25	
21/12/2025 06:29	
मंगल	18/12/2025 06:51
राहु	18/12/2025 18:16
गुरु	19/12/2025 04:24
शनि	19/12/2025 16:27
बुध	20/12/2025 03:13
केतु	20/12/2025 07:39
शुक्र	20/12/2025 20:20
सूर्य	21/12/2025 00:08
चंद्र	21/12/2025 06:29

मंगल - राहु - बुध - राहु	
21/12/2025 06:29	
29/12/2025 10:04	
राहु	22/12/2025 11:49
गुरु	23/12/2025 13:54
शनि	24/12/2025 20:52
बुध	26/12/2025 00:34
केतु	26/12/2025 11:59
शुक्र	27/12/2025 20:35
सूर्य	28/12/2025 06:22
चंद्र	28/12/2025 22:39
मंगल	29/12/2025 10:04

मंगल - राहु - बुध - गुरु	
29/12/2025 10:04	
05/01/2026 15:56	
गुरु	30/12/2025 09:15
शनि	31/12/2025 12:47
बुध	01/01/2026 13:24
केतु	01/01/2026 23:33
शुक्र	03/01/2026 04:31
सूर्य	03/01/2026 13:13
चंद्र	04/01/2026 03:42
मंगल	04/01/2026 13:51
राहु	05/01/2026 15:56

मंगल - राहु - बुध - शनि	
05/01/2026 15:56	
14/01/2026 06:23	
शनि	07/01/2026 00:37
बुध	08/01/2026 05:52
केतु	08/01/2026 17:54
शुक्र	10/01/2026 04:19
सूर्य	10/01/2026 14:38
चंद्र	11/01/2026 07:51
मंगल	11/01/2026 19:53
राहु	13/01/2026 02:51
गुरु	14/01/2026 06:23

मंगल - राहु - केतु - केतु	
14/01/2026 06:23	
15/01/2026 13:42	
केतु	14/01/2026 08:13
शुक्र	14/01/2026 13:26
सूर्य	14/01/2026 15:00
चंद्र	14/01/2026 17:36
मंगल	14/01/2026 19:26
राहु	15/01/2026 00:08
गुरु	15/01/2026 04:18
शनि	15/01/2026 09:16
बुध	15/01/2026 13:42

मंगल - राहु - केतु - शुक्र	
15/01/2026 13:42	
19/01/2026 07:11	
शुक्र	16/01/2026 04:37
सूर्य	16/01/2026 09:06
चंद्र	16/01/2026 16:33
मंगल	16/01/2026 21:46
राहु	17/01/2026 11:12
गुरु	17/01/2026 23:07
शनि	18/01/2026 13:18
बुध	19/01/2026 01:58
केतु	19/01/2026 07:11

मंगल - राहु - केतु - सूर्य	
19/01/2026 07:11	
20/01/2026 10:02	
सूर्य	19/01/2026 08:32
चंद्र	19/01/2026 10:46
मंगल	19/01/2026 12:20
राहु	19/01/2026 16:22
गुरु	19/01/2026 19:57
शनि	20/01/2026 00:12
बुध	20/01/2026 04:00
केतु	20/01/2026 05:34
शुक्र	20/01/2026 10:02

मंगल - राहु - केतु - चंद्र	
20/01/2026 10:02	
22/01/2026 06:47	
चंद्र	20/01/2026 13:46
मंगल	20/01/2026 16:22
राहु	20/01/2026 23:05
गुरु	21/01/2026 05:03
शनि	21/01/2026 12:08
बुध	21/01/2026 18:28
केतु	21/01/2026 21:05
शुक्र	22/01/2026 04:33
सूर्य	22/01/2026 06:47

मंगल - राहु - केतु - मंगल	
22/01/2026 06:47	
23/01/2026 14:06	
मंगल	22/01/2026 08:36
राहु	22/01/2026 13:18
गुरु	22/01/2026 17:29
शनि	22/01/2026 22:26
बुध	23/01/2026 02:53
केतु	23/01/2026 04:42
शुक्र	23/01/2026 09:55
सूर्य	23/01/2026 11:29
चंद्र	23/01/2026 14:06

मंगल - राहु - केतु - राहु	
23/01/2026 14:06	
26/01/2026 22:38	
राहु	24/01/2026 02:11
गुरु	24/01/2026 12:55
शनि	25/01/2026 01:40
बुध	25/01/2026 13:05
केतु	25/01/2026 17:47
शुक्र	26/01/2026 07:12
सूर्य	26/01/2026 11:14
चंद्र	26/01/2026 17:56
मंगल	26/01/2026 22:38

मंगल - राहु - केतु - गुरु	
26/01/2026 22:38	
29/01/2026 22:14	
गुरु	27/01/2026 08:11
शनि	27/01/2026 19:31
बुध	28/01/2026 05:40
केतु	28/01/2026 09:50
शुक्र	28/01/2026 21:46
सूर्य	29/01/2026 01:21
चंद्र	29/01/2026 07:19
मंगल	29/01/2026 11:29
राहु	29/01/2026 22:14

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - केतु - शनि	
29/01/2026 22:14	
02/02/2026 11:14	
शनि	30/01/2026 11:41
बुध	30/01/2026 23:44
केतु	31/01/2026 04:41
शुक्र	31/01/2026 18:51
सूर्य	31/01/2026 23:06
चंद्र	01/02/2026 06:12
मंगल	01/02/2026 11:09
राहु	01/02/2026 23:54
गुरु	02/02/2026 11:14

मंगल - राहु - केतु - बुध	
02/02/2026 11:14	
05/02/2026 15:18	
बुध	02/02/2026 22:01
केतु	03/02/2026 02:27
शुक्र	03/02/2026 15:08
सूर्य	03/02/2026 18:56
चंद्र	04/02/2026 01:16
मंगल	04/02/2026 05:42
राहु	04/02/2026 17:07
गुरु	05/02/2026 03:15
शनि	05/02/2026 15:18

मंगल - राहु - शुक्र - शुक्र	
05/02/2026 15:18	
16/02/2026 06:59	
शुक्र	07/02/2026 09:55
सूर्य	07/02/2026 22:42
चंद्र	08/02/2026 20:00
मंगल	09/02/2026 10:55
राहु	11/02/2026 01:16
गुरु	12/02/2026 11:22
शनि	14/02/2026 03:50
बुध	15/02/2026 16:04
केतु	16/02/2026 06:59

मंगल - राहु - शुक्र - सूर्य	
16/02/2026 06:59	
19/02/2026 11:41	
सूर्य	16/02/2026 10:49
चंद्र	16/02/2026 17:12
मंगल	16/02/2026 21:41
राहु	17/02/2026 09:11
गुरु	17/02/2026 19:25
शनि	18/02/2026 07:33
बुध	18/02/2026 18:25
केतु	18/02/2026 22:54
शुक्र	19/02/2026 11:41

मंगल - राहु - शुक्र - चंद्र	
19/02/2026 11:41	
24/02/2026 19:31	
चंद्र	19/02/2026 22:20
मंगल	20/02/2026 05:47
राहु	21/02/2026 00:58
गुरु	21/02/2026 18:01
शनि	22/02/2026 14:15
बुध	23/02/2026 08:22
केतु	23/02/2026 15:49
शुक्र	24/02/2026 13:07
सूर्य	24/02/2026 19:31

मंगल - राहु - शुक्र - मंगल	
24/02/2026 19:31	
28/02/2026 13:00	
मंगल	25/02/2026 00:44
राहु	25/02/2026 14:10
गुरु	26/02/2026 02:05
शनि	26/02/2026 16:16
बुध	27/02/2026 04:56
केतु	27/02/2026 10:09
शुक्र	28/02/2026 01:04
सूर्य	28/02/2026 05:33
चंद्र	28/02/2026 13:00

मंगल - राहु - शुक्र - राहु	
28/02/2026 13:00	
10/03/2026 03:07	
राहु	01/03/2026 23:31
गुरु	03/03/2026 06:12
शनि	04/03/2026 18:38
बुध	06/03/2026 03:14
केतु	06/03/2026 16:39
शुक्र	08/03/2026 07:00
सूर्य	08/03/2026 18:31
चंद्र	09/03/2026 13:41
मंगल	10/03/2026 03:07

मंगल - राहु - शुक्र - गुरु	
10/03/2026 03:07	
18/03/2026 15:39	
गुरु	11/03/2026 06:23
शनि	12/03/2026 14:46
बुध	13/03/2026 19:45
केतु	14/03/2026 07:41
शुक्र	15/03/2026 17:46
सूर्य	16/03/2026 04:00
चंद्र	16/03/2026 21:02
मंगल	17/03/2026 08:58
राहु	18/03/2026 15:39

मंगल - राहु - शुक्र - शनि	
18/03/2026 15:39	
28/03/2026 18:32	
शनि	20/03/2026 06:06
बुध	21/03/2026 16:31
केतु	22/03/2026 06:41
शुक्र	23/03/2026 23:10
सूर्य	24/03/2026 11:19
चंद्र	25/03/2026 07:33
मंगल	25/03/2026 21:43
राहु	27/03/2026 10:09
गुरु	28/03/2026 18:32

मंगल - राहु - शुक्र - बुध	
28/03/2026 18:32	
06/04/2026 19:52	
बुध	30/03/2026 01:20
केतु	30/03/2026 14:00
शुक्र	01/04/2026 02:14
सूर्य	01/04/2026 13:06
चंद्र	02/04/2026 07:12
मंगल	02/04/2026 19:53
राहु	04/04/2026 04:29
गुरु	05/04/2026 09:27
शनि	06/04/2026 19:52

मंगल - राहु - शुक्र - केतु	
06/04/2026 19:52	
10/04/2026 13:21	
केतु	07/04/2026 01:05
शुक्र	07/04/2026 16:00
सूर्य	07/04/2026 20:28
चंद्र	08/04/2026 03:56
मंगल	08/04/2026 09:09
राहु	08/04/2026 22:34
गुरु	09/04/2026 10:30
शनि	10/04/2026 00:40
बुध	10/04/2026 13:21

मंगल - राहु - सूर्य - सूर्य	
10/04/2026 13:21	
11/04/2026 12:22	
सूर्य	10/04/2026 14:30
चंद्र	10/04/2026 16:25
मंगल	10/04/2026 17:46
राहु	10/04/2026 21:13
गुरु	11/04/2026 00:17
शनि	11/04/2026 03:55
बुध	11/04/2026 07:11
केतु	11/04/2026 08:32
शुक्र	11/04/2026 12:22

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 11 मास 22 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
30/04/1963		21/04/1964		21/04/1976		22/04/1989		22/04/2003	
21/04/1964		21/04/1976		22/04/1989		22/04/2003		22/04/2018	
	00/00/0000	मंगल	19/07/1965	गुरु	05/10/1977	शनि	30/12/1990	केतु	30/03/2005
	00/00/0000	गुरु	22/11/1966	शनि	01/05/1979	केतु	21/10/1992	चंद्र	25/04/2007
	00/00/0000	शनि	04/05/1968	केतु	04/01/1981	चंद्र	26/09/1994	बुध	06/07/2009
	00/00/0000	केतु	22/11/1969	चंद्र	21/10/1982	बुध	15/10/1996	शुक्र	03/11/2011
	00/00/0000	चंद्र	19/07/1971	बुध	16/09/1984	शुक्र	17/12/1998	सूर्य	06/04/2013
	00/00/0000	बुध	22/04/1973	शुक्र	23/09/1986	सूर्य	15/04/2000	मंगल	25/10/2014
	30/04/1963	शुक्र	03/03/1975	सूर्य	17/12/1987	मंगल	26/09/2001	गुरु	30/06/2016
शुक्र	21/04/1964	सूर्य	21/04/1976	मंगल	22/04/1989	गुरु	22/04/2003	शनि	22/04/2018

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
22/04/2018		22/04/2034		22/04/2051		22/04/2069	
22/04/2034		22/04/2051		22/04/2069		30/04/2079	
चंद्र	06/07/2020	बुध	18/10/2036	शुक्र	05/02/2054	सूर्य	08/05/2070
बुध	09/11/2022	शुक्र	08/06/2039	सूर्य	22/10/2055	मंगल	27/06/2071
शुक्र	04/05/2025	सूर्य	17/01/2041	मंगल	01/09/2057	गुरु	19/09/2072
सूर्य	09/11/2026	मंगल	21/10/2042	गुरु	08/09/2059	शनि	17/01/2074
मंगल	06/07/2028	गुरु	16/09/2044	शनि	09/11/2061	केतु	21/06/2075
गुरु	22/04/2030	शनि	06/10/2046	केतु	08/03/2064	चंद्र	26/12/2076
शनि	27/03/2032	केतु	17/12/2048	चंद्र	01/09/2066	बुध	07/08/2078
केतु	22/04/2034	चंद्र	22/04/2051	बुध	22/04/2069	शुक्र	30/04/2079

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र	
30/04/1963	
21/04/1964	
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/04/1963
गुरु	24/05/1963
शनि	07/08/1963
केतु	27/10/1963
चंद्र	21/01/1964
बुध	21/04/1964

मंगल - मंगल	
21/04/1964	
19/07/1965	
मंगल	07/06/1964
गुरु	28/07/1964
शनि	21/09/1964
केतु	18/11/1964
चंद्र	20/01/1965
बुध	27/03/1965
शुक्र	06/06/1965
सूर्य	19/07/1965

मंगल - गुरु	
19/07/1965	
22/11/1966	
गुरु	12/09/1965
शनि	10/11/1965
केतु	13/01/1966
चंद्र	21/03/1966
बुध	01/06/1966
शुक्र	17/08/1966
सूर्य	02/10/1966
मंगल	22/11/1966

मंगल - शनि	
22/11/1966	
04/05/1968	
शनि	25/01/1967
केतु	03/04/1967
चंद्र	15/06/1967
बुध	01/09/1967
शुक्र	22/11/1967
सूर्य	11/01/1968
मंगल	06/03/1968
गुरु	04/05/1968

मंगल - केतु	
04/05/1968	
22/11/1969	
केतु	16/07/1968
चंद्र	02/10/1968
बुध	24/12/1968
शुक्र	22/03/1969
सूर्य	15/05/1969
मंगल	13/07/1969
गुरु	14/09/1969
शनि	22/11/1969

मंगल - चंद्र	
22/11/1969	
19/07/1971	
चंद्र	13/02/1970
बुध	13/05/1970
शुक्र	14/08/1970
सूर्य	11/10/1970
मंगल	12/12/1970
गुरु	18/02/1971
शनि	02/05/1971
केतु	19/07/1971

मंगल - बुध	
19/07/1971	
22/04/1973	
बुध	21/10/1971
शुक्र	29/01/1972
सूर्य	30/03/1972
मंगल	04/06/1972
गुरु	15/08/1972
शनि	01/11/1972
केतु	23/01/1973
चंद्र	22/04/1973

मंगल - शुक्र	
22/04/1973	
03/03/1975	
शुक्र	05/08/1973
सूर्य	09/10/1973
मंगल	18/12/1973
गुरु	04/03/1974
शनि	25/05/1974
केतु	21/08/1974
चंद्र	23/11/1974
बुध	03/03/1975

मंगल - सूर्य	
03/03/1975	
21/04/1976	
सूर्य	11/04/1975
मंगल	24/05/1975
गुरु	10/07/1975
शनि	29/08/1975
केतु	22/10/1975
चंद्र	18/12/1975
बुध	17/02/1976
शुक्र	21/04/1976

गुरु - गुरु	
21/04/1976	
05/10/1977	
गुरु	20/06/1976
शनि	23/08/1976
केतु	31/10/1976
चंद्र	12/01/1977
बुध	31/03/1977
शुक्र	22/06/1977
सूर्य	11/08/1977
मंगल	05/10/1977

गुरु - शनि	
05/10/1977	
01/05/1979	
शनि	14/12/1977
केतु	26/02/1978
चंद्र	16/05/1978
बुध	08/08/1978
शुक्र	05/11/1978
सूर्य	29/12/1978
मंगल	26/02/1979
गुरु	01/05/1979

गुरु - केतु	
01/05/1979	
04/01/1981	
केतु	20/07/1979
चंद्र	13/10/1979
बुध	11/01/1980
शुक्र	15/04/1980
सूर्य	12/06/1980
मंगल	15/08/1980
गुरु	22/10/1980
शनि	04/01/1981

गुरु - चंद्र	
04/01/1981	
21/10/1982	
चंद्र	05/04/1981
बुध	10/07/1981
शुक्र	19/10/1981
सूर्य	21/12/1981
मंगल	26/02/1982
गुरु	11/05/1982
शनि	29/07/1982
केतु	21/10/1982

गुरु - बुध	
21/10/1982	
16/09/1984	
बुध	31/01/1983
शुक्र	19/05/1983
सूर्य	24/07/1983
मंगल	04/10/1983
गुरु	21/12/1983
शनि	14/03/1984
केतु	12/06/1984
चंद्र	16/09/1984

गुरु - शुक्र	
16/09/1984	
23/09/1986	
शुक्र	09/01/1985
सूर्य	19/03/1985
मंगल	04/06/1985
गुरु	25/08/1985
शनि	22/11/1985
केतु	25/02/1986
चंद्र	07/06/1986
बुध	23/09/1986

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
23/09/1986		17/12/1987		22/04/1989		30/12/1990		21/10/1992	
17/12/1987		22/04/1989		30/12/1990		21/10/1992		26/09/1994	
सूर्य	05/11/1986	मंगल	06/02/1988	शनि	05/07/1989	केतु	25/03/1991	चंद्र	26/01/1993
मंगल	21/12/1986	गुरु	01/04/1988	केतु	23/09/1989	चंद्र	24/06/1991	बुध	10/05/1993
गुरु	10/02/1987	शनि	30/05/1988	चंद्र	17/12/1989	बुध	29/09/1991	शुक्र	27/08/1993
शनि	05/04/1987	केतु	02/08/1988	बुध	17/03/1990	शुक्र	10/01/1992	सूर्य	02/11/1993
केतु	02/06/1987	चंद्र	09/10/1988	शुक्र	21/06/1990	सूर्य	13/03/1992	मंगल	14/01/1994
चंद्र	03/08/1987	बुध	20/12/1988	सूर्य	19/08/1990	मंगल	20/05/1992	गुरु	03/04/1994
बुध	08/10/1987	शुक्र	06/03/1989	मंगल	22/10/1990	गुरु	02/08/1992	शनि	27/06/1994
शुक्र	17/12/1987	सूर्य	22/04/1989	गुरु	30/12/1990	शनि	21/10/1992	केतु	26/09/1994

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
26/09/1994		15/10/1996		17/12/1998		15/04/2000		26/09/2001	
15/10/1996		17/12/1998		15/04/2000		26/09/2001		22/04/2003	
बुध	14/01/1995	शुक्र	15/02/1997	सूर्य	01/02/1999	मंगल	09/06/2000	गुरु	29/11/2001
शुक्र	10/05/1995	सूर्य	01/05/1997	मंगल	23/03/1999	गुरु	07/08/2000	शनि	06/02/2002
सूर्य	20/07/1995	मंगल	22/07/1997	गुरु	17/05/1999	शनि	10/10/2000	केतु	21/04/2002
मंगल	06/10/1995	गुरु	19/10/1997	शनि	14/07/1999	केतु	17/12/2000	चंद्र	10/07/2002
गुरु	29/12/1995	शनि	23/01/1998	केतु	15/09/1999	चंद्र	28/02/2001	बुध	01/10/2002
शनि	28/03/1996	केतु	05/05/1998	चंद्र	21/11/1999	बुध	17/05/2001	शुक्र	29/12/2002
केतु	03/07/1996	चंद्र	23/08/1998	बुध	31/01/2000	शुक्र	07/08/2001	सूर्य	22/02/2003
चंद्र	15/10/1996	बुध	17/12/1998	शुक्र	15/04/2000	सूर्य	26/09/2001	मंगल	22/04/2003

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
22/04/2003		30/03/2005		25/04/2007		06/07/2009		03/11/2011	
30/03/2005		25/04/2007		06/07/2009		03/11/2011		06/04/2013	
केतु	23/07/2003	चंद्र	13/07/2005	बुध	21/08/2007	शुक्र	15/11/2009	सूर्य	23/12/2011
चंद्र	28/10/2003	बुध	31/10/2005	शुक्र	23/12/2007	सूर्य	04/02/2010	मंगल	14/02/2012
बुध	09/02/2004	शुक्र	26/02/2006	सूर्य	09/03/2008	मंगल	03/05/2010	गुरु	12/04/2012
शुक्र	29/05/2004	सूर्य	08/05/2006	मंगल	31/05/2008	गुरु	06/08/2010	शनि	14/06/2012
सूर्य	04/08/2004	मंगल	26/07/2006	गुरु	29/08/2008	शनि	16/11/2010	केतु	20/08/2012
मंगल	17/10/2004	गुरु	18/10/2006	शनि	04/12/2008	केतु	06/03/2011	चंद्र	31/10/2012
गुरु	04/01/2005	शनि	17/01/2007	केतु	17/03/2009	चंद्र	02/07/2011	बुध	15/01/2013
शनि	30/03/2005	केतु	25/04/2007	चंद्र	06/07/2009	बुध	03/11/2011	शुक्र	06/04/2013

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
06/04/2013		25/10/2014		30/06/2016		22/04/2018		06/07/2020	
25/10/2014		30/06/2016		22/04/2018		06/07/2020		09/11/2022	
मंगल	03/06/2013	गुरु	01/01/2015	शनि	17/09/2016	चंद्र	11/08/2018	बुध	08/11/2020
गुरु	06/08/2013	शनि	16/03/2015	केतु	12/12/2016	बुध	07/12/2018	शुक्र	21/03/2021
शनि	13/10/2013	केतु	04/06/2015	चंद्र	13/03/2017	शुक्र	11/04/2019	सूर्य	10/06/2021
केतु	26/12/2013	चंद्र	28/08/2015	बुध	18/06/2017	सूर्य	27/06/2019	मंगल	07/09/2021
चंद्र	14/03/2014	बुध	26/11/2015	शुक्र	29/09/2017	मंगल	18/09/2019	गुरु	12/12/2021
बुध	05/06/2014	शुक्र	29/02/2016	सूर्य	30/11/2017	गुरु	17/12/2019	शनि	25/03/2022
शुक्र	01/09/2014	सूर्य	27/04/2016	मंगल	07/02/2018	शनि	24/03/2020	केतु	14/07/2022
सूर्य	25/10/2014	मंगल	30/06/2016	गुरु	22/04/2018	केतु	06/07/2020	चंद्र	09/11/2022

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
09/11/2022		04/05/2025		09/11/2026		06/07/2028		22/04/2030	
04/05/2025		09/11/2026		06/07/2028		22/04/2030		27/03/2032	
शुक्र	30/03/2023	सूर्य	26/06/2025	मंगल	11/01/2027	गुरु	17/09/2028	शनि	16/07/2030
सूर्य	24/06/2023	मंगल	22/08/2025	गुरु	20/03/2027	शनि	05/12/2028	केतु	15/10/2030
मंगल	26/09/2023	गुरु	23/10/2025	शनि	01/06/2027	केतु	28/02/2029	चंद्र	20/01/2031
गुरु	05/01/2024	शनि	29/12/2025	केतु	18/08/2027	चंद्र	29/05/2029	बुध	04/05/2031
शनि	24/04/2024	केतु	11/03/2026	चंद्र	09/11/2027	बुध	02/09/2029	शुक्र	21/08/2031
केतु	19/08/2024	चंद्र	26/05/2026	बुध	06/02/2028	शुक्र	13/12/2029	सूर्य	27/10/2031
चंद्र	22/12/2024	बुध	15/08/2026	शुक्र	10/05/2028	सूर्य	13/02/2030	मंगल	08/01/2032
बुध	04/05/2025	शुक्र	09/11/2026	सूर्य	06/07/2028	मंगल	22/04/2030	गुरु	27/03/2032

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
27/03/2032		22/04/2034		18/10/2036		08/06/2039		17/01/2041	
22/04/2034		18/10/2036		08/06/2039		17/01/2041		21/10/2042	
केतु	03/07/2032	बुध	02/09/2034	शुक्र	16/03/2037	सूर्य	03/08/2039	मंगल	25/03/2041
चंद्र	15/10/2032	शुक्र	21/01/2035	सूर्य	16/06/2037	मंगल	03/10/2039	गुरु	05/06/2041
बुध	03/02/2033	सूर्य	18/04/2035	मंगल	23/09/2037	गुरु	08/12/2039	शनि	21/08/2041
शुक्र	31/05/2033	मंगल	21/07/2035	गुरु	09/01/2038	शनि	17/02/2040	केतु	12/11/2041
सूर्य	11/08/2033	गुरु	31/10/2035	शनि	06/05/2038	केतु	03/05/2040	चंद्र	09/02/2042
मंगल	28/10/2033	शनि	18/02/2036	केतु	07/09/2038	चंद्र	23/07/2040	बुध	14/05/2042
गुरु	21/01/2034	केतु	14/06/2036	चंद्र	18/01/2039	बुध	18/10/2040	शुक्र	21/08/2042
शनि	22/04/2034	चंद्र	18/10/2036	बुध	08/06/2039	शुक्र	17/01/2041	सूर्य	21/10/2042

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
21/10/2042		16/09/2044		06/10/2046		17/12/2048		22/04/2051	
16/09/2044		06/10/2046		17/12/2048		22/04/2051		05/02/2054	
गुरु	07/01/2043	शनि	16/12/2044	केतु	17/01/2047	चंद्र	14/04/2049	शुक्र	27/09/2051
शनि	01/04/2043	केतु	23/03/2045	चंद्र	08/05/2047	बुध	17/08/2049	सूर्य	02/01/2052
केतु	30/06/2043	चंद्र	04/07/2045	बुध	03/09/2047	शुक्र	28/12/2049	मंगल	17/04/2052
चंद्र	04/10/2043	बुध	22/10/2045	शुक्र	05/01/2048	सूर्य	19/03/2050	गुरु	09/08/2052
बुध	14/01/2044	शुक्र	15/02/2046	सूर्य	22/03/2048	मंगल	16/06/2050	शनि	10/12/2052
शुक्र	01/05/2044	सूर्य	27/04/2046	मंगल	13/06/2048	गुरु	20/09/2050	केतु	21/04/2053
सूर्य	06/07/2044	मंगल	14/07/2046	गुरु	11/09/2048	शनि	01/01/2051	चंद्र	09/09/2053
मंगल	16/09/2044	गुरु	06/10/2046	शनि	17/12/2048	केतु	22/04/2051	बुध	05/02/2054

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
05/02/2054		22/10/2055		01/09/2057		08/09/2059		09/11/2061	
22/10/2055		01/09/2057		08/09/2059		09/11/2061		08/03/2064	
सूर्य	05/04/2054	मंगल	31/12/2055	गुरु	22/11/2057	शनि	12/12/2059	केतु	27/02/2062
मंगल	09/06/2054	गुरु	16/03/2056	शनि	19/02/2058	केतु	24/03/2060	चंद्र	24/06/2062
गुरु	18/08/2054	शनि	06/06/2056	केतु	26/05/2058	चंद्र	11/07/2060	बुध	27/10/2062
शनि	01/11/2054	केतु	02/09/2056	चंद्र	04/09/2058	बुध	05/11/2060	शुक्र	08/03/2063
केतु	21/01/2055	चंद्र	05/12/2056	बुध	21/12/2058	शुक्र	08/03/2061	सूर्य	27/05/2063
चंद्र	17/04/2055	बुध	15/03/2057	शुक्र	14/04/2059	सूर्य	22/05/2061	मंगल	23/08/2063
बुध	17/07/2055	शुक्र	28/06/2057	सूर्य	23/06/2059	मंगल	12/08/2061	गुरु	27/11/2063
शुक्र	22/10/2055	सूर्य	01/09/2057	मंगल	08/09/2059	गुरु	09/11/2061	शनि	08/03/2064

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
08/03/2064		01/09/2066		22/04/2069		08/05/2070		27/06/2071	
01/09/2066		22/04/2069		08/05/2070		27/06/2071		19/09/2072	
चंद्र	11/07/2064	बुध	20/01/2067	सूर्य	28/05/2069	मंगल	20/06/2070	गुरु	17/08/2071
बुध	21/11/2064	शुक्र	19/06/2067	मंगल	06/07/2069	गुरु	05/08/2070	शनि	10/10/2071
शुक्र	11/04/2065	सूर्य	18/09/2067	गुरु	18/08/2069	शनि	24/09/2070	केतु	07/12/2071
सूर्य	06/07/2065	मंगल	27/12/2067	शनि	03/10/2069	केतु	17/11/2070	चंद्र	07/02/2072
मंगल	08/10/2065	गुरु	13/04/2068	केतु	21/11/2069	चंद्र	13/01/2071	बुध	13/04/2072
गुरु	17/01/2066	शनि	07/08/2068	चंद्र	13/01/2070	बुध	15/03/2071	शुक्र	22/06/2072
शनि	07/05/2066	केतु	10/12/2068	बुध	09/03/2070	शुक्र	19/05/2071	सूर्य	04/08/2072
केतु	01/09/2066	चंद्र	22/04/2069	शुक्र	08/05/2070	सूर्य	27/06/2071	मंगल	19/09/2072

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 1 मास 15 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
30/04/1963		14/06/1964		15/10/1975		14/06/1980		14/10/1993	
14/06/1964		15/10/1975		14/06/1980		14/10/1993		14/10/1997	
	00/00/0000	बुध	22/01/1966	केतु	22/01/1976	शुक्र	04/09/1982	सूर्य	26/12/1993
	00/00/0000	केतु	20/09/1966	शुक्र	01/11/1976	सूर्य	06/05/1983	चंद्र	27/04/1994
	00/00/0000	शुक्र	10/08/1968	सूर्य	26/01/1977	चंद्र	14/06/1984	मंगल	21/07/1994
	00/00/0000	सूर्य	05/03/1969	चंद्र	17/06/1977	मंगल	25/03/1985	राहु	26/02/1995
	00/00/0000	चंद्र	13/02/1970	मंगल	24/09/1977	राहु	26/03/1987	गुरु	08/09/1995
	00/00/0000	मंगल	13/10/1970	राहु	07/06/1978	गुरु	03/01/1989	शनि	27/04/1996
	00/00/0000	राहु	25/06/1972	गुरु	20/01/1979	शनि	13/02/1991	बुध	20/11/1996
	30/04/1963	गुरु	28/12/1973	शनि	17/10/1979	बुध	03/01/1993	केतु	13/02/1997
गुरु	14/06/1964	शनि	15/10/1975	बुध	14/06/1980	केतु	14/10/1993	शुक्र	14/10/1997

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
14/10/1997		14/06/2004		13/02/2009		13/02/2021		15/10/2031	
14/06/2004		13/02/2009		13/02/2021		15/10/2031		30/04/2043	
चंद्र	05/05/1998	मंगल	22/09/2004	राहु	02/12/2010	गुरु	17/07/2022	शनि	16/10/2033
मंगल	24/09/1998	राहु	04/06/2005	गुरु	09/07/2012	शनि	25/03/2024	बुध	03/08/2035
राहु	25/09/1999	गुरु	18/01/2006	शनि	03/06/2014	बुध	28/09/2025	केतु	29/04/2036
गुरु	14/08/2000	शनि	15/10/2006	बुध	14/02/2016	केतु	13/05/2026	शुक्र	09/06/2038
शनि	04/09/2001	बुध	13/06/2007	केतु	26/10/2016	शुक्र	22/02/2028	सूर्य	26/01/2039
बुध	15/08/2002	केतु	21/09/2007	शुक्र	27/10/2018	सूर्य	04/09/2028	चंद्र	16/02/2040
केतु	04/01/2003	शुक्र	01/07/2008	सूर्य	03/06/2019	चंद्र	25/07/2029	मंगल	12/11/2040
शुक्र	14/02/2004	सूर्य	24/09/2008	चंद्र	02/06/2020	मंगल	09/03/2030	राहु	07/10/2042
सूर्य	14/06/2004	चंद्र	13/02/2009	मंगल	13/02/2021	राहु	15/10/2031	गुरु	30/04/2043

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
30/04/1963		14/06/1964		22/01/1966		20/09/1966		10/08/1968	
14/06/1964		22/01/1966		20/09/1966		10/08/1968		05/03/1969	
	00/00/0000	बुध	05/09/1964	केतु	05/02/1966	शुक्र	13/01/1967	सूर्य	21/08/1968
	30/04/1963	केतु	10/10/1964	शुक्र	17/03/1966	सूर्य	17/02/1967	चंद्र	07/09/1968
बुध	01/07/1963	शुक्र	15/01/1965	सूर्य	29/03/1966	चंद्र	15/04/1967	मंगल	19/09/1968
केतु	06/08/1963	सूर्य	14/02/1965	चंद्र	18/04/1966	मंगल	25/05/1967	राहु	20/10/1968
शुक्र	17/11/1963	चंद्र	04/04/1965	मंगल	02/05/1966	राहु	06/09/1967	गुरु	17/11/1968
सूर्य	17/12/1963	मंगल	08/05/1965	राहु	08/06/1966	गुरु	07/12/1967	शनि	19/12/1968
चंद्र	07/02/1964	राहु	04/08/1965	गुरु	10/07/1966	शनि	25/03/1968	बुध	18/01/1969
मंगल	14/03/1964	गुरु	21/10/1965	शनि	17/08/1966	बुध	01/07/1968	केतु	30/01/1969
राहु	14/06/1964	शनि	22/01/1966	बुध	20/09/1966	केतु	10/08/1968	शुक्र	05/03/1969

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
05/03/1969		13/02/1970		13/10/1970		25/06/1972		28/12/1973	
13/02/1970		13/10/1970		25/06/1972		28/12/1973		15/10/1975	
चंद्र	03/04/1969	मंगल	27/02/1970	राहु	14/01/1971	गुरु	06/09/1972	शनि	11/04/1974
मंगल	23/04/1969	राहु	04/04/1970	गुरु	07/04/1971	शनि	02/12/1972	बुध	13/07/1974
राहु	14/06/1969	गुरु	07/05/1970	शनि	14/07/1971	बुध	19/02/1973	केतु	20/08/1974
गुरु	30/07/1969	शनि	14/06/1970	बुध	10/10/1971	केतु	23/03/1973	शुक्र	08/12/1974
शनि	22/09/1969	बुध	18/07/1970	केतु	15/11/1971	शुक्र	23/06/1973	सूर्य	09/01/1975
बुध	10/11/1969	केतु	01/08/1970	शुक्र	27/02/1972	सूर्य	20/07/1973	चंद्र	05/03/1975
केतु	30/11/1969	शुक्र	10/09/1970	सूर्य	29/03/1972	चंद्र	04/09/1973	मंगल	12/04/1975
शुक्र	27/01/1970	सूर्य	22/09/1970	चंद्र	19/05/1972	मंगल	07/10/1973	राहु	19/07/1975
सूर्य	13/02/1970	चंद्र	13/10/1970	मंगल	25/06/1972	राहु	28/12/1973	गुरु	15/10/1975

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
15/10/1975		22/01/1976		01/11/1976		26/01/1977		17/06/1977	
22/01/1976		01/11/1976		26/01/1977		17/06/1977		24/09/1977	
केतु	21/10/1975	शुक्र	10/03/1976	सूर्य	06/11/1976	चंद्र	06/02/1977	मंगल	22/06/1977
शुक्र	06/11/1975	सूर्य	24/03/1976	चंद्र	13/11/1976	मंगल	15/02/1977	राहु	07/07/1977
सूर्य	11/11/1975	चंद्र	17/04/1976	मंगल	18/11/1976	राहु	08/03/1977	गुरु	21/07/1977
चंद्र	20/11/1975	मंगल	03/05/1976	राहु	01/12/1976	गुरु	27/03/1977	शनि	05/08/1977
मंगल	25/11/1975	राहु	15/06/1976	गुरु	12/12/1976	शनि	18/04/1977	बुध	19/08/1977
राहु	10/12/1975	गुरु	23/07/1976	शनि	25/12/1976	बुध	09/05/1977	केतु	25/08/1977
गुरु	23/12/1975	शनि	06/09/1976	बुध	06/01/1977	केतु	17/05/1977	शुक्र	11/09/1977
शनि	08/01/1976	बुध	16/10/1976	केतु	11/01/1977	शुक्र	10/06/1977	सूर्य	16/09/1977
बुध	22/01/1976	केतु	01/11/1976	शुक्र	26/01/1977	सूर्य	17/06/1977	चंद्र	24/09/1977

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
24/09/1977		07/06/1978		20/01/1979		17/10/1979		14/06/1980	
07/06/1978		20/01/1979		17/10/1979		14/06/1980		04/09/1982	
राहु	01/11/1977	गुरु	07/07/1978	शनि	04/03/1979	बुध	20/11/1979	शुक्र	28/10/1980
गुरु	06/12/1977	शनि	12/08/1978	बुध	11/04/1979	केतु	04/12/1979	सूर्य	07/12/1980
शनि	15/01/1978	बुध	13/09/1978	केतु	27/04/1979	शुक्र	13/01/1980	चंद्र	13/02/1981
बुध	20/02/1978	केतु	26/09/1978	शुक्र	11/06/1979	सूर्य	26/01/1980	मंगल	01/04/1981
केतु	07/03/1978	शुक्र	03/11/1978	सूर्य	24/06/1979	चंद्र	15/02/1980	राहु	01/08/1981
शुक्र	19/04/1978	सूर्य	15/11/1978	चंद्र	17/07/1979	मंगल	29/02/1980	गुरु	17/11/1981
सूर्य	02/05/1978	चंद्र	04/12/1978	मंगल	01/08/1979	राहु	05/04/1980	शनि	26/03/1982
चंद्र	23/05/1978	मंगल	17/12/1978	राहु	11/09/1979	गुरु	07/05/1980	बुध	19/07/1982
मंगल	07/06/1978	राहु	20/01/1979	गुरु	17/10/1979	शनि	14/06/1980	केतु	04/09/1982

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
04/09/1982		06/05/1983		14/06/1984		25/03/1985		26/03/1987	
06/05/1983		14/06/1984		25/03/1985		26/03/1987		03/01/1989	
सूर्य	16/09/1982	चंद्र	08/06/1983	मंगल	01/07/1984	राहु	13/07/1985	गुरु	21/06/1987
चंद्र	07/10/1982	मंगल	02/07/1983	राहु	13/08/1984	गुरु	18/10/1985	शनि	01/10/1987
मंगल	21/10/1982	राहु	01/09/1983	गुरु	19/09/1984	शनि	11/02/1986	बुध	01/01/1988
राहु	26/11/1982	गुरु	25/10/1983	शनि	03/11/1984	बुध	26/05/1986	केतु	08/02/1988
गुरु	29/12/1982	शनि	28/12/1983	बुध	14/12/1984	केतु	07/07/1986	शुक्र	26/05/1988
शनि	05/02/1983	बुध	24/02/1984	केतु	30/12/1984	शुक्र	06/11/1986	सूर्य	28/06/1988
बुध	12/03/1983	केतु	18/03/1984	शुक्र	16/02/1985	सूर्य	12/12/1986	चंद्र	21/08/1988
केतु	26/03/1983	शुक्र	25/05/1984	सूर्य	02/03/1985	चंद्र	11/02/1987	मंगल	28/09/1988
शुक्र	06/05/1983	सूर्य	14/06/1984	चंद्र	25/03/1985	मंगल	26/03/1987	राहु	03/01/1989

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
03/01/1989		13/02/1991		03/01/1993		14/10/1993		26/12/1993	
13/02/1991		03/01/1993		14/10/1993		26/12/1993		27/04/1994	
शनि	05/05/1989	बुध	22/05/1991	केतु	20/01/1993	सूर्य	18/10/1993	चंद्र	06/01/1994
बुध	23/08/1989	केतु	01/07/1991	शुक्र	08/03/1993	चंद्र	24/10/1993	मंगल	13/01/1994
केतु	07/10/1989	शुक्र	24/10/1991	सूर्य	22/03/1993	मंगल	28/10/1993	राहु	31/01/1994
शुक्र	12/02/1990	सूर्य	28/11/1991	चंद्र	15/04/1993	राहु	08/11/1993	गुरु	16/02/1994
सूर्य	23/03/1990	चंद्र	24/01/1992	मंगल	02/05/1993	गुरु	18/11/1993	शनि	07/03/1994
चंद्र	26/05/1990	मंगल	05/03/1992	राहु	13/06/1993	शनि	30/11/1993	बुध	25/03/1994
मंगल	10/07/1990	राहु	16/06/1992	गुरु	21/07/1993	बुध	10/12/1993	केतु	01/04/1994
राहु	03/11/1990	गुरु	16/09/1992	शनि	04/09/1993	केतु	14/12/1993	शुक्र	21/04/1994
गुरु	13/02/1991	शनि	03/01/1993	बुध	14/10/1993	शुक्र	26/12/1993	सूर्य	27/04/1994

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
27/04/1994		21/07/1994		26/02/1995		08/09/1995		27/04/1996	
21/07/1994		26/02/1995		08/09/1995		27/04/1996		20/11/1996	
मंगल	02/05/1994	राहु	23/08/1994	गुरु	24/03/1995	शनि	15/10/1995	बुध	26/05/1996
राहु	15/05/1994	गुरु	21/09/1994	शनि	23/04/1995	बुध	17/11/1995	केतु	07/06/1996
गुरु	26/05/1994	शनि	26/10/1994	बुध	21/05/1995	केतु	30/11/1995	शुक्र	12/07/1996
शनि	09/06/1994	बुध	26/11/1994	केतु	01/06/1995	शुक्र	08/01/1996	सूर्य	22/07/1996
बुध	21/06/1994	केतु	09/12/1994	शुक्र	04/07/1995	सूर्य	19/01/1996	चंद्र	08/08/1996
केतु	26/06/1994	शुक्र	15/01/1995	सूर्य	14/07/1995	चंद्र	08/02/1996	मंगल	20/08/1996
शुक्र	10/07/1994	सूर्य	26/01/1995	चंद्र	30/07/1995	मंगल	21/02/1996	राहु	20/09/1996
सूर्य	14/07/1994	चंद्र	13/02/1995	मंगल	10/08/1995	राहु	27/03/1996	गुरु	18/10/1996
चंद्र	21/07/1994	मंगल	26/02/1995	राहु	08/09/1995	गुरु	27/04/1996	शनि	20/11/1996

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
20/11/1996		13/02/1997		14/10/1997		05/05/1998		24/09/1998	
13/02/1997		14/10/1997		05/05/1998		24/09/1998		25/09/1999	
केतु	25/11/1996	शुक्र	25/03/1997	चंद्र	31/10/1997	मंगल	14/05/1998	राहु	18/11/1998
शुक्र	09/12/1996	सूर्य	07/04/1997	मंगल	12/11/1997	राहु	04/06/1998	गुरु	06/01/1999
सूर्य	13/12/1996	चंद्र	27/04/1997	राहु	13/12/1997	गुरु	23/06/1998	शनि	05/03/1999
चंद्र	20/12/1996	मंगल	11/05/1997	गुरु	09/01/1998	शनि	15/07/1998	बुध	25/04/1999
मंगल	25/12/1996	राहु	17/06/1997	शनि	10/02/1998	बुध	04/08/1998	केतु	17/05/1999
राहु	07/01/1997	गुरु	19/07/1997	बुध	10/03/1998	केतु	13/08/1998	शुक्र	17/07/1999
गुरु	18/01/1997	शनि	27/08/1997	केतु	22/03/1998	शुक्र	05/09/1998	सूर्य	04/08/1999
शनि	01/02/1997	बुध	30/09/1997	शुक्र	25/04/1998	सूर्य	12/09/1998	चंद्र	03/09/1999
बुध	13/02/1997	केतु	14/10/1997	सूर्य	05/05/1998	चंद्र	24/09/1998	मंगल	25/09/1999

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
25/09/1999		14/08/2000		04/09/2001		15/08/2002		04/01/2003	
14/08/2000		04/09/2001		15/08/2002		04/01/2003		14/02/2004	
गुरु	07/11/1999	शनि	14/10/2000	बुध	23/10/2001	केतु	23/08/2002	शुक्र	12/03/2003
शनि	28/12/1999	बुध	08/12/2000	केतु	12/11/2001	शुक्र	16/09/2002	सूर्य	02/04/2003
बुध	12/02/2000	केतु	30/12/2000	शुक्र	08/01/2002	सूर्य	23/09/2002	चंद्र	06/05/2003
केतु	02/03/2000	शुक्र	05/03/2001	सूर्य	26/01/2002	चंद्र	05/10/2002	मंगल	29/05/2003
शुक्र	25/04/2000	सूर्य	24/03/2001	चंद्र	23/02/2002	मंगल	13/10/2002	राहु	29/07/2003
सूर्य	12/05/2000	चंद्र	25/04/2001	मंगल	15/03/2002	राहु	03/11/2002	गुरु	21/09/2003
चंद्र	08/06/2000	मंगल	18/05/2001	राहु	06/05/2002	गुरु	22/11/2002	शनि	24/11/2003
मंगल	27/06/2000	राहु	14/07/2001	गुरु	21/06/2002	शनि	15/12/2002	बुध	21/01/2004
राहु	14/08/2000	गुरु	04/09/2001	शनि	15/08/2002	बुध	04/01/2003	केतु	14/02/2004

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
14/02/2004		14/06/2004		22/09/2004		04/06/2005		18/01/2006	
14/06/2004		22/09/2004		04/06/2005		18/01/2006		15/10/2006	
सूर्य	20/02/2004	मंगल	20/06/2004	राहु	30/10/2004	गुरु	05/07/2005	शनि	01/03/2006
चंद्र	01/03/2004	राहु	05/07/2004	गुरु	03/12/2004	शनि	10/08/2005	बुध	09/04/2006
मंगल	08/03/2004	गुरु	18/07/2004	शनि	13/01/2005	बुध	11/09/2005	केतु	24/04/2006
राहु	26/03/2004	शनि	03/08/2004	बुध	18/02/2005	केतु	24/09/2005	शुक्र	08/06/2006
गुरु	11/04/2004	बुध	17/08/2004	केतु	05/03/2005	शुक्र	01/11/2005	सूर्य	22/06/2006
शनि	01/05/2004	केतु	23/08/2004	शुक्र	16/04/2005	सूर्य	12/11/2005	चंद्र	14/07/2006
बुध	18/05/2004	शुक्र	09/09/2004	सूर्य	29/04/2005	चंद्र	01/12/2005	मंगल	30/07/2006
केतु	25/05/2004	सूर्य	14/09/2004	चंद्र	21/05/2005	मंगल	15/12/2005	राहु	09/09/2006
शुक्र	14/06/2004	चंद्र	22/09/2004	मंगल	04/06/2005	राहु	18/01/2006	गुरु	15/10/2006

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
15/10/2006		13/06/2007		21/09/2007		01/07/2008		24/09/2008	
13/06/2007		21/09/2007		01/07/2008		24/09/2008		13/02/2009	
बुध	18/11/2006	केतु	19/06/2007	शुक्र	07/11/2007	सूर्य	05/07/2008	चंद्र	06/10/2008
केतु	02/12/2006	शुक्र	05/07/2007	सूर्य	21/11/2007	चंद्र	12/07/2008	मंगल	14/10/2008
शुक्र	11/01/2007	सूर्य	10/07/2007	चंद्र	15/12/2007	मंगल	17/07/2008	राहु	04/11/2008
सूर्य	23/01/2007	चंद्र	19/07/2007	मंगल	31/12/2007	राहु	30/07/2008	गुरु	23/11/2008
चंद्र	12/02/2007	मंगल	25/07/2007	राहु	12/02/2008	गुरु	10/08/2008	शनि	16/12/2008
मंगल	26/02/2007	राहु	08/08/2007	गुरु	21/03/2008	शनि	24/08/2008	बुध	05/01/2009
राहु	04/04/2007	गुरु	22/08/2007	शनि	05/05/2008	बुध	05/09/2008	केतु	13/01/2009
गुरु	06/05/2007	शनि	06/09/2007	बुध	14/06/2008	केतु	10/09/2008	शुक्र	06/02/2009
शनि	13/06/2007	बुध	21/09/2007	केतु	01/07/2008	शुक्र	24/09/2008	सूर्य	13/02/2009

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
13/02/2009		02/12/2010		09/07/2012		03/06/2014		14/02/2016	
02/12/2010		09/07/2012		03/06/2014		14/02/2016		26/10/2016	
राहु	22/05/2009	गुरु	18/02/2011	शनि	27/10/2012	बुध	30/08/2014	केतु	29/02/2016
गुरु	18/08/2009	शनि	22/05/2011	बुध	02/02/2013	केतु	05/10/2014	शुक्र	11/04/2016
शनि	30/11/2009	बुध	13/08/2011	केतु	14/03/2013	शुक्र	16/01/2015	सूर्य	24/04/2016
बुध	03/03/2010	केतु	16/09/2011	शुक्र	08/07/2013	सूर्य	16/02/2015	चंद्र	15/05/2016
केतु	11/04/2010	शुक्र	22/12/2011	सूर्य	12/08/2013	चंद्र	09/04/2015	मंगल	30/05/2016
शुक्र	29/07/2010	सूर्य	20/01/2012	चंद्र	09/10/2013	मंगल	15/05/2015	राहु	08/07/2016
सूर्य	31/08/2010	चंद्र	09/03/2012	मंगल	18/11/2013	राहु	17/08/2015	गुरु	11/08/2016
चंद्र	25/10/2010	मंगल	12/04/2012	राहु	02/03/2014	गुरु	07/11/2015	शनि	20/09/2016
मंगल	02/12/2010	राहु	09/07/2012	गुरु	03/06/2014	शनि	14/02/2016	बुध	26/10/2016

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
26/10/2016		27/10/2018		03/06/2019		02/06/2020		13/02/2021	
27/10/2018		03/06/2019		02/06/2020		13/02/2021		17/07/2022	
शुक्र	25/02/2017	सूर्य	07/11/2018	चंद्र	03/07/2019	मंगल	17/06/2020	गुरु	23/04/2021
सूर्य	03/04/2017	चंद्र	25/11/2018	मंगल	25/07/2019	राहु	25/07/2020	शनि	14/07/2021
चंद्र	02/06/2017	मंगल	08/12/2018	राहु	17/09/2019	गुरु	29/08/2020	बुध	26/09/2021
मंगल	15/07/2017	राहु	10/01/2019	गुरु	05/11/2019	शनि	08/10/2020	केतु	26/10/2021
राहु	02/11/2017	गुरु	08/02/2019	शनि	02/01/2020	बुध	13/11/2020	शुक्र	21/01/2022
गुरु	07/02/2018	शनि	15/03/2019	बुध	23/02/2020	केतु	28/11/2020	सूर्य	16/02/2022
शनि	03/06/2018	बुध	15/04/2019	केतु	15/03/2020	शुक्र	10/01/2021	चंद्र	31/03/2022
बुध	14/09/2018	केतु	27/04/2019	शुक्र	15/05/2020	सूर्य	23/01/2021	मंगल	30/04/2022
केतु	27/10/2018	शुक्र	03/06/2019	सूर्य	02/06/2020	चंद्र	13/02/2021	राहु	17/07/2022

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
17/07/2022		25/03/2024		28/09/2025		13/05/2026		22/02/2028	
25/03/2024		28/09/2025		13/05/2026		22/02/2028		04/09/2028	
शनि	23/10/2022	बुध	11/06/2024	केतु	11/10/2025	शुक्र	30/08/2026	सूर्य	02/03/2028
बुध	18/01/2023	केतु	14/07/2024	शुक्र	18/11/2025	सूर्य	01/10/2026	चंद्र	19/03/2028
केतु	23/02/2023	शुक्र	14/10/2024	सूर्य	30/11/2025	चंद्र	24/11/2026	मंगल	30/03/2028
शुक्र	06/06/2023	सूर्य	10/11/2024	चंद्र	19/12/2025	मंगल	01/01/2027	राहु	28/04/2028
सूर्य	07/07/2023	चंद्र	26/12/2024	मंगल	01/01/2026	राहु	08/04/2027	गुरु	24/05/2028
चंद्र	27/08/2023	मंगल	27/01/2025	राहु	04/02/2026	गुरु	04/07/2027	शनि	24/06/2028
मंगल	02/10/2023	राहु	20/04/2025	गुरु	06/03/2026	शनि	15/10/2027	बुध	22/07/2028
राहु	03/01/2024	गुरु	03/07/2025	शनि	11/04/2026	बुध	15/01/2028	केतु	02/08/2028
गुरु	25/03/2024	शनि	28/09/2025	बुध	13/05/2026	केतु	22/02/2028	शुक्र	04/09/2028

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
04/09/2028		25/07/2029		09/03/2030		15/10/2031		16/10/2033	
25/07/2029		09/03/2030		15/10/2031		16/10/2033		03/08/2035	
चंद्र	01/10/2028	मंगल	07/08/2029	राहु	05/06/2030	शनि	08/02/2032	बुध	17/01/2034
मंगल	20/10/2028	राहु	11/09/2029	गुरु	22/08/2030	बुध	22/05/2032	केतु	24/02/2034
राहु	07/12/2028	गुरु	11/10/2029	शनि	23/11/2030	केतु	03/07/2032	शुक्र	14/06/2034
गुरु	20/01/2029	शनि	16/11/2029	बुध	13/02/2031	शुक्र	02/11/2032	सूर्य	16/07/2034
शनि	12/03/2029	बुध	18/12/2029	केतु	19/03/2031	सूर्य	09/12/2032	चंद्र	09/09/2034
बुध	27/04/2029	केतु	31/12/2029	शुक्र	25/06/2031	चंद्र	08/02/2033	मंगल	17/10/2034
केतु	16/05/2029	शुक्र	07/02/2030	सूर्य	24/07/2031	मंगल	23/03/2033	राहु	24/01/2035
शुक्र	09/07/2029	सूर्य	19/02/2030	चंद्र	11/09/2031	राहु	11/07/2033	गुरु	21/04/2035
सूर्य	25/07/2029	चंद्र	09/03/2030	मंगल	15/10/2031	गुरु	16/10/2033	शनि	03/08/2035

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 0 मास 30 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
30/04/1963		31/05/1967		31/05/1975		30/05/1992		30/05/2002	
31/05/1967		31/05/1975		30/05/1992		30/05/2002		30/05/2021	
	00/00/0000	मंगल	02/01/1968	बुध	01/02/1978	शनि	03/05/1993	गुरु	02/10/2005
	00/00/0000	बुध	06/04/1969	शनि	30/08/1979	गुरु	05/02/1995	राहु	12/11/2007
	00/00/0000	शनि	02/01/1970	गुरु	26/08/1982	राहु	17/03/1996	शुक्र	24/07/2011
	00/00/0000	गुरु	31/05/1971	राहु	16/07/1984	शुक्र	25/02/1998	सूर्य	12/08/2012
	30/04/1963	राहु	19/04/1972	शुक्र	06/11/1987	सूर्य	16/09/1998	चंद्र	03/04/2015
राहु	30/08/1963	शुक्र	09/11/1973	सूर्य	16/10/1988	चंद्र	05/02/2000	मंगल	29/08/2016
शुक्र	30/07/1966	सूर्य	20/04/1974	चंद्र	25/02/1991	मंगल	02/11/2000	बुध	27/08/2019
सूर्य	31/05/1967	चंद्र	31/05/1975	मंगल	30/05/1992	बुध	30/05/2002	शनि	30/05/2021

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
30/05/2021		30/05/2033		30/05/2054		30/05/2060	
30/05/2033		30/05/2054		30/05/2060		00/00/0000	
राहु	29/09/2022	शुक्र	30/06/2037	सूर्य	29/09/2054	चंद्र	30/06/2062
शुक्र	28/01/2025	सूर्य	30/08/2038	चंद्र	31/07/2055	मंगल	10/08/2063
सूर्य	29/09/2025	चंद्र	30/07/2041	मंगल	09/01/2056	बुध	19/12/2065
चंद्र	31/05/2027	मंगल	18/02/2043	बुध	19/12/2056	शनि	10/05/2067
मंगल	19/04/2028	बुध	10/06/2046	शनि	10/07/2057	गुरु	29/12/2069
बुध	10/03/2030	शनि	20/05/2048	गुरु	30/07/2058	राहु	30/04/2071
शनि	20/04/2031	गुरु	29/01/2052	राहु	31/03/2059		00/00/0000
गुरु	30/05/2033	राहु	30/05/2054	शुक्र	30/05/2060		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध	
30/04/1963		30/08/1963		30/07/1966		31/05/1967		02/01/1968	
30/08/1963		30/07/1966		31/05/1967		02/01/1968		06/04/1969	
	00/00/0000	शुक्र	24/03/1964	सूर्य	16/08/1966	मंगल	16/06/1967	बुध	15/03/1968
	00/00/0000	सूर्य	22/05/1964	चंद्र	27/09/1966	बुध	20/07/1967	शनि	26/04/1968
	00/00/0000	चंद्र	17/10/1964	मंगल	20/10/1966	शनि	09/08/1967	गुरु	16/07/1968
	00/00/0000	मंगल	04/01/1965	बुध	07/12/1966	गुरु	16/09/1967	राहु	05/09/1968
	00/00/0000	बुध	21/06/1965	शनि	04/01/1967	राहु	10/10/1967	शुक्र	04/12/1968
	30/04/1963	शनि	28/09/1965	गुरु	27/02/1967	शुक्र	21/11/1967	सूर्य	29/12/1968
शनि	15/05/1963	गुरु	03/04/1966	राहु	02/04/1967	सूर्य	03/12/1967	चंद्र	03/03/1969
गुरु	30/08/1963	राहु	30/07/1966	शुक्र	31/05/1967	चंद्र	02/01/1968	मंगल	06/04/1969

मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
06/04/1969		02/01/1970		31/05/1971		19/04/1972		09/11/1973	
02/01/1970		31/05/1971		19/04/1972		09/11/1973		20/04/1974	
शनि	01/05/1969	गुरु	02/04/1970	राहु	06/07/1971	शुक्र	08/08/1972	सूर्य	18/11/1973
गुरु	18/06/1969	राहु	29/05/1970	शुक्र	07/09/1971	सूर्य	08/09/1972	चंद्र	10/12/1973
राहु	18/07/1969	शुक्र	06/09/1970	सूर्य	25/09/1971	चंद्र	26/11/1972	मंगल	22/12/1973
शुक्र	08/09/1969	सूर्य	05/10/1970	चंद्र	09/11/1971	मंगल	07/01/1973	बुध	17/01/1974
सूर्य	23/09/1969	चंद्र	15/12/1970	मंगल	03/12/1971	बुध	07/04/1973	शनि	01/02/1974
चंद्र	31/10/1969	मंगल	22/01/1971	बुध	23/01/1972	शनि	29/05/1973	गुरु	01/03/1974
मंगल	20/11/1969	बुध	13/04/1971	शनि	22/02/1972	गुरु	06/09/1973	राहु	19/03/1974
बुध	02/01/1970	शनि	31/05/1971	गुरु	19/04/1972	राहु	09/11/1973	शुक्र	20/04/1974

मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु	
20/04/1974		31/05/1975		01/02/1978		30/08/1979		26/08/1982	
31/05/1975		01/02/1978		30/08/1979		26/08/1982		16/07/1984	
चंद्र	15/06/1974	बुध	01/11/1975	शनि	26/03/1978	गुरु	09/03/1980	राहु	11/11/1982
मंगल	15/07/1974	शनि	30/01/1976	गुरु	05/07/1978	राहु	09/07/1980	शुक्र	25/03/1983
बुध	17/09/1974	गुरु	20/07/1976	राहु	07/09/1978	शुक्र	06/02/1981	सूर्य	03/05/1983
शनि	25/10/1974	राहु	06/11/1976	शुक्र	28/12/1978	सूर्य	08/04/1981	चंद्र	06/08/1983
गुरु	04/01/1975	शुक्र	15/05/1977	सूर्य	29/01/1979	चंद्र	06/09/1981	मंगल	26/09/1983
राहु	18/02/1975	सूर्य	08/07/1977	चंद्र	19/04/1979	मंगल	26/11/1981	बुध	13/01/1984
शुक्र	08/05/1975	चंद्र	21/11/1977	मंगल	01/06/1979	बुध	17/05/1982	शनि	17/03/1984
सूर्य	31/05/1975	मंगल	01/02/1978	बुध	30/08/1979	शनि	26/08/1982	गुरु	16/07/1984

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
16/07/1984		06/11/1987		16/10/1988		25/02/1991		30/05/1992	
06/11/1987		16/10/1988		25/02/1991		30/05/1992		03/05/1993	
शुक्र	08/03/1985	सूर्य	25/11/1987	चंद्र	12/02/1989	मंगल	31/03/1991	शनि	30/06/1992
सूर्य	14/05/1985	चंद्र	12/01/1988	मंगल	17/04/1989	बुध	11/06/1991	गुरु	29/08/1992
चंद्र	29/10/1985	मंगल	06/02/1988	बुध	31/08/1989	शनि	24/07/1991	राहु	05/10/1992
मंगल	26/01/1986	बुध	01/04/1988	शनि	19/11/1989	गुरु	13/10/1991	शुक्र	10/12/1992
बुध	04/08/1986	शनि	03/05/1988	गुरु	20/04/1990	राहु	03/12/1991	सूर्य	29/12/1992
शनि	24/11/1986	गुरु	02/07/1988	राहु	24/07/1990	शुक्र	02/03/1992	चंद्र	14/02/1993
गुरु	24/06/1987	राहु	10/08/1988	शुक्र	08/01/1991	सूर्य	27/03/1992	मंगल	11/03/1993
राहु	06/11/1987	शुक्र	16/10/1988	सूर्य	25/02/1991	चंद्र	30/05/1992	बुध	03/05/1993

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
03/05/1993		05/02/1995		17/03/1996		25/02/1998		16/09/1998	
05/02/1995		17/03/1996		25/02/1998		16/09/1998		05/02/2000	
गुरु	24/08/1993	राहु	22/03/1995	शुक्र	02/08/1996	सूर्य	08/03/1998	चंद्र	25/11/1998
राहु	04/11/1993	शुक्र	09/06/1995	सूर्य	10/09/1996	चंद्र	05/04/1998	मंगल	02/01/1999
शुक्र	09/03/1994	सूर्य	01/07/1995	चंद्र	18/12/1996	मंगल	20/04/1998	बुध	23/03/1999
सूर्य	13/04/1994	चंद्र	27/08/1995	मंगल	08/02/1997	बुध	22/05/1998	शनि	09/05/1999
चंद्र	11/07/1994	मंगल	26/09/1995	बुध	31/05/1997	शनि	10/06/1998	गुरु	06/08/1999
मंगल	28/08/1994	बुध	29/11/1995	शनि	05/08/1997	गुरु	16/07/1998	राहु	01/10/1999
बुध	07/12/1994	शनि	05/01/1996	गुरु	08/12/1997	राहु	07/08/1998	शुक्र	08/01/2000
शनि	05/02/1995	गुरु	17/03/1996	राहु	25/02/1998	शुक्र	16/09/1998	सूर्य	05/02/2000

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
05/02/2000		02/11/2000		30/05/2002		02/10/2005		12/11/2007	
02/11/2000		30/05/2002		02/10/2005		12/11/2007		24/07/2011	
मंगल	25/02/2000	बुध	31/01/2001	गुरु	31/12/2002	राहु	27/12/2005	शुक्र	01/08/2008
बुध	08/04/2000	शनि	25/03/2001	राहु	16/05/2003	शुक्र	26/05/2006	सूर्य	15/10/2008
शनि	03/05/2000	गुरु	04/07/2001	शुक्र	08/01/2004	सूर्य	08/07/2006	चंद्र	20/04/2009
गुरु	19/06/2000	राहु	06/09/2001	सूर्य	16/03/2004	चंद्र	23/10/2006	मंगल	29/07/2009
राहु	19/07/2000	शुक्र	27/12/2001	चंद्र	02/09/2004	मंगल	19/12/2006	बुध	27/02/2010
शुक्र	10/09/2000	सूर्य	28/01/2002	मंगल	01/12/2004	बुध	19/04/2007	शनि	01/07/2010
सूर्य	25/09/2000	चंद्र	18/04/2002	बुध	11/06/2005	शनि	30/06/2007	गुरु	24/02/2011
चंद्र	02/11/2000	मंगल	30/05/2002	शनि	02/10/2005	गुरु	12/11/2007	राहु	24/07/2011

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
24/07/2011		12/08/2012		03/04/2015		29/08/2016		27/08/2019	
12/08/2012		03/04/2015		29/08/2016		27/08/2019		30/05/2021	
सूर्य	14/08/2011	चंद्र	24/12/2012	मंगल	11/05/2015	बुध	17/02/2017	शनि	25/10/2019
चंद्र	07/10/2011	मंगल	06/03/2013	बुध	31/07/2015	शनि	29/05/2017	गुरु	15/02/2020
मंगल	04/11/2011	बुध	04/08/2013	शनि	17/09/2015	गुरु	08/12/2017	राहु	27/04/2020
बुध	04/01/2012	शनि	02/11/2013	गुरु	16/12/2015	राहु	08/04/2018	शुक्र	30/08/2020
शनि	09/02/2012	गुरु	20/04/2014	राहु	11/02/2016	शुक्र	06/11/2018	सूर्य	04/10/2020
गुरु	17/04/2012	राहु	05/08/2014	शुक्र	21/05/2016	सूर्य	06/01/2019	चंद्र	01/01/2021
राहु	29/05/2012	शुक्र	09/02/2015	सूर्य	19/06/2016	चंद्र	07/06/2019	मंगल	18/02/2021
शुक्र	12/08/2012	सूर्य	03/04/2015	चंद्र	29/08/2016	मंगल	27/08/2019	बुध	30/05/2021

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
30/05/2021		29/09/2022		28/01/2025		29/09/2025		31/05/2027	
29/09/2022		28/01/2025		29/09/2025		31/05/2027		19/04/2028	
राहु	23/07/2021	शुक्र	14/03/2023	सूर्य	11/02/2025	चंद्र	22/12/2025	मंगल	24/06/2027
शुक्र	26/10/2021	सूर्य	30/04/2023	चंद्र	17/03/2025	मंगल	06/02/2026	बुध	14/08/2027
सूर्य	22/11/2021	चंद्र	27/08/2023	मंगल	04/04/2025	बुध	12/05/2026	शनि	13/09/2027
चंद्र	29/01/2022	मंगल	29/10/2023	बुध	12/05/2025	शनि	08/07/2026	गुरु	09/11/2027
मंगल	06/03/2022	बुध	11/03/2024	शनि	04/06/2025	गुरु	23/10/2026	राहु	15/12/2027
बुध	21/05/2022	शनि	29/05/2024	गुरु	17/07/2025	राहु	30/12/2026	शुक्र	16/02/2028
शनि	06/07/2022	गुरु	26/10/2024	राहु	13/08/2025	शुक्र	27/04/2027	सूर्य	05/03/2028
गुरु	29/09/2022	राहु	28/01/2025	शुक्र	29/09/2025	सूर्य	31/05/2027	चंद्र	19/04/2028

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
19/04/2028		10/03/2030		20/04/2031		30/05/2033		30/06/2037	
10/03/2030		20/04/2031		30/05/2033		30/06/2037		30/08/2038	
बुध	06/08/2028	शनि	17/04/2030	गुरु	03/09/2031	शुक्र	16/03/2034	सूर्य	23/07/2037
शनि	09/10/2028	गुरु	27/06/2030	राहु	27/11/2031	सूर्य	07/06/2034	चंद्र	20/09/2037
गुरु	07/02/2029	राहु	11/08/2030	शुक्र	25/04/2032	चंद्र	31/12/2034	मंगल	22/10/2037
राहु	25/04/2029	शुक्र	29/10/2030	सूर्य	07/06/2032	मंगल	21/04/2035	बुध	28/12/2037
शुक्र	06/09/2029	सूर्य	21/11/2030	चंद्र	22/09/2032	बुध	11/12/2035	शनि	06/02/2038
सूर्य	14/10/2029	चंद्र	16/01/2031	मंगल	18/11/2032	शनि	28/04/2036	गुरु	22/04/2038
चंद्र	18/01/2030	मंगल	15/02/2031	बुध	20/03/2033	गुरु	15/01/2037	राहु	08/06/2038
मंगल	10/03/2030	बुध	20/04/2031	शनि	30/05/2033	राहु	30/06/2037	शुक्र	30/08/2038

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र	
30/08/2038	
30/07/2041	
चंद्र	25/01/2039
मंगल	14/04/2039
बुध	28/09/2039
शनि	05/01/2040
गुरु	10/07/2040
राहु	06/11/2040
शुक्र	01/06/2041
सूर्य	30/07/2041

शुक्र - मंगल	
30/07/2041	
18/02/2043	
मंगल	10/09/2041
बुध	09/12/2041
शनि	30/01/2042
गुरु	10/05/2042
राहु	12/07/2042
शुक्र	31/10/2042
सूर्य	01/12/2042
चंद्र	18/02/2043

शुक्र - बुध	
18/02/2043	
10/06/2046	
बुध	27/08/2043
शनि	17/12/2043
गुरु	16/07/2044
राहु	28/11/2044
शुक्र	20/07/2045
सूर्य	25/09/2045
चंद्र	12/03/2046
मंगल	10/06/2046

शुक्र - शनि	
10/06/2046	
20/05/2048	
शनि	14/08/2046
गुरु	17/12/2046
राहु	06/03/2047
शुक्र	22/07/2047
सूर्य	31/08/2047
चंद्र	07/12/2047
मंगल	29/01/2048
बुध	20/05/2048

शुक्र - गुरु	
20/05/2048	
29/01/2052	
गुरु	12/01/2049
राहु	11/06/2049
शुक्र	01/03/2050
सूर्य	14/05/2050
चंद्र	18/11/2050
मंगल	26/02/2051
बुध	26/09/2051
शनि	29/01/2052

शुक्र - राहु	
29/01/2052	
30/05/2054	
राहु	03/05/2052
शुक्र	16/10/2052
सूर्य	02/12/2052
चंद्र	30/03/2053
मंगल	01/06/2053
बुध	14/10/2053
शनि	01/01/2054
गुरु	30/05/2054

सूर्य - सूर्य	
30/05/2054	
29/09/2054	
सूर्य	06/06/2054
चंद्र	23/06/2054
मंगल	02/07/2054
बुध	21/07/2054
शनि	02/08/2054
गुरु	23/08/2054
राहु	06/09/2054
शुक्र	29/09/2054

सूर्य - चंद्र	
29/09/2054	
31/07/2055	
चंद्र	10/11/2054
मंगल	03/12/2054
बुध	20/01/2055
शनि	17/02/2055
गुरु	12/04/2055
राहु	15/05/2055
शुक्र	14/07/2055
सूर्य	31/07/2055

सूर्य - मंगल	
31/07/2055	
09/01/2056	
मंगल	12/08/2055
बुध	06/09/2055
शनि	21/09/2055
गुरु	20/10/2055
राहु	07/11/2055
शुक्र	08/12/2055
सूर्य	17/12/2055
चंद्र	09/01/2056

सूर्य - बुध	
09/01/2056	
19/12/2056	
बुध	03/03/2056
शनि	04/04/2056
गुरु	04/06/2056
राहु	12/07/2056
शुक्र	17/09/2056
सूर्य	06/10/2056
चंद्र	23/11/2056
मंगल	19/12/2056

सूर्य - शनि	
19/12/2056	
10/07/2057	
शनि	07/01/2057
गुरु	11/02/2057
राहु	06/03/2057
शुक्र	14/04/2057
सूर्य	26/04/2057
चंद्र	24/05/2057
मंगल	08/06/2057
बुध	10/07/2057

सूर्य - गुरु	
10/07/2057	
30/07/2058	
गुरु	16/09/2057
राहु	28/10/2057
शुक्र	11/01/2058
सूर्य	02/02/2058
चंद्र	27/03/2058
मंगल	25/04/2058
बुध	25/06/2058
शनि	30/07/2058

सूर्य - राहु	
30/07/2058	
31/03/2059	
राहु	26/08/2058
शुक्र	13/10/2058
सूर्य	26/10/2058
चंद्र	29/11/2058
मंगल	17/12/2058
बुध	24/01/2059
शनि	16/02/2059
गुरु	31/03/2059

सूर्य - शुक्र	
31/03/2059	
30/05/2060	
शुक्र	22/06/2059
सूर्य	15/07/2059
चंद्र	13/09/2059
मंगल	14/10/2059
बुध	20/12/2059
शनि	29/01/2060
गुरु	13/04/2060
राहु	30/05/2060

चंद्र - चंद्र	
30/05/2060	
30/06/2062	
चंद्र	13/09/2060
मंगल	08/11/2060
बुध	08/03/2061
शनि	17/05/2061
गुरु	28/09/2061
राहु	22/12/2061
शुक्र	19/05/2062
सूर्य	30/06/2062

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 0 वर्ष 3 मास 6 दिन

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
30/04/1963	**06/08/1963**	**06/08/1967**	**05/08/1972**	**05/08/1978**
06/08/1963	**06/08/1967**	**05/08/1972**	**05/08/1978**	**05/08/1985**
00/00/0000	भ्राम 15/01/1964	भद्रि 15/04/1968	उल्क 05/08/1973	सिद्ध 16/12/1979
00/00/0000	भद्रि 05/08/1964	उल्क 14/02/1969	सिद्ध 05/10/1974	संक 06/07/1981
00/00/0000	उल्क 05/04/1965	सिद्ध 04/02/1970	संक 04/02/1976	मंग 15/09/1981
00/00/0000	सिद्ध 14/01/1966	संक 17/03/1971	मंग 05/04/1976	पिंग 04/02/1982
30/04/1963	संक 05/12/1966	मंग 06/05/1971	पिंग 05/08/1976	धांय 05/09/1982
संक 06/05/1963	मंग 15/01/1967	पिंग 16/08/1971	धांय 04/02/1977	भ्राम 16/06/1983
मंग 06/06/1963	पिंग 06/04/1967	धांय 15/01/1972	भ्राम 05/10/1977	भद्रि 05/06/1984
पिंग 06/08/1963	धांय 06/08/1967	भ्राम 05/08/1972	भद्रि 05/08/1978	उल्क 05/08/1985

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
05/08/1985	**05/08/1993**	**05/08/1994**	**05/08/1996**	**06/08/1999**
05/08/1993	**05/08/1994**	**05/08/1996**	**06/08/1999**	**06/08/2003**
संक 16/05/1987	मंग 15/08/1993	पिंग 15/09/1994	धांय 04/11/1996	भ्राम 15/01/2000
मंग 06/08/1987	पिंग 05/09/1993	धांय 15/11/1994	भ्राम 06/03/1997	भद्रि 05/08/2000
पिंग 15/01/1988	धांय 05/10/1993	भ्राम 04/02/1995	भद्रि 05/08/1997	उल्क 05/04/2001
धांय 14/09/1988	भ्राम 15/11/1993	भद्रि 16/05/1995	उल्क 04/02/1998	सिद्ध 14/01/2002
भ्राम 05/08/1989	भद्रि 04/01/1994	उल्क 15/09/1995	सिद्ध 05/09/1998	संक 05/12/2002
भद्रि 15/09/1990	उल्क 06/03/1994	सिद्ध 04/02/1996	संक 06/05/1999	मंग 15/01/2003
उल्क 15/01/1992	सिद्ध 16/05/1994	संक 16/07/1996	मंग 06/06/1999	पिंग 06/04/2003
सिद्ध 05/08/1993	संक 05/08/1994	मंग 05/08/1996	पिंग 06/08/1999	धांय 06/08/2003

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
06/08/2003		05/08/2008		05/08/2014		05/08/2021		05/08/2029	
05/08/2008		05/08/2014		05/08/2021		05/08/2029		05/08/2030	
भद्रि	15/04/2004	उल्क	05/08/2009	सिद्ध	16/12/2015	संक	16/05/2023	मंग	15/08/2029
उल्क	14/02/2005	सिद्ध	05/10/2010	संक	06/07/2017	मंग	06/08/2023	पिंग	05/09/2029
सिद्ध	04/02/2006	संक	04/02/2012	मंग	15/09/2017	पिंग	15/01/2024	धांय	05/10/2029
संक	17/03/2007	मंग	05/04/2012	पिंग	04/02/2018	धांय	14/09/2024	भ्राम	15/11/2029
मंग	06/05/2007	पिंग	05/08/2012	धांय	05/09/2018	भ्राम	05/08/2025	भद्रि	04/01/2030
पिंग	16/08/2007	धांय	04/02/2013	भ्राम	16/06/2019	भद्रि	15/09/2026	उल्क	06/03/2030
धांय	15/01/2008	भ्राम	05/10/2013	भद्रि	05/06/2020	उल्क	15/01/2028	सिद्ध	16/05/2030
भ्राम	05/08/2008	भद्रि	05/08/2014	उल्क	05/08/2021	सिद्ध	05/08/2029	संक	05/08/2030

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
05/08/2030		05/08/2032		06/08/2035		06/08/2039		05/08/2044	
05/08/2032		06/08/2035		06/08/2039		05/08/2044		05/08/2050	
पिंग	15/09/2030	धांय	04/11/2032	भ्राम	15/01/2036	भद्रि	15/04/2040	उल्क	05/08/2045
धांय	15/11/2030	भ्राम	06/03/2033	भद्रि	05/08/2036	उल्क	14/02/2041	सिद्ध	05/10/2046
भ्राम	04/02/2031	भद्रि	05/08/2033	उल्क	05/04/2037	सिद्ध	04/02/2042	संक	04/02/2048
भद्रि	16/05/2031	उल्क	04/02/2034	सिद्ध	14/01/2038	संक	17/03/2043	मंग	05/04/2048
उल्क	15/09/2031	सिद्ध	05/09/2034	संक	05/12/2038	मंग	06/05/2043	पिंग	05/08/2048
सिद्ध	04/02/2032	संक	06/05/2035	मंग	15/01/2039	पिंग	16/08/2043	धांय	04/02/2049
संक	16/07/2032	मंग	06/06/2035	पिंग	06/04/2039	धांय	15/01/2044	भ्राम	05/10/2049
मंग	05/08/2032	पिंग	06/08/2035	धांय	06/08/2039	भ्राम	05/08/2044	भद्रि	05/08/2050

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
05/08/2050		05/08/2057		05/08/2065		05/08/2066		05/08/2068	
05/08/2057		05/08/2065		05/08/2066		05/08/2068		00/00/0000	
सिद्ध	16/12/2051	संक	16/05/2059	मंग	15/08/2065	पिंग	15/09/2066	धांय	04/11/2068
संक	06/07/2053	मंग	06/08/2059	पिंग	05/09/2065	धांय	15/11/2066	भ्राम	06/03/2069
मंग	15/09/2053	पिंग	15/01/2060	धांय	05/10/2065	भ्राम	04/02/2067	भद्रि	05/08/2069
पिंग	04/02/2054	धांय	14/09/2060	भ्राम	15/11/2065	भद्रि	16/05/2067	उल्क	04/02/2070
धांय	05/09/2054	भ्राम	05/08/2061	भद्रि	04/01/2066	उल्क	15/09/2067	सिद्ध	05/09/2070
भ्राम	16/06/2055	भद्रि	15/09/2062	उल्क	06/03/2066	सिद्ध	04/02/2068	संक	30/04/2071
भद्रि	05/06/2056	उल्क	15/01/2064	सिद्ध	16/05/2066	संक	16/07/2068		00/00/0000
उल्क	05/08/2057	सिद्ध	05/08/2065	संक	05/08/2066	मंग	05/08/2068		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग	
05/08/2025		15/09/2026		15/01/2028		05/08/2029		15/08/2029	
15/09/2026		15/01/2028		05/08/2029		15/08/2029		05/09/2029	
भद्रि	01/10/2025	उल्क	05/12/2026	सिद्ध	04/05/2028	मंग	05/08/2029	पिंग	16/08/2029
उल्क	07/12/2025	सिद्ध	10/03/2027	संक	08/09/2028	पिंग	06/08/2029	धांय	18/08/2029
सिद्ध	24/02/2026	संक	26/06/2027	मंग	24/09/2028	धांय	07/08/2029	भ्राम	20/08/2029
संक	25/05/2026	मंग	10/07/2027	पिंग	25/10/2028	भ्राम	08/08/2029	भद्रि	23/08/2029
मंग	06/06/2026	पिंग	06/08/2027	धांय	11/12/2028	भद्रि	09/08/2029	उल्क	27/08/2029
पिंग	28/06/2026	धांय	15/09/2027	भ्राम	13/02/2029	उल्क	11/08/2029	सिद्ध	31/08/2029
धांय	01/08/2026	भ्राम	08/11/2027	भद्रि	02/05/2029	सिद्ध	13/08/2029	संक	04/09/2029
भ्राम	15/09/2026	भद्रि	15/01/2028	उल्क	05/08/2029	संक	15/08/2029	मंग	05/09/2029

मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध	
05/09/2029		05/10/2029		15/11/2029		04/01/2030		06/03/2030	
05/10/2029		15/11/2029		04/01/2030		06/03/2030		16/05/2030	
धांय	07/09/2029	भ्राम	10/10/2029	भद्रि	22/11/2029	उल्क	14/01/2030	सिद्ध	20/03/2030
भ्राम	11/09/2029	भद्रि	15/10/2029	उल्क	30/11/2029	सिद्ध	26/01/2030	संक	05/04/2030
भद्रि	15/09/2029	उल्क	22/10/2029	सिद्ध	10/12/2029	संक	09/02/2030	मंग	07/04/2030
उल्क	20/09/2029	सिद्ध	30/10/2029	संक	21/12/2029	मंग	11/02/2030	पिंग	11/04/2030
सिद्ध	26/09/2029	संक	08/11/2029	मंग	23/12/2029	पिंग	14/02/2030	धांय	17/04/2030
संक	02/10/2029	मंग	09/11/2029	पिंग	25/12/2029	धांय	19/02/2030	भ्राम	25/04/2030
मंग	03/10/2029	पिंग	11/11/2029	धांय	30/12/2029	भ्राम	26/02/2030	भद्रि	04/05/2030
पिंग	05/10/2029	धांय	15/11/2029	भ्राम	04/01/2030	भद्रि	06/03/2030	उल्क	16/05/2030

मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि	
16/05/2030		05/08/2030		15/09/2030		15/11/2030		04/02/2031	
05/08/2030		15/09/2030		15/11/2030		04/02/2031		16/05/2031	
संक	03/06/2030	पिंग	08/08/2030	धांय	20/09/2030	भ्राम	24/11/2030	भद्रि	18/02/2031
मंग	06/06/2030	धांय	11/08/2030	भ्राम	27/09/2030	भद्रि	05/12/2030	उल्क	07/03/2031
पिंग	10/06/2030	भ्राम	16/08/2030	भद्रि	05/10/2030	उल्क	19/12/2030	सिद्ध	27/03/2031
धांय	17/06/2030	भद्रि	21/08/2030	उल्क	15/10/2030	सिद्ध	03/01/2031	संक	18/04/2031
भ्राम	26/06/2030	उल्क	28/08/2030	सिद्ध	27/10/2030	संक	22/01/2031	मंग	21/04/2031
भद्रि	07/07/2030	सिद्ध	05/09/2030	संक	10/11/2030	मंग	24/01/2031	पिंग	27/04/2031
उल्क	21/07/2030	संक	14/09/2030	मंग	11/11/2030	पिंग	28/01/2031	धांय	05/05/2031
सिद्ध	05/08/2030	मंग	15/09/2030	पिंग	15/11/2030	धांय	04/02/2031	भ्राम	16/05/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
16/05/2031		15/09/2031		04/02/2032		16/07/2032		05/08/2032	
15/09/2031		04/02/2032		16/07/2032		05/08/2032		04/11/2032	
उल्क	06/06/2031	सिद्ध	13/10/2031	संक	11/03/2032	मंग	16/07/2032	धांय	13/08/2032
सिद्ध	29/06/2031	संक	13/11/2031	मंग	16/03/2032	पिंग	17/07/2032	भ्राम	23/08/2032
संक	27/07/2031	मंग	17/11/2031	पिंग	25/03/2032	धांय	19/07/2032	भद्रि	04/09/2032
मंग	30/07/2031	पिंग	25/11/2031	धांय	07/04/2032	भ्राम	21/07/2032	उल्क	20/09/2032
पिंग	06/08/2031	धांय	07/12/2031	भ्राम	25/04/2032	भद्रि	24/07/2032	सिद्ध	07/10/2032
धांय	16/08/2031	भ्राम	23/12/2031	भद्रि	18/05/2032	उल्क	27/07/2032	संक	28/10/2032
भ्राम	29/08/2031	भद्रि	12/01/2032	उल्क	14/06/2032	सिद्ध	31/07/2032	मंग	30/10/2032
भद्रि	15/09/2031	उल्क	04/02/2032	सिद्ध	16/07/2032	संक	05/08/2032	पिंग	04/11/2032

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
04/11/2032		06/03/2033		05/08/2033		04/02/2034		05/09/2034	
06/03/2033		05/08/2033		04/02/2034		05/09/2034		06/05/2035	
भ्राम	18/11/2032	भद्रि	27/03/2033	उल्क	05/09/2033	सिद्ध	17/03/2034	संक	29/10/2034
भद्रि	05/12/2032	उल्क	21/04/2033	सिद्ध	10/10/2033	संक	04/05/2034	मंग	05/11/2034
उल्क	25/12/2032	सिद्ध	21/05/2033	संक	20/11/2033	मंग	09/05/2034	पिंग	18/11/2034
सिद्ध	18/01/2033	संक	24/06/2033	मंग	25/11/2033	पिंग	21/05/2034	धांय	09/12/2034
संक	14/02/2033	मंग	28/06/2033	पिंग	05/12/2033	धांय	08/06/2034	भ्राम	05/01/2035
मंग	17/02/2033	पिंग	07/07/2033	धांय	20/12/2033	भ्राम	02/07/2034	भद्रि	07/02/2035
पिंग	24/02/2033	धांय	19/07/2033	भ्राम	09/01/2034	भद्रि	31/07/2034	उल्क	20/03/2035
धांय	06/03/2033	भ्राम	05/08/2033	भद्रि	04/02/2034	उल्क	05/09/2034	सिद्ध	06/05/2035

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
06/05/2035		06/06/2035		06/08/2035		15/01/2036		05/08/2036	
06/06/2035		06/08/2035		15/01/2036		05/08/2036		05/04/2037	
मंग	07/05/2035	पिंग	09/06/2035	भ्राम	24/08/2035	भद्रि	12/02/2036	उल्क	14/09/2036
पिंग	09/05/2035	धांय	14/06/2035	भद्रि	15/09/2035	उल्क	17/03/2036	सिद्ध	01/11/2036
धांय	11/05/2035	भ्राम	21/06/2035	उल्क	12/10/2035	सिद्ध	25/04/2036	संक	25/12/2036
भ्राम	15/05/2035	भद्रि	29/06/2035	सिद्ध	13/11/2035	संक	10/06/2036	मंग	01/01/2037
भद्रि	19/05/2035	उल्क	10/07/2035	संक	19/12/2035	मंग	15/06/2036	पिंग	14/01/2037
उल्क	24/05/2035	सिद्ध	21/07/2035	मंग	23/12/2035	पिंग	26/06/2036	धांय	04/02/2037
सिद्ध	30/05/2035	संक	04/08/2035	पिंग	01/01/2036	धांय	13/07/2036	भ्राम	03/03/2037
संक	06/06/2035	मंग	06/08/2035	धांय	15/01/2036	भ्राम	05/08/2036	भद्रि	05/04/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मेष 2 वर्ष 6 मास 23 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : पुष्य - 4 सव्य
देह : कर्क जीव : मीन

मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
30/04/1963		22/11/1965		23/11/1975		23/11/1979		23/11/1983	
22/11/1965		23/11/1975		23/11/1979		23/11/1983		22/11/1993	
	00/00/0000	मीन	21/01/1967	कुंभ	30/01/1976	मक	30/01/1980	धनु	20/01/1985
	00/00/0000	कुंभ	10/07/1967	मक	06/04/1976	धनु	17/07/1980	कर्क	01/07/1987
	00/00/0000	मक	27/12/1967	धनु	23/09/1976	कर्क	09/07/1981	सिंह	30/01/1988
	00/00/0000	धनु	23/02/1969	कर्क	15/09/1977	सिंह	02/10/1981	मिथु	15/02/1989
	30/04/1963	कर्क	04/08/1971	सिंह	09/12/1977	मिथु	04/03/1982	वृष	26/12/1990
कर्क	14/06/1963	सिंह	04/03/1972	मिथु	11/05/1978	वृष	01/12/1982	मेष	20/10/1991
सिंह	10/11/1963	मिथु	21/03/1973	वृष	07/02/1979	मेष	30/03/1983	मीन	17/12/1992
मिथु	03/08/1964	वृष	29/01/1975	मेष	06/06/1979	मीन	16/09/1983	कुंभ	05/06/1993
वृष	22/11/1965	मेष	23/11/1975	मीन	23/11/1979	कुंभ	23/11/1983	मक	22/11/1993

कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
22/11/1993		22/11/2014		23/11/2019		22/11/2028		22/11/2044	
22/11/2014		23/11/2019		22/11/2028		22/11/2044		00/00/0000	
कर्क	08/01/1999	सिंह	09/03/2015	मिथु	01/11/2020	वृष	14/11/2031	मेष	18/06/2045
सिंह	29/03/2000	मिथु	16/09/2015	वृष	05/07/2022	मेष	04/03/2033	मीन	11/04/2046
मिथु	10/06/2002	वृष	20/08/2016	मेष	30/03/2023	मीन	12/01/2035	कुंभ	08/08/2046
वृष	07/05/2006	मेष	16/01/2017	मीन	15/04/2024	कुंभ	11/10/2035	मक	05/12/2046
मेष	21/01/2008	मीन	16/08/2017	कुंभ	15/09/2024	मक	09/07/2036	धनु	28/09/2047
मीन	01/07/2010	कुंभ	09/11/2017	मक	15/02/2025	धनु	19/05/2038	कर्क	30/04/2049
कुंभ	23/06/2011	मक	02/02/2018	धनु	04/03/2026	कर्क	15/04/2042		00/00/0000
मक	13/06/2012	धनु	03/09/2018	कर्क	15/05/2028	सिंह	21/03/2043		00/00/0000
धनु	22/11/2014	कर्क	23/11/2019	सिंह	22/11/2028	मिथु	22/11/2044		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - धनु		मिथु - कर्क		मिथु - सिंह		वृष - वृष		वृष - मेष	
15/02/2025		04/03/2026		15/05/2028		22/11/2028		14/11/2031	
04/03/2026		15/05/2028		22/11/2028		14/11/2031		04/03/2033	
धनु	31/03/2025	कर्क	16/09/2026	सिंह	26/05/2028	वृष	12/06/2029	मेष	23/12/2031
कर्क	03/07/2025	सिंह	02/11/2026	मिथु	15/06/2028	मेष	09/09/2029	मीन	16/02/2032
सिंह	25/07/2025	मिथु	25/01/2027	वृष	20/07/2028	मीन	13/01/2030	कुंभ	09/03/2032
मिथु	03/09/2025	वृष	23/06/2027	मेष	05/08/2028	कुंभ	05/03/2030	मक	31/03/2032
वृष	13/11/2025	मेष	27/08/2027	मीन	27/08/2028	मक	24/04/2030	धनु	26/05/2032
मेष	14/12/2025	मीन	29/11/2027	कुंभ	05/09/2028	धनु	29/08/2030	कर्क	19/09/2032
मीन	27/01/2026	कुंभ	05/01/2028	मक	14/09/2028	कर्क	21/05/2031	सिंह	16/10/2032
कुंभ	14/02/2026	मक	11/02/2028	धनु	06/10/2028	सिंह	23/07/2031	मिथु	05/12/2032
मक	04/03/2026	धनु	15/05/2028	कर्क	22/11/2028	मिथु	14/11/2031	वृष	04/03/2033

वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - कर्क	
04/03/2033		12/01/2035		11/10/2035		09/07/2036		19/05/2038	
12/01/2035		11/10/2035		09/07/2036		19/05/2038		15/04/2042	
मीन	22/05/2033	कुंभ	25/01/2035	मक	24/10/2035	धनु	26/09/2036	कर्क	03/05/2039
कुंभ	22/06/2033	मक	07/02/2035	धनु	24/11/2035	कर्क	11/03/2037	सिंह	25/07/2039
मक	24/07/2033	धनु	10/03/2035	कर्क	30/01/2036	सिंह	19/04/2037	मिथु	21/12/2039
धनु	11/10/2033	कर्क	16/05/2035	सिंह	15/02/2036	मिथु	30/06/2037	वृष	12/09/2040
कर्क	26/03/2034	सिंह	31/05/2035	मिथु	14/03/2036	वृष	03/11/2037	मेष	06/01/2041
सिंह	04/05/2034	मिथु	29/06/2035	वृष	04/05/2036	मेष	28/12/2037	मीन	21/06/2041
मिथु	15/07/2034	वृष	18/08/2035	मेष	26/05/2036	मीन	17/03/2038	कुंभ	26/08/2041
वृष	18/11/2034	मेष	10/09/2035	मीन	26/06/2036	कुंभ	18/04/2038	मक	01/11/2041
मेष	12/01/2035	मीन	11/10/2035	कुंभ	09/07/2036	मक	19/05/2038	धनु	15/04/2042

वृष - सिंह		वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - मीन		मेष - कुंभ	
15/04/2042		21/03/2043		22/11/2044		18/06/2045		11/04/2046	
21/03/2043		22/11/2044		18/06/2045		11/04/2046		08/08/2046	
सिंह	05/05/2042	मिथु	24/05/2043	मेष	09/12/2044	मीन	23/07/2045	कुंभ	17/04/2046
मिथु	10/06/2042	वृष	15/09/2043	मीन	02/01/2045	कुंभ	05/08/2045	मक	22/04/2046
वृष	12/08/2042	मेष	04/11/2043	कुंभ	12/01/2045	मक	19/08/2045	धनु	06/05/2046
मेष	09/09/2042	मीन	14/01/2044	मक	21/01/2045	धनु	23/09/2045	कर्क	04/06/2046
मीन	18/10/2042	कुंभ	11/02/2044	धनु	15/02/2045	कर्क	04/12/2045	सिंह	11/06/2046
कुंभ	03/11/2042	मक	11/03/2044	कर्क	06/04/2045	सिंह	22/12/2045	मिथु	24/06/2046
मक	19/11/2042	धनु	21/05/2044	सिंह	18/04/2045	मिथु	22/01/2046	वृष	16/07/2046
धनु	28/12/2042	कर्क	17/10/2044	मिथु	10/05/2045	वृष	18/03/2046	मेष	25/07/2046
कर्क	21/03/2043	सिंह	22/11/2044	वृष	18/06/2045	मेष	11/04/2046	मीन	08/08/2046

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - मक	
08/08/2046	
05/12/2046	
मक	14/08/2046
धनु	28/08/2046
कर्क	26/09/2046
सिंह	02/10/2046
मिथु	15/10/2046
वृष	06/11/2046
मेष	16/11/2046
मीन	30/11/2046
कुंभ	05/12/2046

मेष - धनु	
05/12/2046	
28/09/2047	
धनु	09/01/2047
कर्क	22/03/2047
सिंह	09/04/2047
मिथु	10/05/2047
वृष	04/07/2047
मेष	28/07/2047
मीन	01/09/2047
कुंभ	15/09/2047
मक	28/09/2047

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

मेष - कर्क	
28/09/2047	
30/04/2049	
कर्क	28/02/2048
सिंह	04/04/2048
मिथु	08/06/2048
वृष	03/10/2048
मेष	22/11/2048
मीन	03/02/2049
कुंभ	04/03/2049
मक	02/04/2049
धनु	30/04/2049

चर दशा

भोग्य दशा काल : तुला 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

तुला 5 वर्ष	
30/04/1963	
30/04/1968	
वृश्चि	29/09/1963
धनु	29/02/1964
मक	30/07/1964
कुंभ	29/12/1964
मीन	30/05/1965
मेष	29/10/1965
वृष	31/03/1966
मिथु	30/08/1966
कर्क	29/01/1967
सिंह	30/06/1967
कन्या	29/11/1967
तुला	30/04/1968

वृश्चिक 8 वर्ष	
30/04/1968	
30/04/1976	
तुला	29/12/1968
कन्या	30/08/1969
सिंह	30/04/1970
कर्क	30/12/1970
मिथु	30/08/1971
वृष	30/04/1972
मेष	29/12/1972
मीन	30/08/1973
कुंभ	30/04/1974
मक	30/12/1974
धनु	30/08/1975
वृश्चि	30/04/1976

धनु 3 वर्ष	
30/04/1976	
30/04/1979	
वृश्चि	30/07/1976
तुला	29/10/1976
कन्या	28/01/1977
सिंह	30/04/1977
कर्क	30/07/1977
मिथु	29/10/1977
वृष	29/01/1978
मेष	30/04/1978
मीन	30/07/1978
कुंभ	30/10/1978
मक	29/01/1979
धनु	30/04/1979

मकर 12 वर्ष	
30/04/1979	
30/04/1991	
धनु	30/04/1980
वृश्चि	30/04/1981
तुला	30/04/1982
कन्या	30/04/1983
सिंह	30/04/1984
कर्क	30/04/1985
मिथु	30/04/1986
वृष	30/04/1987
मेष	30/04/1988
मीन	30/04/1989
कुंभ	30/04/1990
मक	30/04/1991

कुम्भ 7 वर्ष	
30/04/1991	
30/04/1998	
मीन	29/11/1991
मेष	29/06/1992
वृष	28/01/1993
मिथु	30/08/1993
कर्क	31/03/1994
सिंह	30/10/1994
कन्या	31/05/1995
तुला	30/12/1995
वृश्चि	30/07/1996
धनु	28/02/1997
मक	29/09/1997
कुंभ	30/04/1998

मीन 12 वर्ष	
30/04/1998	
30/04/2010	
मेष	30/04/1999
वृष	30/04/2000
मिथु	30/04/2001
कर्क	30/04/2002
सिंह	30/04/2003
कन्या	30/04/2004
तुला	30/04/2005
वृश्चि	30/04/2006
धनु	30/04/2007
मक	30/04/2008
कुंभ	30/04/2009
मीन	30/04/2010

मेष 3 वर्ष	
30/04/2010	
30/04/2013	
वृष	30/07/2010
मिथु	30/10/2010
कर्क	29/01/2011
सिंह	30/04/2011
कन्या	31/07/2011
तुला	30/10/2011
वृश्चि	29/01/2012
धनु	30/04/2012
मक	30/07/2012
कुंभ	29/10/2012
मीन	28/01/2013
मेष	30/04/2013

वृष 10 वर्ष	
30/04/2013	
30/04/2023	
मेष	28/02/2014
मीन	30/12/2014
कुंभ	30/10/2015
मक	29/08/2016
धनु	30/06/2017
वृश्चि	30/04/2018
तुला	28/02/2019
कन्या	30/12/2019
सिंह	29/10/2020
कर्क	30/08/2021
मिथु	30/06/2022
वृष	30/04/2023

मिथुन 11 वर्ष	
30/04/2023	
30/04/2034	
वृष	30/03/2024
मेष	28/02/2025
मीन	29/01/2026
कुंभ	30/12/2026
मक	29/11/2027
धनु	29/10/2028
वृश्चि	29/09/2029
तुला	30/08/2030
कन्या	31/07/2031
सिंह	29/06/2032
कर्क	30/05/2033
मिथु	30/04/2034

कर्क 12 वर्ष	
30/04/2034	
30/04/2046	
मिथु	30/04/2035
वृष	30/04/2036
मेष	30/04/2037
मीन	30/04/2038
कुंभ	30/04/2039
मक	30/04/2040
धनु	30/04/2041
वृश्चि	30/04/2042
तुला	30/04/2043
कन्या	30/04/2044
सिंह	30/04/2045
कर्क	30/04/2046

सिंह 4 वर्ष	
30/04/2046	
30/04/2050	
कन्या	30/08/2046
तुला	30/12/2046
वृश्चि	30/04/2047
धनु	30/08/2047
मक	30/12/2047
कुंभ	30/04/2048
मीन	29/08/2048
मेष	29/12/2048
वृष	30/04/2049
मिथु	30/08/2049
कर्क	29/12/2049
सिंह	30/04/2050

कन्या 4 वर्ष	
30/04/2050	
30/04/2054	
तुला	30/08/2050
वृश्चि	30/12/2050
धनु	30/04/2051
मक	30/08/2051
कुंभ	30/12/2051
मीन	30/04/2052
मेष	29/08/2052
वृष	29/12/2052
मिथु	30/04/2053
कर्क	30/08/2053
सिंह	29/12/2053
कन्या	30/04/2054

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि	
28/02/2025		29/01/2026		30/12/2026		29/11/2027		29/10/2028	
29/01/2026		30/12/2026		29/11/2027		29/10/2028		29/09/2029	
मेष	28/03/2025	मीन	26/02/2026	धनु	26/01/2027	वृश्चि	27/12/2027	तुला	26/11/2028
वृष	25/04/2025	मेष	26/03/2026	वृश्चि	23/02/2027	तुला	24/01/2028	कन्या	24/12/2028
मिथु	23/05/2025	वृष	22/04/2026	तुला	23/03/2027	कन्या	21/02/2028	सिंह	21/01/2029
कर्क	20/06/2025	मिथु	20/05/2026	कन्या	20/04/2027	सिंह	20/03/2028	कर्क	18/02/2029
सिंह	17/07/2025	कर्क	17/06/2026	सिंह	18/05/2027	कर्क	17/04/2028	मिथु	18/03/2029
कन्या	14/08/2025	सिंह	15/07/2026	कर्क	15/06/2027	मिथु	15/05/2028	वृष	15/04/2029
तुला	11/09/2025	कन्या	12/08/2026	मिथु	13/07/2027	वृष	12/06/2028	मेष	12/05/2029
वृश्चि	09/10/2025	तुला	09/09/2026	वृष	10/08/2027	मेष	10/07/2028	मीन	09/06/2029
धनु	06/11/2025	वृश्चि	07/10/2026	मेष	07/09/2027	मीन	06/08/2028	कुंभ	07/07/2029
मक	04/12/2025	धनु	04/11/2026	मीन	05/10/2027	कुंभ	03/09/2028	मक	04/08/2029
कुंभ	01/01/2026	मक	02/12/2026	कुंभ	01/11/2027	मक	01/10/2028	धनु	01/09/2029
मीन	29/01/2026	कुंभ	30/12/2026	मक	29/11/2027	धनु	29/10/2028	वृश्चि	29/09/2029

मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		मिथु - मिथु	
29/09/2029		30/08/2030		31/07/2031		29/06/2032		30/05/2033	
30/08/2030		31/07/2031		29/06/2032		30/05/2033		30/04/2034	
वृश्चि	27/10/2029	तुला	27/09/2030	कन्या	28/08/2031	मिथु	27/07/2032	वृष	27/06/2033
धनु	24/11/2029	वृश्चि	25/10/2030	तुला	24/09/2031	वृष	24/08/2032	मेष	25/07/2033
मक	22/12/2029	धनु	22/11/2030	वृश्चि	22/10/2031	मेष	21/09/2032	मीन	22/08/2033
कुंभ	19/01/2030	मक	19/12/2030	धनु	19/11/2031	मीन	19/10/2032	कुंभ	19/09/2033
मीन	15/02/2030	कुंभ	16/01/2031	मक	17/12/2031	कुंभ	16/11/2032	मक	17/10/2033
मेष	15/03/2030	मीन	13/02/2031	कुंभ	14/01/2032	मक	14/12/2032	धनु	14/11/2033
वृष	12/04/2030	मेष	13/03/2031	मीन	11/02/2032	धनु	11/01/2033	वृश्चि	12/12/2033
मिथु	10/05/2030	वृष	10/04/2031	मेष	10/03/2032	वृश्चि	08/02/2033	तुला	08/01/2034
कर्क	07/06/2030	मिथु	08/05/2031	वृष	07/04/2032	तुला	08/03/2033	कन्या	05/02/2034
सिंह	05/07/2030	कर्क	05/06/2031	मिथु	05/05/2032	कन्या	04/04/2033	सिंह	05/03/2034
कन्या	02/08/2030	सिंह	03/07/2031	कर्क	02/06/2032	सिंह	02/05/2033	कर्क	02/04/2034
तुला	30/08/2030	कन्या	31/07/2031	सिंह	29/06/2032	कर्क	30/05/2033	मिथु	30/04/2034

कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष		कर्क - मीन		कर्क - कुंभ	
30/04/2034		30/04/2035		30/04/2036		30/04/2037		30/04/2038	
30/04/2035		30/04/2036		30/04/2037		30/04/2038		30/04/2039	
वृष	30/05/2034	मेष	31/05/2035	वृष	30/05/2036	मेष	30/05/2037	मीन	30/05/2038
मेष	30/06/2034	मीन	30/06/2035	मिथु	29/06/2036	वृष	30/06/2037	मेष	30/06/2038
मीन	30/07/2034	कुंभ	31/07/2035	कर्क	30/07/2036	मिथु	30/07/2037	वृष	30/07/2038
कुंभ	30/08/2034	मक	30/08/2035	सिंह	29/08/2036	कर्क	30/08/2037	मिथु	30/08/2038
मक	29/09/2034	धनु	29/09/2035	कन्या	29/09/2036	सिंह	29/09/2037	कर्क	29/09/2038
धनु	30/10/2034	वृश्चि	30/10/2035	तुला	29/10/2036	कन्या	29/10/2037	सिंह	30/10/2038
वृश्चि	29/11/2034	तुला	29/11/2035	वृश्चि	29/11/2036	तुला	29/11/2037	कन्या	29/11/2038
तुला	30/12/2034	कन्या	30/12/2035	धनु	29/12/2036	वृश्चि	29/12/2037	तुला	30/12/2038
कन्या	29/01/2035	सिंह	29/01/2036	मक	28/01/2037	धनु	29/01/2038	वृश्चि	29/01/2039
सिंह	28/02/2035	कर्क	29/02/2036	कुंभ	28/02/2037	मक	28/02/2038	धनु	28/02/2039
कर्क	31/03/2035	मिथु	30/03/2036	मीन	30/03/2037	कुंभ	31/03/2038	मक	31/03/2039
मिथु	30/04/2035	वृष	30/04/2036	मेष	30/04/2037	मीन	30/04/2038	कुंभ	30/04/2039

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - मक		कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या	
30/04/2039		30/04/2040		30/04/2041		30/04/2042		30/04/2043	
30/04/2040		30/04/2041		30/04/2042		30/04/2043		30/04/2044	
धनु	31/05/2039	वृश्चि	30/05/2040	तुला	30/05/2041	वृश्चि	30/05/2042	तुला	31/05/2043
वृश्चि	30/06/2039	तुला	29/06/2040	कन्या	30/06/2041	धनु	30/06/2042	वृश्चि	30/06/2043
तुला	31/07/2039	कन्या	30/07/2040	सिंह	30/07/2041	मक	30/07/2042	धनु	31/07/2043
कन्या	30/08/2039	सिंह	29/08/2040	कर्क	30/08/2041	कुंभ	30/08/2042	मक	30/08/2043
सिंह	29/09/2039	कर्क	29/09/2040	मिथु	29/09/2041	मीन	29/09/2042	कुंभ	29/09/2043
कर्क	30/10/2039	मिथु	29/10/2040	वृष	29/10/2041	मेष	30/10/2042	मीन	30/10/2043
मिथु	29/11/2039	वृष	29/11/2040	मेष	29/11/2041	वृष	29/11/2042	मेष	29/11/2043
वृष	30/12/2039	मेष	29/12/2040	मीन	29/12/2041	मिथु	30/12/2042	वृष	30/12/2043
मेष	29/01/2040	मीन	28/01/2041	कुंभ	29/01/2042	कर्क	29/01/2043	मिथु	29/01/2044
मीन	29/02/2040	कुंभ	28/02/2041	मक	28/02/2042	सिंह	28/02/2043	कर्क	29/02/2044
कुंभ	30/03/2040	मक	30/03/2041	धनु	31/03/2042	कन्या	31/03/2043	सिंह	30/03/2044
मक	30/04/2040	धनु	30/04/2041	वृश्चि	30/04/2042	तुला	30/04/2043	कन्या	30/04/2044

कर्क - सिंह		कर्क - कर्क		सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि	
30/04/2044		30/04/2045		30/04/2046		30/08/2046		30/12/2046	
30/04/2045		30/04/2046		30/08/2046		30/12/2046		30/04/2047	
कन्या	30/05/2044	मिथु	30/05/2045	तुला	10/05/2046	वृश्चि	09/09/2046	तुला	09/01/2047
तुला	29/06/2044	वृष	30/06/2045	वृश्चि	20/05/2046	धनु	19/09/2046	कन्या	19/01/2047
वृश्चि	30/07/2044	मेष	30/07/2045	धनु	30/05/2046	मक	29/09/2046	सिंह	29/01/2047
धनु	29/08/2044	मीन	30/08/2045	मक	10/06/2046	कुंभ	09/10/2046	कर्क	08/02/2047
मक	29/09/2044	कुंभ	29/09/2045	कुंभ	20/06/2046	मीन	20/10/2046	मिथु	18/02/2047
कुंभ	29/10/2044	मक	29/10/2045	मीन	30/06/2046	मेष	30/10/2046	वृष	28/02/2047
मीन	29/11/2044	धनु	29/11/2045	मेष	10/07/2046	वृष	09/11/2046	मेष	11/03/2047
मेष	29/12/2044	वृश्चि	29/12/2045	वृष	20/07/2046	मिथु	19/11/2046	मीन	21/03/2047
वृष	28/01/2045	तुला	29/01/2046	मिथु	30/07/2046	कर्क	29/11/2046	कुंभ	31/03/2047
मिथु	28/02/2045	कन्या	28/02/2046	कर्क	10/08/2046	सिंह	09/12/2046	मक	10/04/2047
कर्क	30/03/2045	सिंह	31/03/2046	सिंह	20/08/2046	कन्या	19/12/2046	धनु	20/04/2047
सिंह	30/04/2045	कर्क	30/04/2046	कन्या	30/08/2046	तुला	30/12/2046	वृश्चि	30/04/2047

सिंह - धनु		सिंह - मक		सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - मेष	
30/04/2047		30/08/2047		30/12/2047		30/04/2048		29/08/2048	
30/08/2047		30/12/2047		30/04/2048		29/08/2048		29/12/2048	
वृश्चि	10/05/2047	धनु	09/09/2047	मीन	09/01/2048	मेष	10/05/2048	वृष	08/09/2048
तुला	21/05/2047	वृश्चि	19/09/2047	मेष	19/01/2048	वृष	20/05/2048	मिथु	19/09/2048
कन्या	31/05/2047	तुला	29/09/2047	वृष	29/01/2048	मिथु	30/05/2048	कर्क	29/09/2048
सिंह	10/06/2047	कन्या	10/10/2047	मिथु	08/02/2048	कर्क	09/06/2048	सिंह	09/10/2048
कर्क	20/06/2047	सिंह	20/10/2047	कर्क	19/02/2048	सिंह	19/06/2048	कन्या	19/10/2048
मिथु	30/06/2047	कर्क	30/10/2047	सिंह	29/02/2048	कन्या	29/06/2048	तुला	29/10/2048
वृष	10/07/2047	मिथु	09/11/2047	कन्या	10/03/2048	तुला	10/07/2048	वृश्चि	08/11/2048
मेष	20/07/2047	वृष	19/11/2047	तुला	20/03/2048	वृश्चि	20/07/2048	धनु	18/11/2048
मीन	31/07/2047	मेष	29/11/2047	वृश्चि	30/03/2048	धनु	30/07/2048	मक	29/11/2048
कुंभ	10/08/2047	मीन	10/12/2047	धनु	09/04/2048	मक	09/08/2048	कुंभ	09/12/2048
मक	20/08/2047	कुंभ	20/12/2047	मक	19/04/2048	कुंभ	19/08/2048	मीन	19/12/2048
धनु	30/08/2047	मक	30/12/2047	कुंभ	30/04/2048	मीन	29/08/2048	मेष	29/12/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	79%	व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	67%	व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	67%	सुख
हीरा	शुक्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	53%	दम्पति, धनार्जन
पन्ना	बुध	47%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य, व्यय
मूंगा	मंगल	41%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	0%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

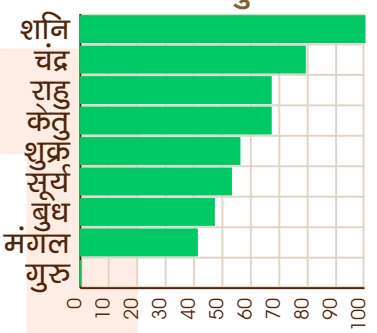

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	06/01/1965	31%	67%	16%	55%	0%	62%	100%	73%	55%
बुध	06/01/1982	59%	67%	41%	61%	0%	62%	100%	67%	67%
केतु	06/01/1989	31%	67%	52%	47%	0%	62%	89%	55%	80%
शुक्र	06/01/2009	31%	67%	41%	55%	0%	69%	100%	73%	73%
सूर्य	06/01/2015	66%	86%	52%	47%	12%	38%	89%	55%	55%
चंद्र	06/01/2025	59%	92%	41%	55%	0%	56%	100%	55%	55%
मंगल	07/01/2032	59%	86%	58%	22%	12%	56%	100%	55%	73%
राहु	06/01/2050	31%	67%	16%	47%	0%	62%	100%	80%	55%
गुरु	06/01/2066	59%	86%	52%	22%	24%	38%	100%	67%	67%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम व मोती रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, लहसुनिया, हीरा एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण

करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति

का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर

व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आपके स्वाभिमान भाव में वृद्धि होगी। आपकी कठोरता में कमी होगी। माणिक्य रत्न आपको स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है। सूर्य रत्न धारण करने से आपके वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होगा। लाभ और उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको अपनी अनुशासन योग्यता में कमी करनी होगी। यह रत्न स्वतंत्र व्यापार में अधिकार क्षमता बढ़ायेगा। माणिक्य रत्न की शुभता आपमें निस्वार्थ भावना का विकास करेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में

स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते है। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिषक और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। द्वादशेश बुध का रत्न पन्ना आपको धार्मिक कार्यो में अरुचि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको तीर्थयात्राओं में असुविधा का अनुभव होगा। पन्ना रत्न पहनने पर धर्म क्रियाओं, धर्म यात्राओं पर किए गये व्यय अत्यधिक और व्यर्थ हो सकते है। यह रत्न आपको गुरुओं के साथ समय बिताने के योग बना सकता है। पन्ना रत्न पहनने पर धर्म क्रियाओं पर आपमें तर्क भाव आ सकता है। रत्न में शुभता की कमी आपको धार्मिक विषयों पर लेखन कार्य करने में दिक्कतें दे सकती है। श्रेष्ठजनों के प्रति आपके द्वारा सम्मान में कमी हो सकती है। रत्न की प्रतिकूलता आपको जन्म स्थान से दूर ले जा सकता है। पिता से असहयोग की स्थिति बन सकती है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सैनिक, हथियार से जुड़े काम या विभागों से जुड़े कामों में कार्यरत होना आपको कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपके सुख एवं यश को बाधित कर सकता है। आपमें नेतृत्व शक्ति की कमी आपकी सफलता को प्रभावित कर सकती है। मूंगा रत्न आपमें अत्यधिक जोश, साहस, ऊर्जा और उत्तेजना भाव को बढ़ाकर आपके द्वारा वादि-ववाद उत्पन्न करा सकता है। मूंगा रत्न से कार्यक्षेत्र में आपको लड़ाई झगड़ों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। साहस की अधिकता व्यवसायिक क्षेत्र में आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में धन विनियोजन करा

हानि दे सकती है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यों को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(06/01/2015 - 06/01/2025)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, पन्ना, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण

करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(06/01/2025 - 07/01/2032)

मंगल की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(07/01/2032 - 06/01/2050)

राहु की दशा में आपका नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(06/01/2050 - 06/01/2066)

गुरु की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 06/01/1965

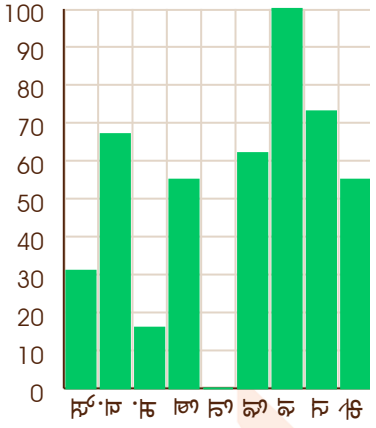

बुध - 06/01/1982

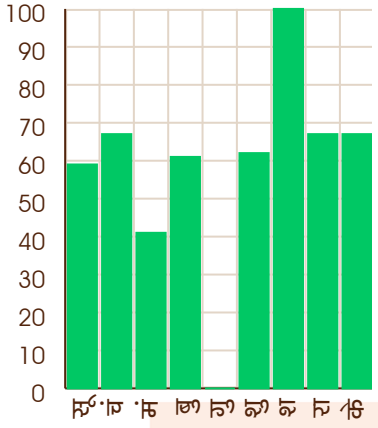

केतु - 06/01/1989

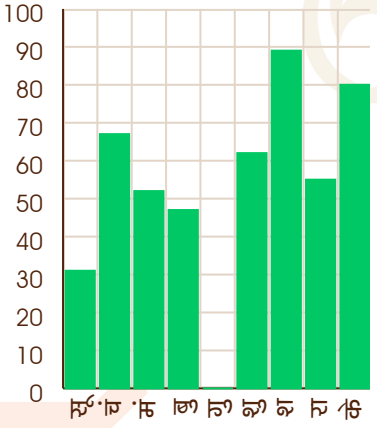

शुक्र - 06/01/2009

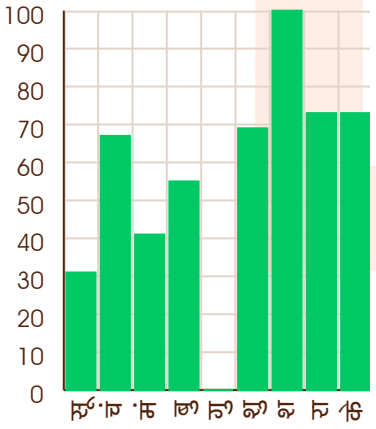

सूर्य - 06/01/2015

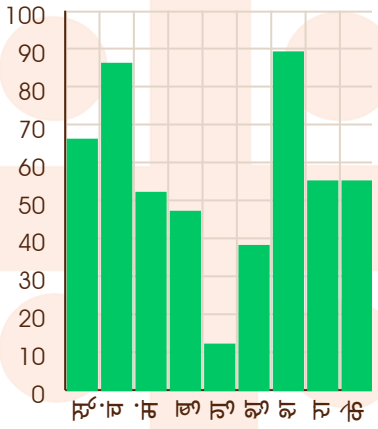

चन्द्र - 06/01/2025

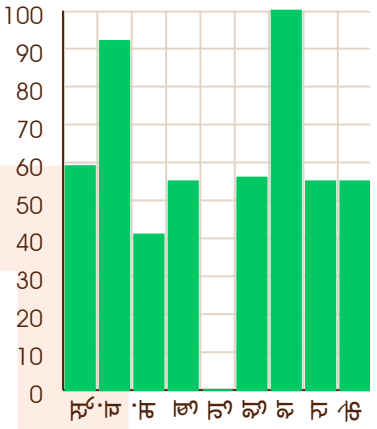

मंगल - 07/01/2032

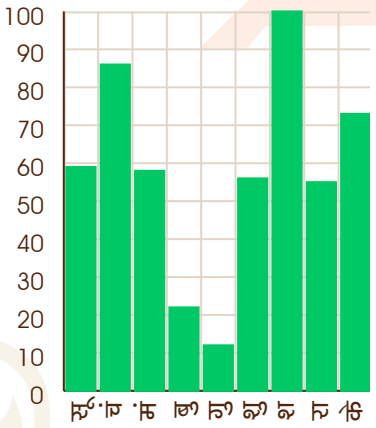

राहु - 06/01/2050

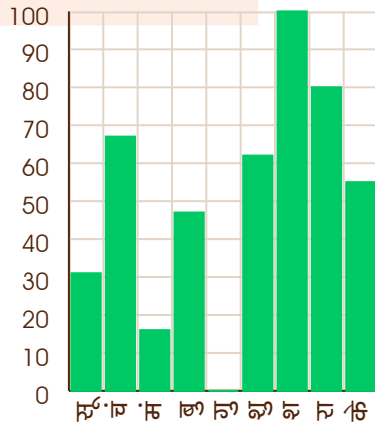

गुरु - 06/01/2066

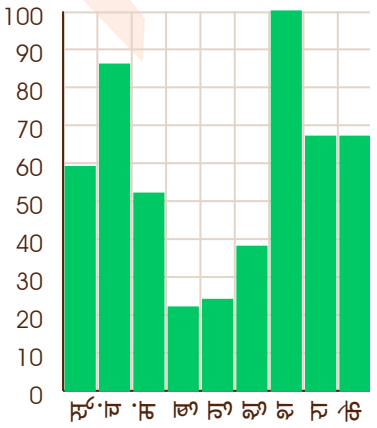

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और

दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	अल्प बचत
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती है परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में

खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 30 है। तीन एवं शून्य का योग तीन आपका मूलांक होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह को माना गया है। शून्य शिव है, अखण्ड़ ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

मूलांक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव वश आप एक अनुशासन प्रिय तथा कठोर व्यक्ति के रूप में चर्चित रहेंगे। आपकी स्वयं अनुशासन में रहने की इच्छा रहेगी और यही अपेक्षा दूसरों से करेंगे। मातहतों के साथ आपकी कार्यशैली कठोर रहेगी। इससे आपको अधीनस्थों के विरोध, आलोचनाओं का शिकार होना पड़ेगा। आपका रूझान ज्ञान की ओर होने से आप विद्याध्यन के क्षेत्र में सफल रहेंगे। बौद्धिक स्तर के कार्य आप भलीभाँति संपादित करेंगे। कार्यों में आपकी मौलिकता झलकेगी। आपकी मुखिया बनने की महत्वाकांक्षा कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत रहेगी और दूसरों पर शासन करने में निपुण रहेंगे। धर्मक्षेत्र, कार्यक्षेत्र, समाजसेवा इत्यादि के कार्यों में आपको ख्याति प्राप्त होगी।

तर्क, ज्ञान शक्ति आपमें होने से आप मानसिक रूप से संतुलित रहेंगे तथा इसकी छाया आपके कार्यों में दृष्टि गोचर होगी। आप सामाजिक भलाई के कार्यों में रुचि लेंगे एवं कभी-भी किसी का अहित नहीं करेंगे। शून्य प्रभाववश आप शान्त, कोमल हृदय के वाणी से मधुर, सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले धर्म-कर्म के क्षेत्र में अग्रण्य व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 3 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 3 और भाग्यांक 8 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी इन दोनों अंकों से कुछ शुभ-अशुभ घटनाएं घटित होंगी। साधारणतः, शनि-गुरु के प्रभाववश, रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप योग्य व्यक्ति होते हुए भी आपकी तरक्की धीरे-धीरे होगी। भले ही आप गरीब घर में पैदा हुए हों, लेकिन प्रौढ़ावस्था तक पहुंचते-पहुंचते आप काफी स्थायी

धन-संपदा एकत्रित कर लेंगे। आपके विचारों में गहराई रहेगी एवं जो भी कार्य आप करेंगे, उसको स्थायित्व देने की आपकी पूरी-पूरी कोशिश रहेगी। असफलताओं को आप आसानी से सहन नहीं कर पाएंगें, लेकिन उनसे सीख अवश्य प्राप्त करेंगे। अपने कार्यक्षेत्र में आपका एक ही लक्ष्य रहेगा, कि आप हमेशा सफल रहें और दूसरे लोग आपका गुणगान करें। सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आप एक प्रगतिशील रुढ़िवादी, आधुनिक व्यक्ति के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र कैसा भी हो, आपको अपनी मेहनत पर विश्वास रहेगा एवं नीचे से ऊपर की ओर उठ कर ऊंचाइयों को प्राप्त करने में आप सक्षम रहेंगे।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंम्भ हो कर 35 वर्ष पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 44 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः यदि आप उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं तो शीघ्र सफलता मिलेगी।

अशुभ तारीखें

आपको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना आपके लिए अहितकर रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपको विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की

3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां आपके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः आप ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

शुभ वाहन नं

अगर आप यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो आपको चाहिए की कमरे का नंबर आपके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का रहे। आपका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। आपके कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि आप वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। आपके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो आपकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग अशुभता कष्ट और विपत्ति के समय आपको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पुखराज आपके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब आप सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे आप सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र "ओम् नमो भगवते वासुदेवाय" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र - ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म विश्वाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में तुला लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर वृष राशि का नवमांश एवं मिथुन राशि का द्रेष्काण उदित था। इस जन्म प्रभाव से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप बहुत चालाक एवं धूर्त व्यक्ति हैं। आप धन संचय करने में कोई अवरूद्धता नहीं चाहते। आप अपनी महत्वकांक्षा से संबंधित कार्य संपादन में एक भाग्यशाली प्राणी हैं। आपके जीवन की उज्वलता किसी भी प्रकार से निपटाएंगे। परंतु आपके जीवन का सर्वप्रथम 21 वें वर्ष से 28 वे वर्ष तथा द्वितीय 28 वे वर्ष से 34 वें वर्ष तक का समय अति अनुकूल एवं प्रगतिकारक समय रहेगा।

आपके जीवन में धन उपार्जन से संबंधित दूर-दूर तक कतिपय संबंध रहेंगे। अर्थात् आपके संबंध धनोपार्जन में सहायक होंगे। आप अपने दिमाग को तथाकथित रूप से द्वि-पक्षीय रखकर प्रेरित करते हो तथा अपने धनकोष को विज्ञापित करके प्रस्तुत करते हो। आप सदैव अन्यों के प्रति इर्ष्या रखते हों तथा अपनी संपत्ति उर्पाजन के लिए सदैव प्रेरित रहते हो। आपकी शक्ति अन्यों की अपेक्षा अति उत्तम है।

आप निःसंदेह अति कुशाग्र बुद्धि के हैं तथा आपकी संलग्नता उज्वल भविष्य का प्रतीक है। आपको यह ज्ञात है कि अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए। परंतु आपका अड़ियल पन आपकी अपरिपक्वता की सूचना है। जन सामान्य आपके इस व्यवहार को पसंद नहीं करते। अतः कुछ व्यक्ति आपके प्रतिपक्षी हो जाते हैं। परंतु आपका दृढ़ रचनात्मक चरित्र आपका सहायक होकर विपक्षी को अंत समय में पराजित कर देते हैं। इस प्रकार वे लोग सदैव आपका तहेदिल से समर्थन करते हैं।

अतएव आप अच्छी प्रकार अपनी योजना की वास्तविकता को धीरे-धीरे कार्यान्वित करेंगे। इस प्रकार आप अपने क्षतिग्रस्त राह को पुननिर्मित करें। यदि आप धैर्यपूर्वक अपने व्यवहार को समझ लें तो आप अत्यंत लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने मित्रतापूर्ण व्यवहार हेतु सक्षम होकर अपने लाभ जनक प्रवृति में वृद्धि करेंगे।

आपको अपने व्यवसाय एवं अपनी गृह व्यवस्था के प्रति युक्ति संगत होना चाहिए। आपको अपने आनंदप्रद गृह व्यवस्था हेतु अपनी पत्नी के साथ मतैक्यता रखनी चाहिए।

आप मात्र अपनी जीवन संगिनी के साथ क्षणिक प्रेम संबंध न रखें। आपको सदैव ही नये प्रेम संबंध के प्रति संपर्क असंतोषजनक और अस्थायी है। अन्तोगत्वा आपको अपने प्रेम संबंध में समानता हेतु आश्वस्त होकर पारिवारिक जीवन को आनन्दमय बनाना चाहिए।

आप अपने व्यवसाय हेतु वैदेशिक पर्यटन एजेन्सी का व्यवहार कर सकते हैं। आप अपने व्यवसाय हेतु शेयर मार्केट का कार्य भी कर सकते हैं।

आप विविध प्रकार के उत्तेजिक कार्यकलाप आपकी वृद्धावस्था में रोगग्रस्त होने का सूचक है जिस वजह से आप कई प्रकार के रोगों से अक्रान्त हो सकते हैं। यथा मस्तिष्क रोग, ट्यूमर आदि रोग से प्रभावित हो सकते हैं। अतः आपको विधिवत अपने खान-पान के संबंध

अपने डाक्टर से सतत परीक्षण कराते रहना चाहिए।

आपके लिए अंकों में उपयुक्त अंक 1, 2, 4 एवं 7 अंक धनोपार्जन हेतु पूर्ण अनुकूल है। आपके लिए अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक सर्वथा प्रतिकूल है।

आपके लिए रंगों में रंग हरा एवं पीला रंग अनुपयुक्त हैं। आपके लिए रंग नारंगी एवं सफेद रंग मनभावन एवं शुभ है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शनि भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों से युक्त होंगे तथा आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की आपके पास बहुलता होगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका प्रभाव रहेगा एवं सामाजिक जनों से वांछित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। आप की कुंडली में किसी वृद्ध व्यक्ति की चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति के भी योग बनते है। इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा अन्यत्र भी स्वपरिश्रम पराक्रम एवं बुद्धिमता से धन सम्पत्ति अर्जित करने में सफल होंगे। आपको चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से लाभ होगा। अतः दोनो पर ही आप यथोचित मात्रा में निवेश कर सकते है।

आप को उत्तम आवास की प्राप्ति होगी एवं घर भी आधुनिक रूप से पूर्ण रूपेण सुसज्जित होगा। इसके आकर्षण एवं स्वछता के लिए आप व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका जीवन में आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा भौतिक्ता एवं आधुनिक विचारों से युक्त होगी उनमें व्यवहार कुशलता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने इन्हीं गुणों से वह परिवार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होंगी। परिवार के सभी सदस्य उन्हें यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव विद्यमान होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित मात्रा में आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होगी एवं आपकी उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। आपभी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी सी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्याध्ययन में आप प्रारंभ से ही रूचिशील होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छी सफलताएं अर्जित करेंगे। इसी संदर्भ में आप स्नातक परीक्षा अच्छी श्रेणी में उतीर्ण करेंगे जिससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं वन्धुवर्ग से वांछित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी डिग्री अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

नैसर्गिक पापी ग्रह शनि की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था के बाद रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः युवावस्था से ही आप उचित खान-पान का ध्यान रखें तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षित होंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा सूर्य भी अपनी उच्च राशि में सप्तम भाव में ही स्थित है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी एवं साहसी होता है तथा सूर्य के प्रभाव से वह महत्वाकांक्षी उच्च पदाधिकारी एवं प्रभावशाली होता है एवं सांसारिक कार्यो को दक्षता पूर्वक सम्पन्न करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी शिक्षित बुद्धिमती एवं तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा उनमें प्रबल महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने पराक्रम एवं बुद्धिमता से वह किसी प्रभावशाली पद को भी सुशोभित कर सकती है। उच्चस्थ सूर्य के प्रभाव से वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी गेहुएं रंग की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह आकर्षक होंगी तथा शरीर के अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। अपने सौन्दर्य की वृद्धि के लिए आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी अवसरानुकूल प्रयोग करेंगी तथा महत्वाकांक्षी प्रवृति होने के कारण समस्त भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए रूचिशील रहेंगी।

आपका विवाह स्वेच्छा से चुनी हुई कन्या के साथ होगा या प्रेम विवाह भी हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं आपस में प्रेम तथा आकर्षण बना रहेगा। सुख दुख में आप एक दूसरे का विशेष ध्यान रखेंगे अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर विश्वास तथा समानता का भाव रहेगा लेकिन पत्नी की तेजस्विता से आपको यदा कदा असुविधा की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह एक अच्छे शिक्षित परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वे सम्मानीय होंगे। सास ससुर से आपके सामान्यतया अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपस में प्रेम तथा विश्वास का भाव रहेगा। साथ ही एक दूसरे को यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्रदान करेंगे।

सप्तम भाव में उच्चस्थ सूर्य के प्रभाव से आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगी। साथ ही देवर एवं ननदों को भी आपके व्यवहार तथा विद्वता से प्रभावित करेंगी जिससे वे भी उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी रहेगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी अतः यदि अपने से अधिक शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति से साझेदारी प्रारंभ की जाए तो उसमें इच्छित सफलता मिलेगी एवं आपस में विश्वसनीयता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही मंगल भी मित्र एवं नीचराशि में दशमभाव में ही स्थित है। कर्क राशि जलतत्व एवं मंगल अग्नितत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे। ऐसे सामायिक परिवर्तनों से आपको यथोचित लाभ की प्राप्ति होगी तथा मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

दशमभाव में कर्क राशि में मंगल के प्रभाव से आपके लिए आजीविका के क्षेत्र औषधि विज्ञान, जलसेना, पुलिस, इंजीनियरिंग, होटल प्रबन्धन, कोरियर सेवा अग्नि से संबधित विभाग, पराक्रमी क्षेत्र, जहाजरानी आदि विभाग उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आप सुगमता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना चांदी आदि धातु का कार्य, विद्युत उपकरणों का उत्पादन, दूध, घी एवं दही का व्यापार, वस्त्र एवं कलात्मक वस्तुओं का क्रय विक्रय या आयात निर्यात संबंधी कार्यो से आपको वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी तथा इसमें उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही प्रगति में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक आपको इन्हीं क्षेत्रों या वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

दशमभाव में कर्क राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त को अर्जित करेंगे। साथ ही आपको यश की भी प्राप्ति होगी एवं सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था या क्लब आदि में भी कोई सम्मानित पद प्राप्त करेंगे इससे आपकी यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी लेकिन नीचस्थ मंगल के प्रभाव से इसमें आपको विलम्ब तथा व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिताजी तेजस्वी पराक्रमी बुद्धिमान एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे परन्तु स्वभाव में उग्रता का भाव होगा। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य वे प्रभावशाली होंगे तथा उनके कल्याणकारी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उचित शिक्षा का प्रबंध करने में समर्थ होंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी वे आपको काफी सहयोग देंगे तथा उनके प्रभाव से आपको यथोचित सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आप भी पिता के सम्मान में वृद्धि करने के लिए परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप दोनों के मध्य वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे संबंधों में मधुरता कम ही रहेगी एवं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे। अतः ऐसी परिस्थितियों की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुष्य नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, नाड़ी मध्य, योनि मेष तथा देव गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ड" या "डा" अक्षर से होगा।

देवताओं के पूजार्चन से प्राप्त धन से आप युक्त रहेंगे तथा बुद्धि भी आपकी तीव्र होगी। अतः आपके समस्त कार्यकलाप बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। आपकी नाना प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में रूचि रहेगी तथा अध्ययन द्वारा ही इनका ज्ञान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपका शरीर सुन्दर, स्वस्थ तथा प्रसन्नचित रहेगा व अन्य जनों के भी प्रिय रहेंगे। आप जीवन के समस्त सुखों का उपभोग करने वाले पुरूष होंगे तथा आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता की भावना का समावेश स्वभाव से ही आपके अर्न्तमन में व्याप्त रहेगी। साथ ही पुत्र संतति से भी आप हमेशा युक्त रहेंगे व उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके मन में चंचलता का सर्वथा अभाव रहेगा तथा चित्त शान्त रहेगा तथा शान्त चित्त से ही कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

आप ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना रखेंगे तथा समयानुसार उनकी पूजा तथा सत्कार करते रहेंगे। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आप राजप्रिय होंगे तथा उच्चाधिकार वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। अपने बन्धुवर्ग का भी आपको आजीवन सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

आप हमेशा स्वस्थ तथा मन से प्रसन्न रहेंगे तथा माता पिता की खूब सेवा करेंगे। उनके प्रति अपने कर्तव्य पालन करने के लिए हमेशा सजग रहेंगे। आपका सामाजिक व्यवहार विनयशील होगा तथा सब लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। अपने वर्ग में आप एक सम्माननीय तथा आदरणीय पुरूष हो सकते हैं। इस प्रकार आप अपने जीवन में नाना प्रकार के धन वाहनों तथा सुखों का सम्पूर्ण उपभोग करेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आपका स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अपने समस्त कार्यों को कुशलता से सम्पन्न करने की क्षमता को प्राप्त करेंगे तथा पूर्ण जीवन भर अत्यधिक धन से युक्त होकर धनवान बनेंगे। आपके पराक्रम के प्रभाव को सभी मानेंगे। आपकी प्रवृति स्वभाव से ही धार्मिक रहेगी फलतः ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनका स्नेह तथा आशीर्वाद आपको प्राप्त होता रहेगा। आप की बुद्धि तीव्र होगी तथा आपकी बुद्धिबल से समाज को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। यदा कदा आप में क्रोध की मात्रा की अधिकता भी उत्पन्न होगी एवं आप अपने को बहुत ही दुःखी भी अनुभव करेंगे। आप सन्मित्रों के मित्र होंगे। साथ ही अन्य कार्य तथा कलाओं के विषय में भी आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। शारीरिक बल भी आप में मध्यम रहेगा। तथा घर से बाहर

ीनय स्थान पर स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से मिश्रित होगी। आप अत्यन्त रूपवान तथा तेज से युक्त रहेंगे। आप स्वर्जित धन से धनवान कहलाएंगे। ब्राहमण तथा देवताओं की आप सेवा करने वाले होंगे तथा इनके प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा रहेगी। आप उत्तमकुल में उत्पन्न लोगों की सेवा करेंगे तथा उन्हें सहयोग देकर अपने को कृतार्थ समझेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के विषय में आप ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप एक साथ एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं के भी जानने वाले होंगे। आपका चाल चलन श्रेष्ठ तथा अनुकरणीय होगा। पुष्पों की सुगन्ध सूंघना तथा जल में क्रीड़ा करने के आप बहुत इच्छुक होंगे तथा इस कार्य में पूर्ण आनन्द की अनुभूति करेंगे। समाज में आपकी ख्याति तथा कीर्ति चारों तरफ व्याप्त रहेगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपके गले का भाग अल्प मात्रा में मोटा होगा तथा स्त्रीवर्ग के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उनसे पराजित रहेंगे। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे। आपके द्वारा बहुत से मकानों का निर्माण किया जायेगा। साथ ही जल में क्रीड़ा करने से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। कद आपका सामान्य रहेगा तथा टेढी चाल से जल्दी जल्दी चलना आपकी प्रकृति होगी। इसके अतिरिक्त संतति संख्या में पुत्रों की संख्या थोड़ी रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वको द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को अर्जित करके उनके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। ज्योतिष शास्त्र में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इसके अच्छे ज्ञाता भी होंगे। आपके जीवन में चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि अर्थात उतार चढ़ाव आते रहेंगे।

परिणामस्वरूप संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में हो सकते हैं। बलपूर्वक या अन्य दवाब से आपसे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों के आप प्रिय रहेंगे तथा आपकी जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में रूचि बनी रहेगी तथा इन कार्यों में आप सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्यशाली पुरूष होने के कारण आप अपने अधिकांश कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। आप धैर्य के साथ अपने समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। आप अपने घर के स्वामी होंगे लेकिन आपका अधिकांश समय घूमने फिरने तथा यात्राओं में ही व्यतीत होगा। साथ ही आप राज्य या सरकार में किसी भी उच्चपद को भी सुशोभित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप हमेशा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक मधुर एवं प्रियवचन ही बोलेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुर होगी जो अन्य जनों को भी प्रिय लगेगी। आप की बुद्धि सरल होगी तथा आप बड़ी ही सुगमता से अपने विचारों का आदान प्रदान करेंगे। साथ ही आप थोडी मात्रा में भोजन के प्रेमी होंगे। गुणों का आप ज्ञान रखेंगे तथा अपने आप भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सर्वथा युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सम्पूर्ण जीवन में धन ऐश्वर्य तथा अन्य प्रकार की सम्पत्तियों तथा द्रव्यों से भी युक्त रहेंगे।

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा तथा स्वाभाविक रूप से दानशीलता की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे। इसके लिए अपने जीवन में जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को यथाशक्ति सेवा तथा सहयोग करते रहेंगे। आपकी प्रकृति अत्यन्त ही सादगी से पूर्ण होगी। दिखावेपन तथा भौतिकता को आप पसन्द नही करेंगे। साथ ही आप एक श्रेष्ठ विद्वान भी हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में पैदा होने के कारण आप स्वभाव से अत्यधिक उत्साही होंगे तथा उत्साह से ही सम्पूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप युद्धविद्या में कुशल होंगे तथा आपके पराक्रम से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आप विपुल ऐश्वर्य तथा वैभव के स्वामी भी आजीवन बने रहेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए आप हमेशा तन मन धन से तत्पर रहेंगे। अतः समाज से आप आदर एवं सम्मान की प्राप्ति करेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं

होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होगी तथा हानि योग बनेंगे। साथ ही बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता हो रही हो अथवा व्यापार या नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय में जाकर विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों

को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या

मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप सरकारी पद पर हैं तो आपका मिजाज गर्म होगा। जो आपको लाभ देगा। आपके पारिवारिक संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके जन्म से पहले मां-बाप की आर्थिक स्थिति खराब परंतु जन्म के बाद ठीक हुई होगी। पराई ममता या दूसरी स्त्री साथ देगी। शरीर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपका परिवार ठीक रहेगा। आपकी औलाद के पास धन रहेगा। आपके हौसले बुलंद रहेंगे। आप आला किस्म के मर्द होंगे। आपको बिना यत्न बुजुर्गों का धन मिलेगा। आपके ससुराल वालों से संबंध अच्छे रहेंगे। आप धन की खूब बचत करेंगे। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी, आपका पत्नी के अतिरिक्त और भी औरतों से संबंध हो सकते हैं या दो विवाह भी हो सकते है। आपकी लड़की अच्छे घर में ब्याही जाएगी। भागीदारी के कामों से लाभ मिलेगा। आपकी ज्योतिष, कर्मकांड में रुचि रहेगी। अंत समय में आप अपने घर पर ही मौजूद रहेंगे।

यदि आपने भागीदार से झगड़ा किया, धन के लिए ससुराल वालों को तंग किया, झूठ-झूठ में विश्वास रखा, सरकार का टैक्स चुराया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से ससुराल के खानदान का समय बिगड़ जाएगा। पत्नी अस्वस्थ्य हो सकती है। 25 वर्ष तक स्त्री का सुख मंदा रहेगा। यदि आप नौकरी या व्यापार करते हैं स्वभाव गर्म होगा तो हानि होगी। सरकारी विभाग में नौकरी हैं तो गर्म स्वभाव रखना आपकी आदत होगी। कभी-कभी नर संतान से परेशानी रहेगी या आपके परिवार में लड़का नंगा या पागल हो सकता है। । यदि आप चोरी-ठगी करेंगे तो आर्थिक स्थिति खराब होती जायेगी। ज्यादा गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामदी बर्बादी की निशानी हो सकती है। आपके पैर में कुछ तकलीफ होगी। पत्नी से झगड़ा, जुदाई या तलाक हो, ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नौकरी करते हैं या दुकानदार हैं तो गर्म मिजाज न रहें।
2. सरकारी विभाग में नौकर हैं तो गर्म मिजाज रखें।

उपाय :

1. घर से काम पर जाते समय चीनी खाकर पानी पीकर जायें।
2. रात को रोटी पकाने के बाद गैस-चूल्हा या चूल्हे की आग दूध के छींटे देकर बुझावें। वह गैस चूल्हा या चूल्हा/सूर्योदय से पहले न जलावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप

चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो

आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको परिश्रम करते रहना पड़ेगा। आप गुप्त विद्या के जानकार या गुप्त विद्या से लगाव रखने वाले हैं। 34 वर्ष के बाद समय अच्छा हो जाएगा। राजदरबार से सम्मान मिलेगा, ससुराल से लाभ मिलेगा।

यदि आपके घर में लाल, गुलाबी, महरून आदि रंग के कोरे कपड़े होंगे या मिट्टी का कोरा बर्तन होगा घर की सीढ़ियां टूटी हुई होंगी, परस्त्री संबंध रखेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका धन रोग-बीमारी में बहुत खर्च होगा। गुप्त रूप से तबाह होते रहेंगे। कुछ हानिकारक समय आ सकता है। आपको काफी सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए अन्यथा जेल भी जाना पड़ सकता है। अस्पताल, वीरान अथवा घर से बाहर समय बिताना पड़ सकता है। नौकरी या व्यवसाय में अचानक बाधा आ सकती है। आय में आधे की क्षति हो जाएगी जो समझ में नहीं आएगी। दंत या नाड़ियों में बीमारी हो सकती है। पत्नी का मारक योग या दो पत्नी रखेगे। धन-दौलत भी खतरे में पड़ सकती है। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। 32 से 34 वर्ष की आयु में धनाभाव के कारण अन्य स्रोत में रुकावट ही होगी। 16 से 21 वर्ष तक की आयु का समय एकदम बेकार रहेगा। उम्र के 34 वर्ष तक अच्छा विकास नहीं होगा। धन-सम्पत्ति पर बुरा असर पड़ेगा। आलस्य के कारण उल्टा प्रभाव पड़ेगा और आर्थिक नुकसान होगा। जीवन में दीमक लग जाएगा अर्थात् आपके सुख के साधन खराब हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. लाल, गुलाबी, महरुन रंग के कोरे कपड़े न रखें।
2. घर में धर्म स्थान की जगह न बदलें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. काला अंडरवियर पहनें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से गृहस्थ जीवन में भी आप साधू स्वभाव के होंगे। आपको कोई काम करने की अधिक जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पिता दीर्घायु हुए तो आप धनवान बन जाएंगे। आपके पिता स्वभाव से दानी होंगे। नगद धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपके जीवन में कई चीज बिना मांगे या बिना मेहनत किए ही मिल जाएंगी। आपके ननिहाल खानदान के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी होगी। आपके मामा खुशहाल होंगें। आपके जीवन में सुख-शांति तो रहेगी। परंतु बहुत ठाठ-बाट नहीं रहेंगे। बुढ़ापे में आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ पर ज्यादा ध्यान देंगे। आपको पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अधिक समय तक नौकरी करनी पड़े, ऐसी आशंका है। आपके गुप्त दुश्मन नहीं होंगे। दुश्मन अगर हुए तो नष्ट हो जाएंगे अर्थात् आपको दुश्मनों पर जीत हासिल होगी। शरीर से निरोग रहेंगे।

यदि आपने कर्ज, दान-भिक्षा मांगना शुरु किया, हर समय व्यर्थ घूमते रहे, मामा, ताया-चाचा से झगड़ा किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता का सुख कम मिलेगा या 16 वर्ष की उम्र में ही परिवार का भार आप पर पड़ सकता है। पत्नी की बेकद्री करने से अशुभ फल होगा। आपका जीवन अय्याशी या ऐशो इशरत के कारण बर्बाद हो सकता है। आपके पिता, पुत्र और पुत्री के लिए ग्रह फल बहुत अच्छा नही है। आप साधू स्वभाव के मुफ्तखोर, रोगी और अय्याश होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भीख न मांगें।
2. आवारा न घूमें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान देवें।
2. पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन कमा पाएंगे। आप अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा और प्रेम भी करेंगे।

आपके जीवन में पुत्र की अपेक्षा अधिक कन्याओं के सुख की संभावना है। आपको अधिक संख्या में संतान के सुख प्राप्ति की संभावना है। आप स्वस्थ रहेंगे। आपकी नेत्र की शक्ति बरकरार रहेगी। आप रुचिपूर्ण भोजन पसंद करेंगे। आपको वृद्धावस्था में अधिक सुख प्राप्त होगा। आप अपनी प्राप्त शिक्षा से हट कर काम करेंगे। आपके पिता के साथ-साथ आपकी किस्मत भी अच्छी है।

यदि आपकी पुत्रियां अधिक हुई, स्त्री से झगड़ा किया या आपकी स्त्री को नंगे पैर घूमने की आदत हुई, बहन-बुआ-साली-बेटी से धन लिया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विद्या अध्ययन में रुकावट, पिता सुख का अभाव रहेगा। काम शक्ति में नुक्स होने की शंका है। विलंब से पुत्र का सुख मिलेगा। धन-संपत्ति की हानि भी हो सकती है। आपके सामने लड़ाई-झगड़े की भी समस्याएं पेश आती रहेंगी। लड़ाई-झगड़े से परेशान रहेंगे। आपकी बुद्धि भ्रमित रहेगी। आपके पशु की चोरी या धन-दौलत के गुम हो जाने भी संभावना है। आपका कारोबार अच्छा नहीं रहे। राज पक्ष से भी कोई समस्या पैदा होगी, ऐसी आशंका है। लोग आपको कई बार बदनाम भी कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. स्त्री का अपमान न करें।
2. पत्नी को नंगे पैर न चलने देवें।

उपाय :

1. पत्नी लाल दवाई से गुप्तांग धोयें।
2. ठोस चांदी घर में रखें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे-पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ

प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :
1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव के, शूरवीर, साहसी होंगे। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने के मालिक होकर या उच्च पद पर रह कर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगे। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़े व्यापारी और धनवान होंगे। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन-दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता-पिता को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन-संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। माता के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन-संपत्ति का नाश कर सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि का भय, बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।

2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. सिर पर सफेद टोपी या शरबती पगड़ी टोपी जरूर पहनें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगे। हर काम धीरज के साथ करेंगे। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाले होंगे। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। आप पिता और गुरु की भक्ति करने वाले होंगे। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे। आपको अच्छा भवन और उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता से दूर न रहें।

उपाय :

1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।
2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति प क्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप

अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस

समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी

वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी

बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कुत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18

मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह

और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां-बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी।

आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह

की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में है उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि-भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश

जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई-लिखाई पर भी आपका पैसे खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफि शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है।

परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने

वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा-तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके

माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुर्घटना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। हालांकि 5 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके व्यापार में सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि, वाहन व शिक्षा से जुड़े लोगों का चौमुखी विकास होगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से मान सम्मान व यश में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने से आपके सारे कार्य प्रभावित होंगे। आपके प्रतिद्वंदी आपको किसी कानूनी प्रक्रिया में फंसा सकते हैं। अतः जितना हो सके वाद-विवाद व कोर्ट कचहरी से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा पुराने कार्यों को ही अच्छे ढंग से चलाएं। किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें तथा अपने मन की बात सब के साथ शेयर न करें। 4 नवम्बर के बाद व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। परन्तु 5 अप्रैल के बाद अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आय के स्रोत बढ़ेंगे तथा रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वेतन में अचानक बढ़ोत्तरी होगी तथा आपको बड़े अधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद आर्थिक लेन देन व निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों को अनदेखा न करें नहीं तो आपका पारिवारिक वातावरण ज्यादा प्रभावित हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना होगा। परन्तु 5 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाई बहनों की उन्नति होगी। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

13 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। ससुराल एवं मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ नहीं है। इस समय के अंतराल में घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। ऐसे में आप अपनी धैर्य शक्ति बढ़ाएं तथा पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने के लिए पूर्ण प्रयास करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च के बाद आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परन्तु 2 जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। द्वादशस्थ शनि के कारण आपको ऐसा लगेगा कि आप धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु 5 अप्रैल से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। खान पान तथा दिनचर्या पर आप विशेष ध्यान देंगे। अपने दैनिक जीवन नवीन गतिविधियो को शामिल करेंगे। जैसे सुबह व्यायाम करना या खेल कूद व प्रतियोगिता में शामिल होगा।

13 जुलाई से राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। आपकी दैनिक दिनचर्या भी खराब हो सकती है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 5 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, यह प्रस्ताव आपके लिए अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है। जो व्यक्ति विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे है। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी क्योंकि नवमस्थ राहु के कारण पूर्व निर्धारित यात्राएं निरस्त होंगी।

5 अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा हेतु आपकी विदेश यात्रा होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी बहुत ही जरूरी है क्योंकि 13 जुलाई के बाद राहु एवं शनि का गोचर दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। 5 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में सोमवार के दिन धारण करें।

• तुला दान मतलब अपने बजन के बराबर अन्न का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी आगे बढ़ेगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते है। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है ऐसी विषम परिस्थिति में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ सफलता मिलेगी। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। काम धंधा अच्छा नहीं चलेगा। लेन देन के व्यापार में हानि होने की संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

धन संपत्ति

मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध बिगड़ सकता है। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपनी व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें।

नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में भी आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्य पूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट-मित्र अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में केतु की स्थिति इस बात के संकेत कर रही है कि यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके सम्बंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन-सहन व दिनर्चया बिगड़ सकती है, जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है तथा कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप अपने को स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मुद्दे को लेकर या

किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है। किसी यात्रा के दौरान भी आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः अनावश्यक यात्राएं करना भी ठीक नहीं होगा। गलत प्रवृत्तियों पर भी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। किसी कानूनी मामले में पड़कर चिंता करना भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा। खान-पान पर संयम रखें अन्यथा उदर विकार होने की सम्भावना है। आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह साल श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते है तो यह समय उत्तम है।

यदि आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद आपकी छोटी मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफि लाभप्रद रहेगी। सामुद्रिक यात्रा या जलीय स्थान की यात्रा अधिक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह साल अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आप अपना धर्म समझेंगे।

- वीरवार के दिन पीला वस्तु केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 25 सतम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यापारिक उन्नति के लिए कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपको सरकारी अफसरों और अनुभवी लोगों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से मिलता रहेगा।

6 मई से 30 जुलाई तक आपके कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। मित्र के साझेदारी में कड़वाहट आने की संभावना बन रही है। जुलाई के बाद आप अपने कार्यक्षेत्र को लेकर कुछ नई योजनाएं बनाएंगे तथा आपके कार्यो में सुधार होगा। वर्षान्त में आप व्यवसाय में अधिक व्यस्त रहेंगे। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी व आय के साधनो में सुधार होने के प्रबल योग हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए इस वर्ष आपको ज्यादा सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है। कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकते हैं। 6 मई के बाद आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। शेयर बाजार व सट्टे-लॉटरी में धन लगाने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करेंगे। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप धन कमाने में सफल रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। 25 सितम्बर के बाद धन संपत्ति के मामले में सुधार देखने को मिलेगा। जीवनसाथी को अपने कार्यक्षेत्र में कोई सफलता मिलने से आपको आर्थिक सहयोग मिलना संभव है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। संतान या पिता के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। 6 मई के बाद अचानक धर्मपत्नी के साथ संबंधो में खटास आने की संभावना बन रही है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने के कारण

आप कुछ परेशान रह सकते हैं, परन्तु 30 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अनुकूलता के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। वर्षान्त दाम्पत्य जीवन के लिए काफी शुभ है। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा। यह समय आपके दूसरी संतान के लिए ज्यादा शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के लिए शुभ है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। लग्नस्थ गुरु के कारण आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। खाने पीने पर आप विशेष ध्यान देंगे।

6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके स्वास्थ्य में कुछ कमी आने की संभावना बन रही है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों की वर्ष के प्रारम्भ में पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ेगी। स्मरण शक्ति अच्छी होने से आप कठिन विषयों को बड़ी आसानी से समझने में सफल होंगे। उच्च शिक्षा तथा रिसर्च से जुड़े छात्रों को अपनी मेहनत के अनुपात में ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनको 6 मई के बाद नये अवसर मिलने की उम्मीद है तथा 25 सितम्बर के बाद शिक्षा संबंधित सभी कार्यो में सफलता मिलने की प्रबल संभावना बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक लम्बी यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटक स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रहा है। 6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके व्यवसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठा व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतित होगा। गुरु भक्ति व मन्त्र सिद्धि के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- नीलम रत्न धारण करें।
- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं लग्न स्थान मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करना बहुत जरूरी है तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम का स्रोत बना रहेगा। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में अधिक खर्च करेंगे।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। यह वर्ष जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है। संपत्ति के क्रय-विक्रय संबंधी कार्यों के लिए 22 जून को राहु ग्रह का गोचर सफलता लेकर आ रहा है। अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान-सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। सप्तमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि जीवनसाथी की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों को बताता है। द्वितीय स्थान में गुरु की स्थिति परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बना रही है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक मामलों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। वर्षान्त में घर में मांगलिक कार्य भी संभव होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपकी आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें और अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

जून के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से बिगड़ सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनो में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल चल रहा है जिसके कारण आपको धोखा मिल सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 22 जून के बाद वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 10 जून के बाद आप बड़ी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। जून के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित होगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होगा। किसी तीर्थ स्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग में आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरुवाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं छटे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष अच्छे परिणाम के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। संपर्कसूत्रों से निश्चित ही आपका भला होने वाला है। शब्दों में मिठास लाएं इससे आपको अधूरे कार्य पूरे करने में मदद मिलेगी। अपने अधिकारों में थोड़ी कटौती करें। यह आपके लिए अच्छा होगा। कार्यक्षेत्र में कुछ लोगों से किये गए समझौते में दरार आने की संभावना दिख रही है। इस दिशा पर तुरंत कार्यवाही करें। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो सभी कार्यों में पारदर्शिता रखें नहीं तो मित्रता में दरार आ सकती है। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी सहायता करते रहेंगे।

11 सितम्बर के बाद आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें इच्छित लाभ मिलेगा तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। अपने अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य पर पैसे खर्च करा सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा।

30 जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा वापिस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले सावधान रहना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयो के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहने

वाला है। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि पत्नी की सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।

तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 30 जुलाई को द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

19 सितम्बर के बाद सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेगा। सामाजिक गतिविधियों की व्यस्तताओं के चलते आपको अपने स्वास्थ्य की चिंता नहीं रहेगी तथा आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक शान्ति भंग होगी। सुबह जल्दी उठ कर पार्क में घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को और ज्यादा प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना दूर हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप सभी विषयों का अभ्यास बहुत ही अच्छे तरीके से

करेंगे परिणामस्वरूप नतीजों में सकारात्मकता देखने को मिलेगी। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

19 सितम्बर के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अधिक मेहनत करनी होगी। आपको धैर्य और बुद्धिमत्ता से अपना काम संभालना होगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको काफी लाभ मिलेगा। लग्न स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ सकता है तथा घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन अभिमन्त्रित कर गले में धारण करें।
- नियमित रूप से श्रीसूक्तं और दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि कोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः बिना किसी पर विश्वास किए आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। आपकी सफलता में आपके सहकर्मियों का विशेष सहयोग होगा। आप नई योजनाएं बनाकर भविष्य में लाभ प्राप्त करेंगे।

16 फरवरी के बाद नौकरी करने वालों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा यही आपकी सफलता का कारण बनेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें आ सकती हैं।

16 फरवरी के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा हो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

16 फरवरी तक का समय पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद श्रेष्ठ हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। उनका प्यार आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा। भाई बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपको संतान संबंधित परेशानी दे सकता है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं।

संतान

इस वर्ष आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम स्थान का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधानी से रहें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

16 फरवरी के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो आपको परहेज की ज्यादा जरूरत है। आंख, पेट, पाचन और नसों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। ईलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

द्वितीय स्थान का शनि स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित कर सकता है तथा करियर के प्रति एकाग्रता बनाए रखें क्योंकि आपका मन अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी'-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा के योग बना रही है। सामुद्रिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियां भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम स्थान का राहु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। इस वर्ष आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएगी। 16 फरवरी के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई पूजा अर्चना करेंगे, जिसमें आप अपने सगे सम्बन्धियों को भी आमंत्रित करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल दें तथा संन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपनी दिनचर्या सुधारें व तामसिक वस्तुओं का सेवन कम करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(06/01/2015 - 06/01/2025)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 06/01/2015 को आरंभ और 06/01/2025 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षो की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अपनी शिक्षा में बहुत तरक्की करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(07/07/2024 - 06/01/2025)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 06/01/2015 को प्रारंभ होगी और 06/01/2025 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 07/07/2024 से प्रारंभ होकर 06/01/2025 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सूर्य प्रभावशाली ग्रह है।

इस अवधि में आप सत्यमार्ग पर चलेंगे, जिससे आपके मित्रों की संख्या घट सकती है। आपका मन यात्रा और इधर-उधर भटकने में लगेगा, जिससे चरित्र पर दाग लग सकता है। धन की हानि और विपरीत लिंग के व्यक्तियों के कारण बदनामी संभव है। सरकारी तंत्र आपसे खफ़ा हो सकता है। अपमान से बचाव करें। चोट आदि से भी सावधानी आवश्यक है।

अशुभ से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप नित्य करें। सूर्य के तांत्रिक मंत्र के 28000 जाप करें।

महादशा :- मंगल
(06/01/2025 - 07/01/2032)

मंगल की महादशा 06/01/2025 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 07/01/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(06/01/2025 - 04/06/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 06/01/2025 को प्रारंभ होकर 04/06/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरुरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यो में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(04/06/2025 - 23/06/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 04/06/2025 को प्रारंभ होकर 23/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुर्खियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(23/06/2026 - 29/05/2027)

आपकी मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/06/2026 को प्रारंभ होकर 29/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज़ खत्म होगा। रोज़गार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(29/05/2027 - 07/07/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/05/2027 को प्रारंभ होकर 07/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धनी बनने का संकेत है। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। घर में सुख-शांति आपके प्रयास से बनी रहेगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। विदेश की यात्रा कर सकते हैं, वहां से लाभ होगा। तबादले और प्रोन्नति का संकेत है। सम्मान और धन में वृद्धि होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति मौजूद रहेगी।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। उनका जनसंपर्क बढ़ेगा। आपके भाई-बहनों की आय में वृद्धि होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रहेगी।

आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उनके जीवन में कुछ परिवर्तन और यात्रा हो सकते हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारी अपने कार्य का विस्तार करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए पंचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(07/07/2028 - 04/07/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 07/07/2028 को प्रारंभ होकर 04/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। आपको उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपको किसी अप्रत्याशित माध्यम जैसे विरासत, उपहार आदि से धन मिल सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। अगर आप सेवानिवृत्त हो रहे हैं तो ग्रेच्युटी आदि से धनागम होगा। जीवन में सब सुख रहेंगे; उत्तम भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी, जिससे फायदा उठाएंगे।

आपके जीवनसाथी को हर प्रकार का लाभ होगा। आपके पिता के शुभकार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। माता को शेयर आदि में लाभ हो सकता है। भाई-बहनों को उत्तम स्वास्थ्य,

सहकर्मियों और मातहतों से सहयोग, उत्तम कार्यालय, प्रोन्नति, सम्मान और लाभ का संकेत है।

आपके संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति का लाभ, प्रसन्नता और कार्यक्षेत्र में उन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो पत्रलेखन बढ़ेगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को हर प्रकार के लाभ होंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली खांसी, सर्दी आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(04/07/2029 - 01/12/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/07/2029 को प्रारंभ होकर 01/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी-कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई-बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(01/12/2029 - 31/01/2031)

आपके लिए मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/12/2029 को प्रारंभ होकर 31/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। मामापक्ष से लाभ होगा। विलास के साधनों पर धन खर्च हो सकता है। कर्ज़ का भुगतान करने में सक्षम होंगे। विवाद या मुकदमे में विजय होगी। मातहत सहयोग करेंगे। जीवन में सब सुख होंगे। धन, अचल संपत्ति और वाहन का संकेत है।

आपके जीवनसाथी धन का संचय करेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे। आपके पिता की आय पर्याप्त होगी, लोकप्रिय बनेंगे। माता को धन और सफलता प्राप्त होंगे। भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, परिवार से संबंध मधुर होंगे, उन्हें जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है। आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा, जबकि व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है; विशेषकर चोट, उत्सर्जन तंत्र और उदर की व्याधियों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(31/01/2031 - 08/06/2031)

आपकी मंगल की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 31/01/2031 को प्रारंभ होकर 08/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि आपकी प्रोन्नति और आकांक्षाओं की पूर्ति का योग है। प्रशासन से लाभ हो सकता है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारीगण खूब धन कमाएंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव संभव है। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। हर काम में सफलता मिलेगी। शत्रु परास्त होंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे और नेतृत्वशक्ति उत्तम रहेगी।

जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उच्चपद प्राप्त

महादशा :- राहु
(07/01/2032 - 06/01/2050)

राहु की अन्तर्दशा 07/01/2032 को आरम्भ और 06/01/2050 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्न्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलैंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रोद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में

सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वद्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(07/01/2032 - 19/09/2034)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 19/09/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, साहस में वृद्धि होगी, लेखक, चित्रकार आदि हो सकते हैं। साहस की अधिकता के कारण पापपथ पर चल सकते हैं। इस संबंध में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(19/09/2034 - 11/02/2037)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 19/09/2034 को प्रारंभ होकर 11/02/2037 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(11/02/2037 - 19/12/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 11/02/2037 को प्रारंभ होकर 19/12/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ हो सकती है। इस अवधि में रिश्तेदार आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं, आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं, स्वयं को बीमार या अप्रसन्न महसूस कर सकते हैं। आलस्य की भावना रहेगी, क्रोध अधिक हो सकता है। वात और बलगम से संबंधित रोग हो सकता है। मन में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। हर कदम पर सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(19/12/2039 - 08/07/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 19/12/2039 को प्रारंभ होकर 08/07/2042 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय उत्तम होगी, विरासत में भी धन प्राप्त हो सकता है। विभिन्न विषयों के विद्वान बन सकते हैं। व्यवहार शिष्ट होगा। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(08/07/2042 - 26/07/2043)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 08/07/2042 को प्रारंभ होकर 26/07/2043 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में असाधारण परिवर्तन आ सकते हैं, जो अशुभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें, प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

निम्न उपाय भी लाभकारी रहेंगे :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(26/07/2043 - 26/07/2046)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/01/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 26/07/2043 को प्रारंभ होकर 26/07/2046 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के व्यक्ति आपसे रुष्ट रह सकते हैं। वे आपका चरित्र बर्बाद कर सकते हैं। शत्रु इस अवधि में समाप्त हो जाएंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि के कारण स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

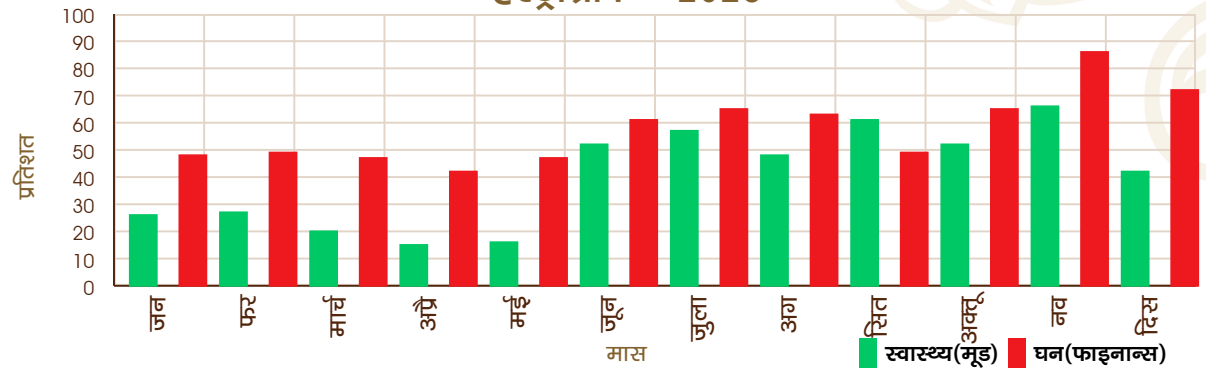

एस्ट्रोग्राफ - 2026

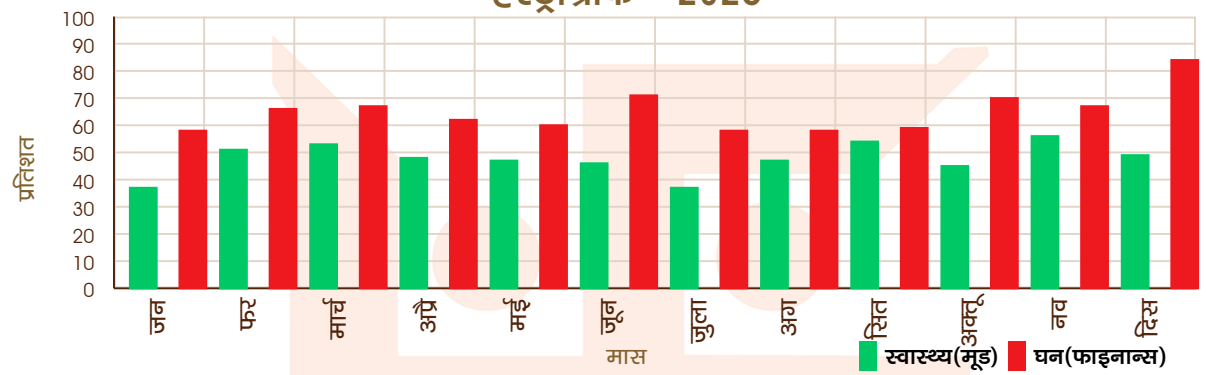

एस्ट्रोग्राफ - 2027

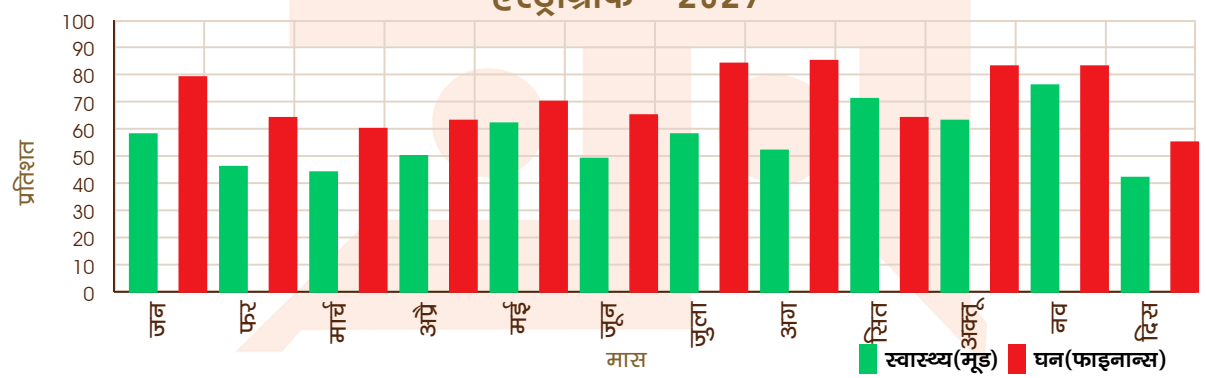

एस्ट्रोग्राफ - 2028

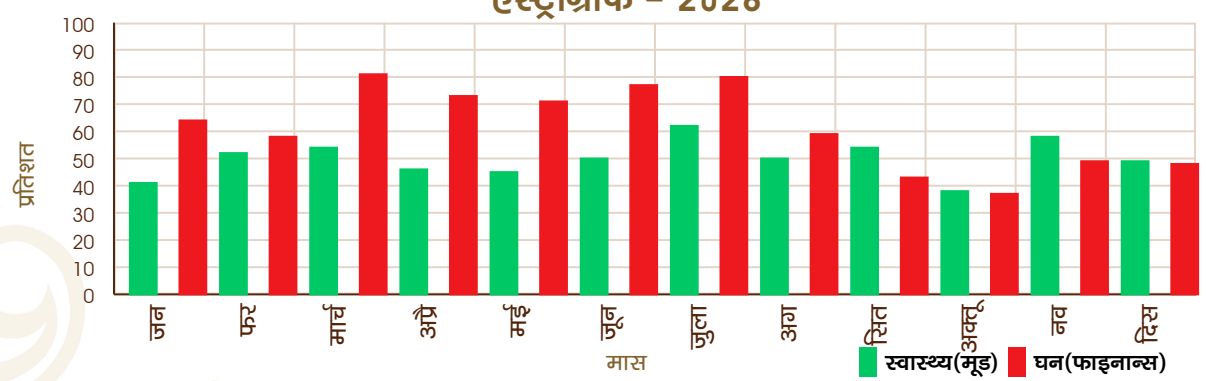

एस्ट्रोग्राफ - 2029

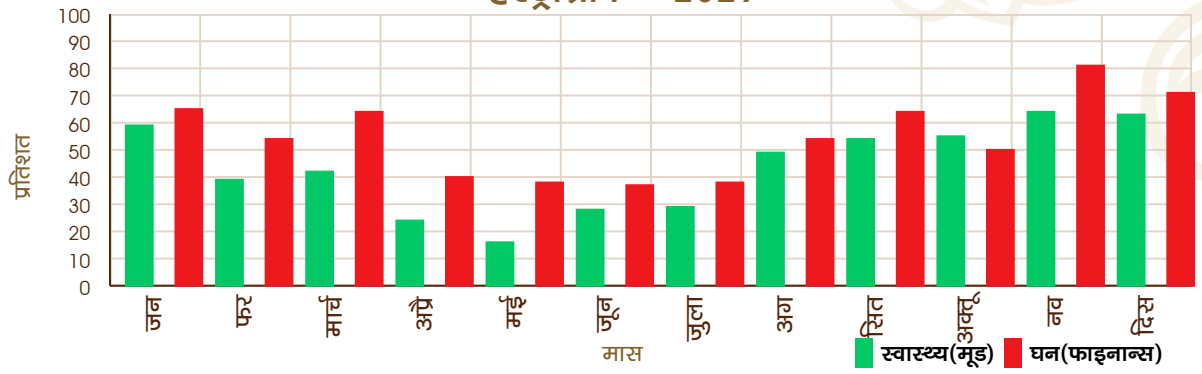

एस्ट्रोग्राफ - 2030

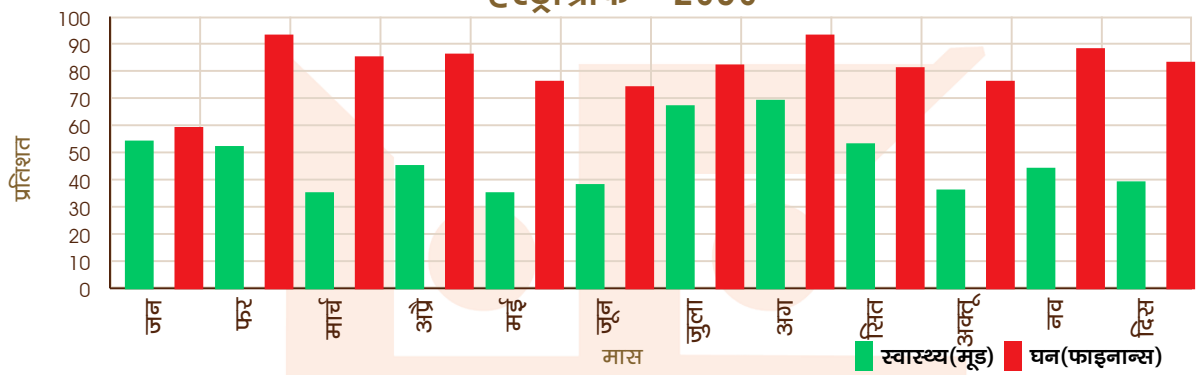

एस्ट्रोग्राफ - 2031

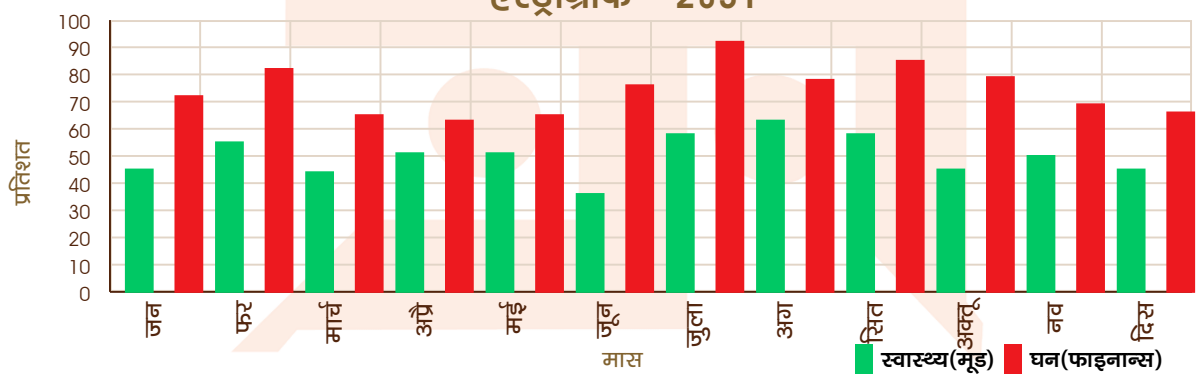

एस्ट्रोग्राफ - 2032

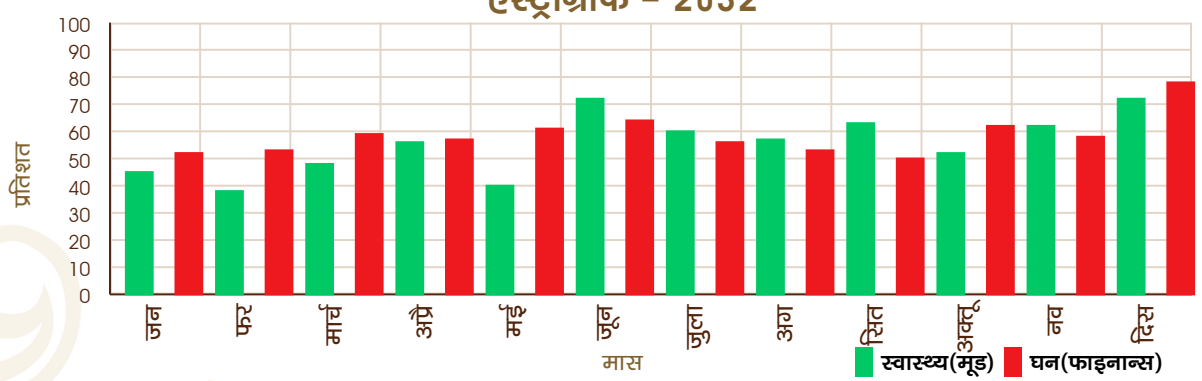

एस्ट्रोग्राफ - 2033

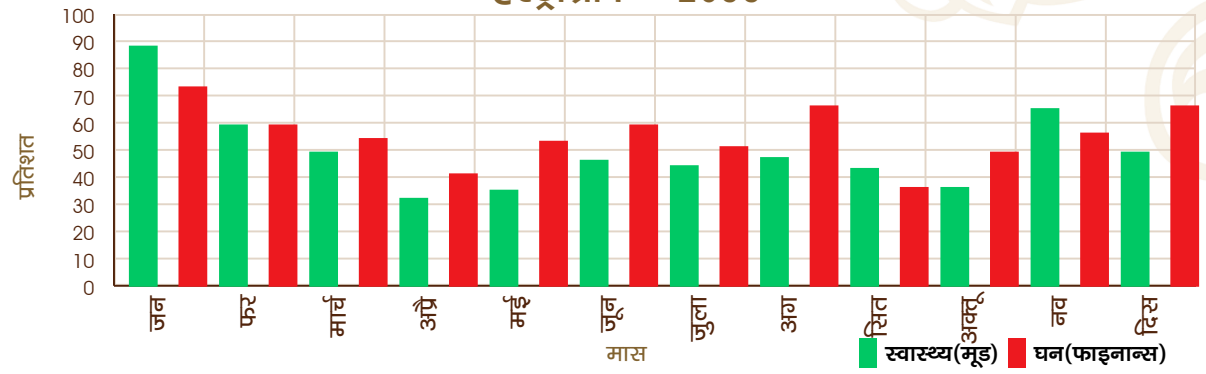

एस्ट्रोग्राफ - 2034

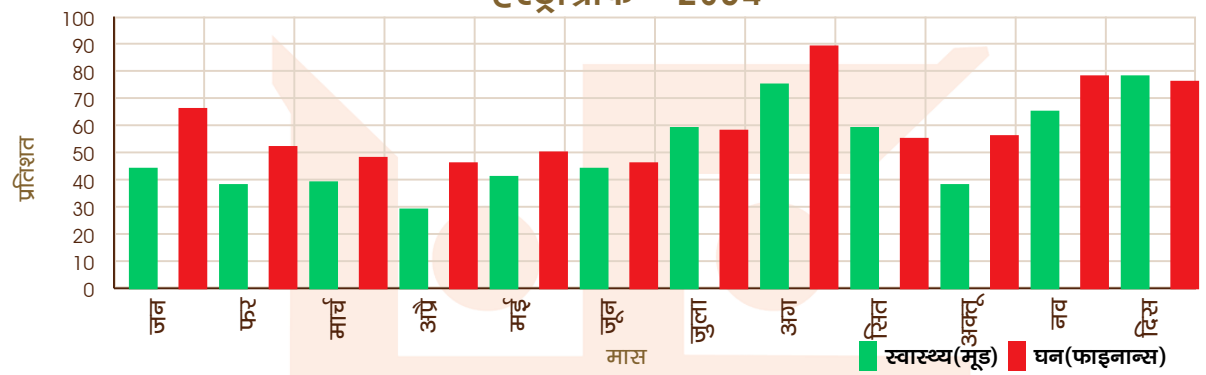

एस्ट्रोग्राफ - 2035

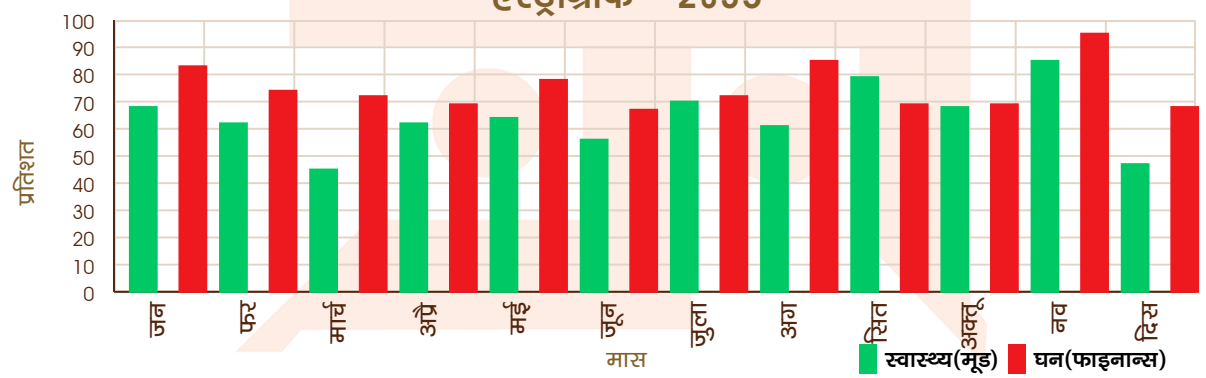

एस्ट्रोग्राफ - 2036

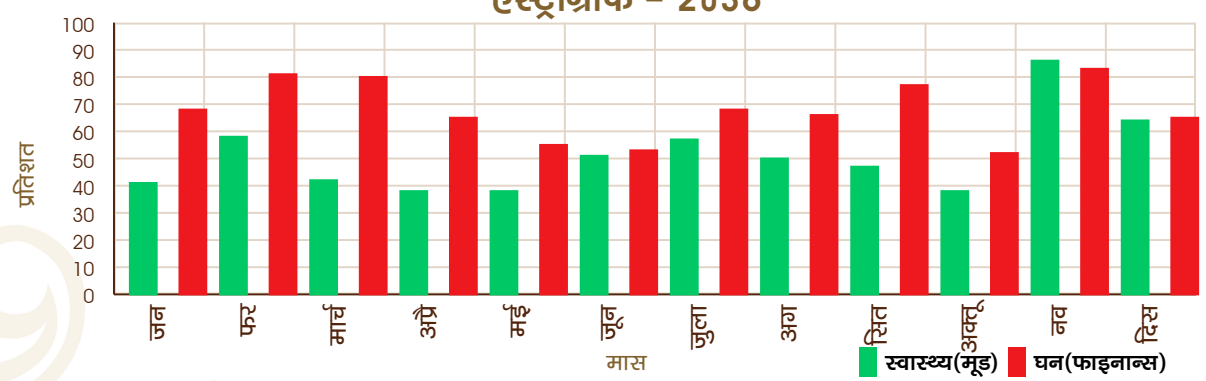

एस्ट्रोग्राफ - 2037

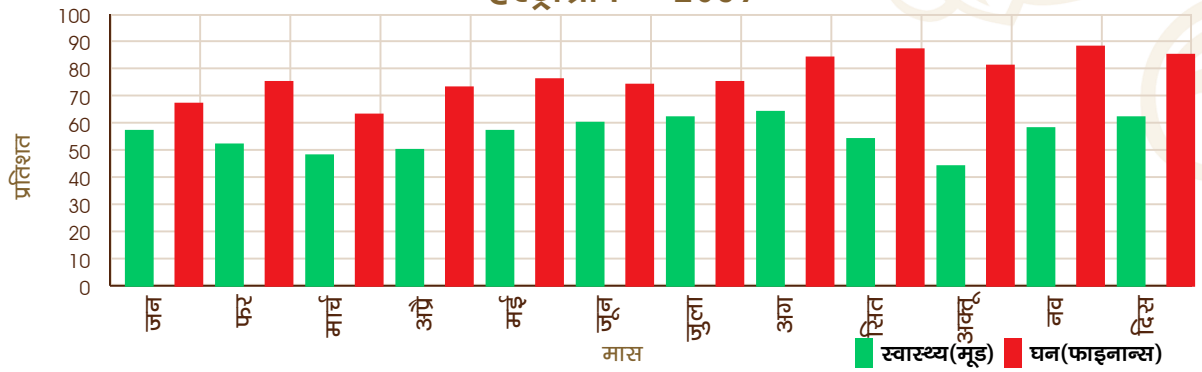

एस्ट्रोग्राफ - 2038

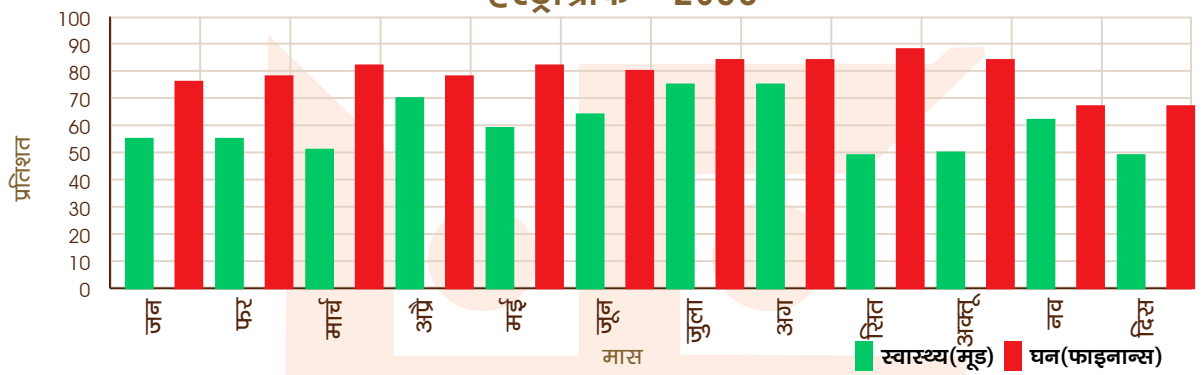

एस्ट्रोग्राफ - 2039

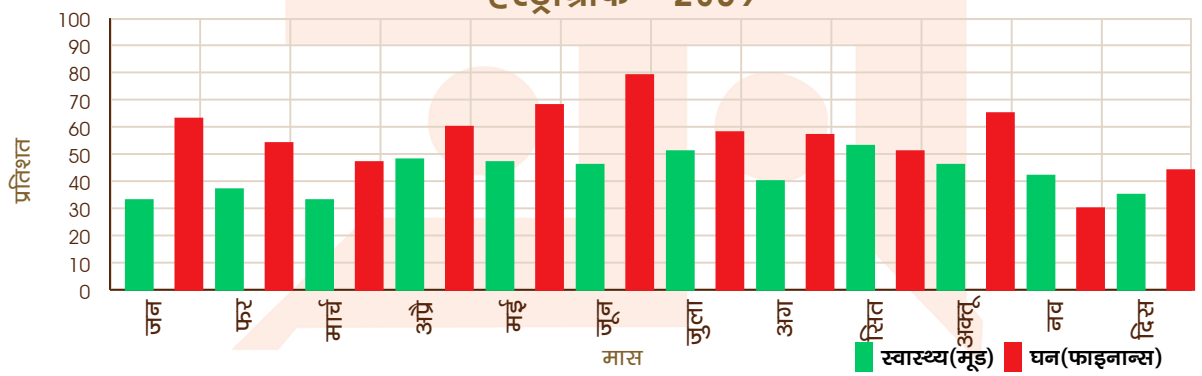

एस्ट्रोग्राफ - 2040

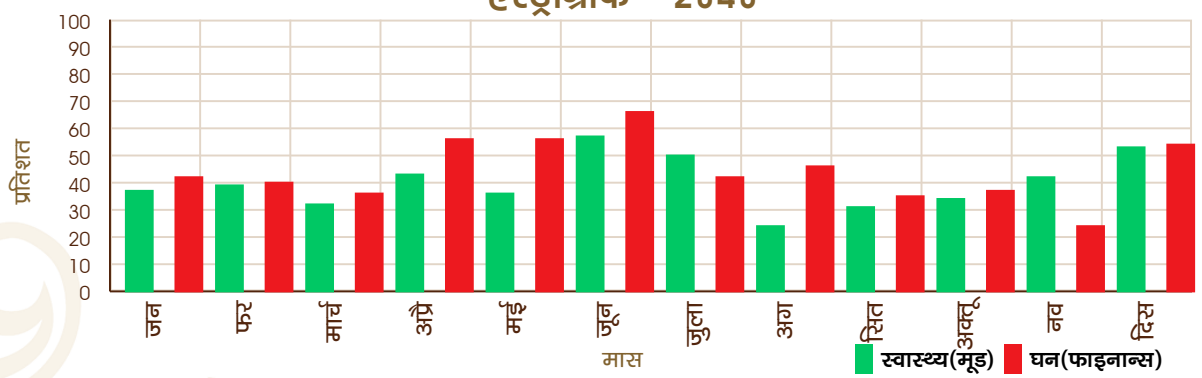

एस्ट्रोग्राफ - 2041

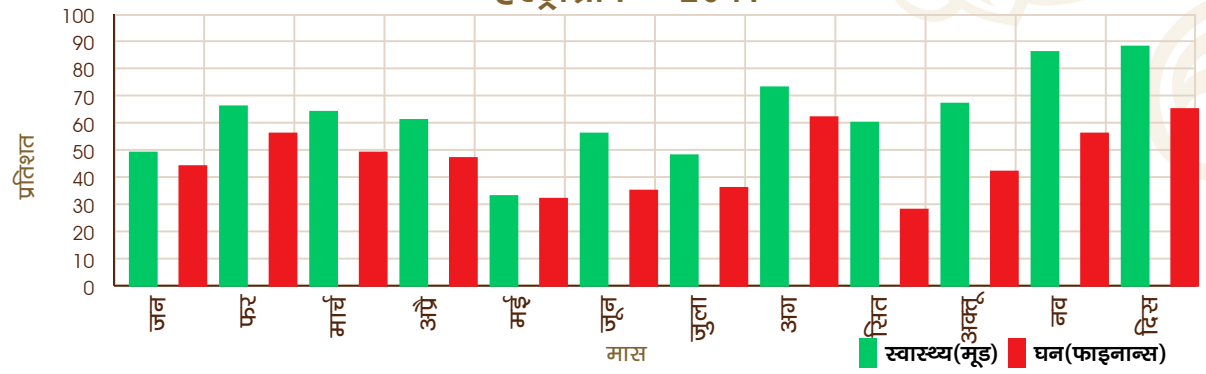

एस्ट्रोग्राफ - 2042

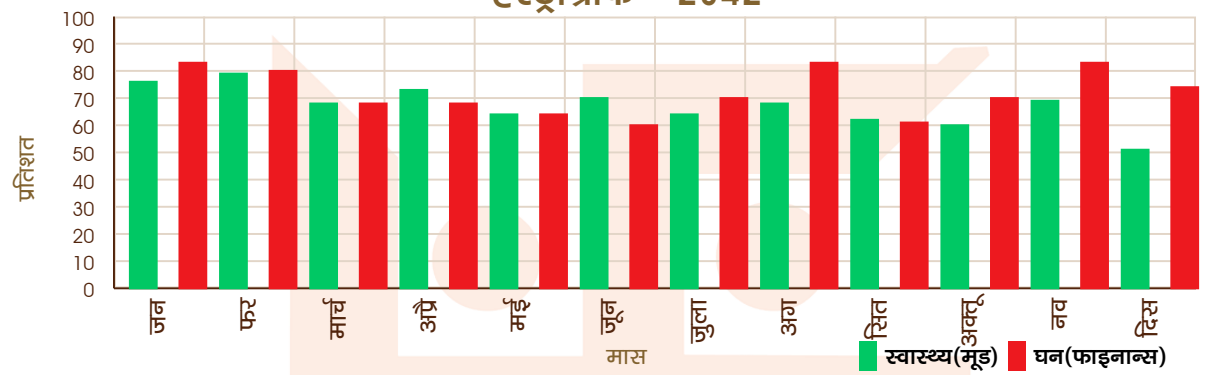

एस्ट्रोग्राफ - 2043

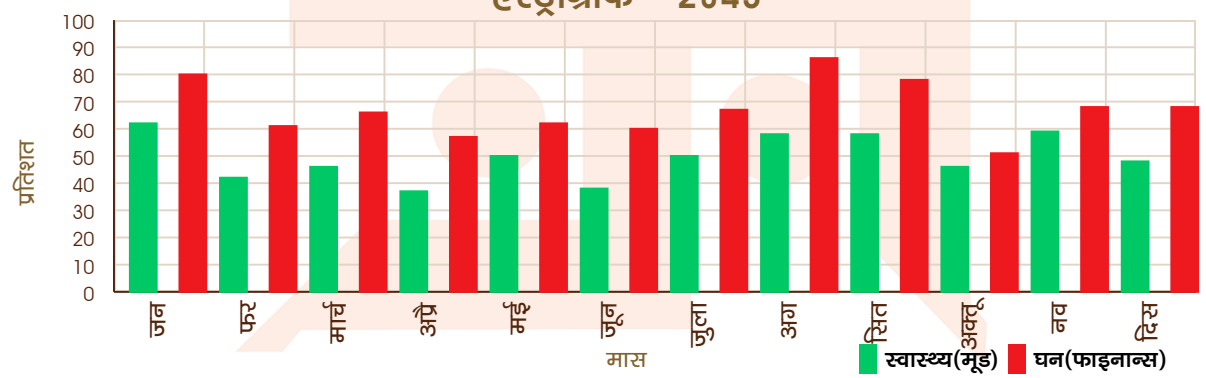

एस्ट्रोग्राफ - 2044

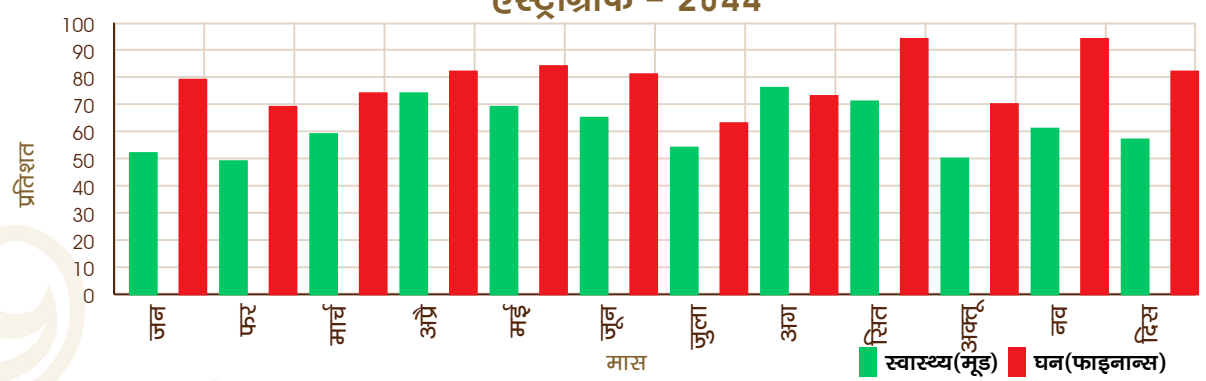

शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठेऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः।।
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ।।
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-
बीणोपमाःखलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9, 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है। सेनाओं को एकत्रित (इक्ट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,गुरु,शुक्र,शनि योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

नीचकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
पंचादिभिर्जनपदप्रभवोऽपि सिद्धो
हीनैः क्षितीश्वरसमो न तु भूमिपालः।।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में पांच या उससे अधिक ग्रह स्वराशि, उच्चराशि, मूल त्रिकोण में हो, तो ऐसा व्यक्ति सामान्य कुल में उत्पन्न होकर भी राजा के समान सुखों का उपभोग करता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,गुरु,शुक्र,शनि योग की संभावना : 242 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह राजयोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। ज्योतिष शास्त्र में यह सर्वश्रेष्ठ राजयोग माना जाता है। इसके प्रभाव से जीवन में आप उच्च श्रेणी के सुखों का उपभोग करेंगे। समाज में आप प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। अपने परिश्रम, योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से आप सामान्य स्तर से उच्चस्तर प्राप्त करने में सफल होंगे। देश-विदेश में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा होगी।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमरयोग

चतुर्ष्वपि हि केन्द्रेषु क्रूराः सौम्या यदा ग्रहाः।
क्रूरैः पृथ्वीपतिं विद्यात्सौम्यैर्लक्ष्मीपतिर्भवेत्।।
।। मानसागरी ।। अ. 4/श्लोक 1 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सभी पाप ग्रह या सभी शुभ ग्रह केंद्र स्थान (1-4-7-10) में स्थित हों तो अमर योग होता है। यदि सभी पाप ग्रह हो तो पृथ्वीपति होता है। यदि शुभ ग्रह हों तो लक्ष्मीपति (धनाढ्य) होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 2187 में 1

यह योग आपकी जन्मपत्रिका में पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही धनाढ्य, राजसेवक तथा उच्चाधिकारी होंगे। आप राजा के समान प्रसंशनीय होंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्व्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

गौरी योग

स्वर्क्षोच्चे यदि कोणकण्टकयुतौ हिमकरे गौरीति जीवेक्षिते।
सुन्दरगात्रः श्लाघितगोत्रः पार्थिवमित्रः सद्गुणपुत्रः।
पङ्कजवक्त्रः संस्तुतजैत्रो राजति गौरीयोगसमुत्थः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 21, 25 ।।

यदि चंद्रमा अपनी राशि उच्च राशि का होकर लग्न से केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो और गुरु की दृष्टि उन पर पड़ रही हो तो गौरीयोग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में गौरीयोग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुंदर, राजमित्र, सद्गुणी, संतानवान, शत्रुजीत, प्रशंसित, प्रसन्नचित्तमुखाकृति के होंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमान्द्वावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो

और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

जलधियोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
गोसंपद्धनधान्यशोभिसदनं बन्धुप्रपूर्णं वर-
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणानि महितस्थानं च सर्वोत्तमम्।
प्राप्नोत्यम्बुधियोगजः स्थिरसुखो हस्त्यश्वयानादिगो
राजेड्यो द्विजदेवकार्यनिरतः कूपप्रपाकृत्पथि।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 48।।

यदि जन्मकुंडली में सुखस्थान में शुभग्रह हों अथवा चतुर्थस्थान पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और चतुर्थेश अस्त न हो तथा अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो जलधि (समुद्र) योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धन-धान्य गोधन से युक्त उच्च भवन में निवास करेंगे तथा बंधु-बाधवों से सुख प्राप्त करेंगे। पत्नी, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सुख से सुखी होंगे। आप स्थिर लक्ष्मीवान होंगे तथा धार्मिक कार्यों में रूचि रखेंगे। हर प्रकार का सुख आपके भाग्य से प्राप्त होता रहेगा।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास

सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरू से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्व ान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको

कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

वाहनादि प्राप्ति योग

वाहनेशे बलयुते वाहने शुभसंयुते ।
शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादिफलं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-152 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश बलिष्ठ होकर सुख स्थान में शुभ युक्त या दृष्ट हो तो वाहन आदि सुख प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके

जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निरोग योग

लग्नेशषष्ठाधिपती निर्व्याधिकौ जीवसमन्वितौ चेत्।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-5/श्लो.-10।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश और लग्नेश गुरु से युक्त हों तो जातक निरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निरोग, स्वस्थ्य और प्रसन्न रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री-कुटुम्बी योग

कलत्रे भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम स्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत कुटुम्ब वाला तथा बहुस्त्री वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहु कुटुम्बी तथा आपके कई जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र,राहु,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्वि-विवाहयोग

शुभग्रहेण संयुक्तः कलत्रेशेऽरिनीचगे।
पापे कलत्रराशिस्थे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-18 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश शत्रु या नीच राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो और सप्तम में पाप ग्रह हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य,मंगल योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो जीवनसाथी हो ऐसी संभावना है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

जायेशे शुभयुतेरिनीचगे सप्तमेपापे द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त होकर अपनी शत्रु या नीच राशि में हो और सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

षष्ठेंगपे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश षष्ठ भाव में चला गया हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57 ।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अङ्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।
।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वासि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।